तुम मेरे

हमेशा रहने वाले हो...!

18+

मन मदन

நீ என் நித்தியா...!

18+

மன் மதன்

आप मेरी नियति हैं।

□□ □□□

अंतर्वस्तु

(1)
(2)
(3)
(4)
(5)
(6)
(7)
(8)
(9)
(10)
(11)
(12)
(13)
(14)
(15)
(16)
(17)
(18)
(19)
(20)

(1)

उन्हें ल्यूकेमिया है। काफी इलाज के बावजूद, डॉक्टर उन्हें बचा नहीं पाए। शादी के चार साल बाद उनकी मृत्यु हो गई।
सरिता की मृत्यु के एक साल भी पूरा नहीं हुआ था कि उनकी मां अन्नपूर्णी ने उन्हें पुनर्विवाह के लिए राजी करने से इनकार कर दिया। वह सरिता के अलावा किसी और से शादी नहीं कर सकते थे।
कौन सी माँ सामी को अकेला छोड़ने से इनकार कर देती? उसे डर था कि उसके बेटे का जीवन बर्बाद हो जाएगा। इसी डर ने उसे लगातार ताने मारने पर मजबूर कर दिया।
उन्होंने इसे सहन किया। अब और सहन न कर पाने के कारण, उन्होंने अपनी सारी कमाई खर्च कर दी और येरकौद में यह कॉफी बागान खरीद लिया और अकेले वापस आ गए।
यह कहने की जरूरत नहीं है कि उनकी मेहनत रंग लाई।
वहां से उन्होंने विदेशी देशों को निर्यात करके काफी धन कमाया और कई और संपत्तियां खरीदीं और उन पर अपना अधिकार जमा लिया। उनकी पत्नी के निधन को पाँच साल हो गए हैं। वे किसी और से शादी नहीं करना चाहते और अकेले रहते हैं। उन्हें यह एकांत पसंद था। ऐसा नहीं है कि उन्होंने एकांत की चाह छोड़ दी हो। अब भी उनके मन में महिलाओं के प्रति आकर्षण है। लेकिन वे सरिता के अलावा किसी और महिला के पास नहीं जाना चाहते। उन्होंने अपनी इस चाह को दबा रखा है।
अन्नपूर्णी भी उसकी बातें सुनकर ऊब गई और उसने उसकी बातें सुनना बंद कर दिया।
उसने काउंटर पर हिसाब-किताब देख रहे व्यक्ति का फोन उठाया।
उसकी मां, अन्नपूर्णी ने फोन किया था।
"माँ अभी क्यों फोन कर रही हैं?" मैंने सोच-विचार करते हुए फोन उठाया और कान से लगा लिया।

"भाई विमला..." विमलनाथन ने सिर हिलाते हुए कहा और दूसरी तरफ अपनी मां को चूमा।
"माँ... क्या हुआ... चाचा के पास कुछ नहीं है?"
"चाचा के पास कुछ नहीं है... सिवाय हमारी नित्या के..." और वह चिढ़कर रोने लगा और अपनी नाक पोंछने लगा।
निथिया। उसके मामा की बेटी। वह उससे पंद्रह साल छोटी है। वह निथिया से बहुत प्यार करता है। बचपन में वह उसे गोद में उठाकर खेला करता था। उसे स्कूल ले जाया करता था। निथिया जो भी चाहती या मांगती, वह बिना किसी झिझक के उसे खरीदकर देता था। वह हमेशा नमकीन अंडे की तरह उसकी पीठ से चिपकी रहती थी।
इवान की शादी के बाद, उनके और उसके बीच की नज़दीकी थोड़ी कम हो गई। काम और पत्नी की समस्याओं के कारण, उसके पास उसकी देखभाल करने का समय नहीं था। और पिछले पाँच वर्षों से तो यह भी संभव नहीं हो पाया है।
येरकौद पहुंचने के बाद, वह कुछ दिनों के लिए गांव गया था, लेकिन वहां की परिस्थितियां उससे मिलने के लिए अनुकूल नहीं थीं। पहली बार जब वह गई, तो वह एक टूर पर थी। दूसरी बार जब वह गई, तो वह किसी की शादी में थी। अगली बार जब वह गई, तो उसे तेज बुखार था और वह बिस्तर पर लेटी हुई थी। फिर वह कॉलेज गई और हॉस्टल में रहने लगी।
उसे देखे हुए पांच साल हो गए हैं।
अब नित्या को क्या हुआ? वह असमंजस में है।
"माँ... जो भी हो, रोए बिना साफ-साफ बताओ। निथी को क्या हुआ?" उसने थोड़ा गुस्से से पूछा।
"अरे... इस बारे में आप फोन पर बात नहीं कर सकते... आपको सीधे घर जाना चाहिए..."

"माँ... बकवास मत करो... यहाँ बहुत काम है... हम सब कुछ यूँ ही छोड़कर नहीं जा सकते," उसने कहा, और अन्नपूर्णी को गुस्सा आ गया। "अरे... यहाँ तो बहुत बड़ी समस्या है। अगर तुम काम पर नहीं आए तो क्या होगा... देखो... अगर तुम्हें अपने चाचा के लिए ज़रा भी इज़्ज़त है, तो जल्दी घर आ जाओ..." उसने कहा और फोन काट दिया, जिससे इवान असमंजस में पड़ गया।
नित्या किस तरह की मुसीबत में फंस गई है? अगर यह इस उम्र के लिए उचित समस्या है, तो फिर घर में ही क्यों न रहें? क्या जिस लड़के से आपको प्यार हो गया है, उसे बांधकर रखना ज़रूरी नहीं है? उलझन में पड़ा विमलनाथन शहर के लिए रवाना हो गया और सारी ज़िम्मेदारियाँ मैनेजर को सौंप दीं।

(2)

नित्या रोने से थककर बिस्तर पर लेटी हुई थी। करांगा रोते हुए अपना पेट पकड़े हुए थी।
सब कुछ खत्म हो गया था। उसका बचपन दुनिया देखने से पहले ही नष्ट हो चुका था। अब वह भी नष्ट होने वाली थी। उसकी माँ, पाणुरेखा, उसके पास आई, जो घृणा और आँसुओं से लथपथ पड़ी थी। पाणुरेखा का चेहरा गुस्से से लाल और तनावग्रस्त था।
"देखो, परुदी... तुम्हारी और विमलन की शादी एक हफ्ते में होने वाली है..." नित्या ने उत्सुकता से ऊपर देखा।
शादी? उसकी? और वो भी विमलनाथन अंकल से? नहीं... मैं नहीं कर सकती... मैं फिर से फूट-फूटकर रोने लगी।
"इस शादी का फैसला करने के लिए आपने किससे सलाह ली...?" पानुरेखा ने बिना पलक झपकाए गुस्से से पूछा।
मुझे किससे पूछना चाहिए...?
"मुझसे पूछो, माँ..." वह फूट-फूटकर रोने लगी, जबकि पानुरेखा अपनी बेटी को उदासीनता से देखती रही।
"मैं आपसे पूछना चाहती हूँ... क्या आपने सब कुछ सिर्फ हमसे पूछकर ही किया?" निथिया ने रोते हुए गुस्से से पूछा।
"माँ... मैं अपने चाचा को कैसे बाँध सकती हूँ? वो मुझसे उम्र में बड़े हैं... इतना ही नहीं, उनकी शादी भी हो चुकी है... मैं उन्हें नहीं बाँधूँगी," उसने आगे कहा।
"तुम कैसी औरत हो? अगर तुमने मुझे कॉलेज भेजा होता, तो कोई न कोई मेरे साथ सोकर मुझे बच्चा दे देता... अब तुम्हें कौन रोकेगा? सिर्फ तुम ही रोक सकती हो, विमल थंबी... चुप रहो, उससे शादी कर लो

और देखो कैसे तुम खुशी से जी सकती हो..." निथिला ने अपनी माँ को घूरते हुए कहा।
"मैं कभी किसी से शादी नहीं करूंगी, कभी नहीं, कभी नहीं..." उसने अंत में कहा।
"क्या... तुम अपनी बेटी विमला को बांधोगे नहीं...?" उसके पिता थानिकाशलम ने अपनी मूंछें मरोड़ते हुए कहा।
नित्या ने उसकी मुद्रा देखकर तुरंत अपना मुंह बंद कर लिया और सिर झुका लिया। उसने अपनी बेटी को घूरा, फिर सीधा खड़ा हुआ और अपनी पत्नी को घूरा।
"क्या, तुम अपनी बेटी को ऐसे ही छोड़ रहे हो... तुम कह रहे हो कि तुम्हें कुछ पता नहीं है... मुझे इसके बारे में बताओ... अपनी बेटी को बताओ... वो लड़का अभी... उसका नाम क्या है? आह... साथियान... मैंने उसके हाथ-पैर तोड़ दिए और कूड़ेदान में फेंक दिए। अब इसके बारे में चिंता मत करो... तो मैं उस लड़के की मुसीबतों के लिए ज़िम्मेदार नहीं हूँ..." अपने पिता की बातें सुनकर तिथि वहाँ से जाने लगी।
"अरे, सत्या को क्या हुआ?" थानिकाशलम ने रोती और चीखती हुई अपनी बेटी को घूरकर देखा।
"देखो, नन्ही बच्ची... हम न केवल मान-सम्मान से बंधे हैं, बल्कि जाति और समुदाय से भी... अगर जिस व्यक्ति से तुमने प्रेम किया, वह हमारी जाति या हमारे दर्जे का होता, तो तुम उड़ नहीं पातीं। तुम कहीं गईं और गटर में एक लड़की से प्रेम कर बैठीं और उसे वापस ले आईं... ओह... कितना घिनौना है! अगर किसी और का बाप होता, तो वह तुम्हें मार डालता और उस कमीने को दफना देता जिसने तुम्हें छुआ। मैं तुम्हारे प्रति अपने ऋण और स्नेह से बंधा हूँ और मैंने

तुम पर हाथ नहीं उठाया... मुझे ऐसा करने पर मजबूर मत करो..." उसने घृणा से अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा।
"देखो तो सही, पानु... अगर वो लड़का उशिरो के साथ रहना चाहता है, तो उससे कहो कि वो अपनी गर्दन आगे करके विमल का बनाया हुआ हार खरीद ले... मना कर दे..." निथिया कंधे से तौलिया झाड़ते हुए खड़ी हो गई।
वह अपने पिता को अच्छी तरह जानती थी। न केवल अपने पिता को, बल्कि अपने रिश्तेदारों को भी। वे अपनी जाति के नियमों का पालन करते थे, चाहे उनका पालन हो या न हो। वे इसके लिए कुछ भी कर सकते थे। यह सोचकर उसका शरीर कांप उठा।
वह सत्यन को कैसे भूल सकती थी और विमलनाथन के साथ कैसे रह सकती थी? यह सोचकर वह और भी ज्यादा रोने लगी।
जब विमलनाथन की शादी हुई, तब नित्या दस साल की थी। इसका क्या मतलब है कि जिस महिला ने उनकी शादी में स्कर्ट और कमीज पहनी थी, दो चोटियाँ बनाई थीं और एक तरफा फूलों की माला पहनी थी, और अपनी उम्र की लड़कियों के साथ खेल रही थी, वही अब उनकी पत्नी बनने जा रही है?
नित्या ने अपनी मां से ऐसा न करने की कितनी भी विनती की हो, पानुरेखा ने उसकी गुहार पर ध्यान नहीं दिया।
एक समय ऐसा आया जब नित्या ने रोना बंद कर दिया क्योंकि उसे एहसास हुआ कि उसका रोना व्यर्थ था।
थानिकचलम और उनकी पत्नी पनुरेखा के चार बच्चे हैं। पहले तीन बेटे हैं। सबसे छोटी नित्या है। वह बड़ी बच्ची है। तीन बेटों के बाद उसका जन्म हुआ और सभी उसे प्यार करते हैं।
जब नित्या, जो स्वयं भी एक होशियार छात्रा थी, ने अच्छे अंकों से प्लस टू पास किया और अपनी बेटी से सीए की पढ़ाई करने को कहा, तो

थानिकाशलम कॉलेज उसकी इस इच्छा को पूरा करने के लिए उपयुक्त लगा। गाँव से उस कॉलेज तक आना-जाना मुश्किल था, इसलिए उसने एक अच्छा छात्रावास ढूँढा और अपनी बेटी को वहाँ रहने दिया। तब तक वह एक परिवार के साथ रहती थी और पहली बार उसने आज़ादी का अनुभव किया। उस आज़ादी ने उसे थोड़ा झिझक भी पैदा कर दी।
वहीं पर उसकी मुलाकात सत्यन से हुई।
पहले तो वे सिर्फ दोस्त थे। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उनकी दोस्ती प्यार में बदल गई। जैसे-जैसे उनकी कम उम्र बढ़ती गई, उनका प्यार बढ़ता गया, वे एक-दूसरे को छूने, चूमने और गले लगाने लगे, और एक दिन प्यार ने सारी हदें पार कर दीं।
फिर एक दिन छुट्टी पर घर आई नित्या बेहोश हो गई, जिससे थिनकचलम और पानुरेखा भयभीत हो गए।
अन्नपूर्णी ही भागकर दाई को लेकर आई थी।
उसकी जांच करने वाली दाई ने उसके सिर पर एक बम रख दिया, जो किसी भी अन्य बम से बड़ा था।
"अरे बाप रे... आपकी बेटी तीन महीने से गर्भवती है... आप यह जानने के लिए इंतजार कर रहे थे कि लड़का कौन है..." जैसे ही उसने यह पढ़ना समाप्त किया, पूरा घर हिल गया।
अगर तुम उसे पढ़ने भेजोगी, तो क्या तुम प्यार की उम्मीद करोगी? पानुरेखा स्तब्ध रह गई। थानिकशालम, अपनी बेटी के इस कृत्य से स्तब्ध होकर, अपने बेटों के साथ मिलकर उस लड़के की पहचान पता लगाने के लिए छानबीन करने लगा और उस कमीने को पीट-पीटकर मार डाला।
उसने दाई को भी बुलाया और उससे कहा कि वह नित्या के गर्भ में पल रहे बच्चे को नष्ट कर दे, लेकिन नित्या ने इनकार कर दिया। वह रोई, छटपटाई, परेशान हुई। लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी।

नित्या का पेट साफ करने के बाद, थानिकाशालम ने तुरंत अपनी बेटी की शादी करने का फैसला किया।
चाहे वे इसे छुपाने की कितनी भी कोशिश कर लें, क्या वे चुप रह पाएंगे? जब नित्या की खबर पूरे गांव में फैली, तो यह परिवार के लिए एक बड़ा झटका साबित हुआ।
तभी अन्नपूर्णी ने एक सुझाव दिया।
"ओह, तनिकाशालम, अगर मैंने कुछ कहा तो तुम सोचोगी कि मैं गलत हूँ..." उसने हिचकिचाते हुए पूछा।
"मुझे बताओ..."
"क्या हमें नीति को अपने विमलन से बांध देना चाहिए...?" उसने पूछा, और थानिकासलम पहले तो चौंक गया, फिर सोच में पड़कर अपनी भौहें सिकोड़ लीं।
"बहन, क्या यह ठीक है?" उसने हिचकिचाते हुए कहा।
तुम क्यों नहीं आ रहे हो...?
"नहीं... तुम्हें नित्या की समस्या के बारे में नहीं पता..." अन्नपूर्णी ने हंसते हुए पूछा।
"अगर हम इस बारे में बात करेंगे तो क्या होगा? अगर आप देखें तो मेरा बेटा भी एक नाकामयाब इंसान है जिसने शादी कर ली और खूब पार्टी की। उसके लिए तो यह ठीक है..."
"बस इतना ही... क्या विमलनाथन सहमत होंगे...?"
"तुम्हें राजी करने की जिम्मेदारी मेरी है... लेकिन निथी को राजी कर लो। बस इतना ही काफी है..." थानिकशालम ने हिचकिचाते हुए अपने कंधे पर पड़ा तौलिया उठाया और उसे झाड़ दिया।
"वह किस बात से इनकार कर रही है? अगर मैं जोखिम उठाऊंगा, तो वह भी जोखिम उठाएगी..." उसने गुर्राते हुए भानुरेखा के कान में खबर फुसफुसाई, जो भानुरेखा को भी अच्छी लगी।

मुझे अपनी बिगड़ी हुई बेटी को हर हाल में किनारे पर लाना ही होगा। विमलनाथन एक लाडला है। वो मुझसे थोड़ा बड़ा है। तो क्या हुआ, शायद पहले उनकी शादी उम्र के बड़े अंतर के साथ हुई हो। एक बेटी को इससे बेहतर रिश्ता मिल ही नहीं सकता।
जिसने फैसला लिया, जिसने निथिया को सब कुछ बताया, वह रोते हुए बोली कि वह ऐसा नहीं कर सकती।
अगर वह रोते-रोते शांत हो जाती है, तो मैं उसकी आँखों में तेल डालकर उसकी रक्षा करूँगा। खैर, यह तो तय नहीं है। अगर वह विमलनाथन से बंधी है, तो वह गाएगा, वह अपनी आवाज़ में गाएगा। कठोर हृदय से पाणुरेखा ने विवाह की आवश्यक तैयारियाँ शुरू कर दीं।

(3)

हार्ड रॉक, हार्ड रॉक...
अय्यर के ज़ोर से बोलते ही, विमलनाथन ने नथस्वरम थाविल की मधुर ध्वनि के बीच भगवान पलानी के सामने निथियावन के गले में तीन गांठें बांधीं। थाली बांधते ही उन्होंने ऊपर देखा और अपने हाथों पर आंसू की दो बूंदें गिरते हुए पाईं।
उनकी नई पत्नी, जो महज उन्नीस साल की युवती थी, फूट-फूटकर रो रही थी और कह रही थी कि उसे यह शादी पसंद नहीं है। लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था।
जब उसकी मां ने उसे आने के लिए कहा, तो विमल घबराते हुए उस आदमी को खबर बताने के लिए दौड़ा जो आया था, "क्या, क्या?"
"उसे जिसे बांधना था, उसे बांधना चाहिए था, है ना?" उसने हिचकिचाते हुए कहा, और सभी लोग उसे घूरने लगे।
"बात ये नहीं है, चाचा जी... अगर आप मुझसे सहमत नहीं होंगे, तो जिंदगी अच्छी नहीं होगी..." वह हिचकिचाया।
“वह लड़का भी उन्नीस साल का है। उसने अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की है। उसके पास नौकरी तक नहीं है। उसके पास दस रुपये की संपत्ति भी नहीं है। हम किस आधार पर उस पर भरोसा करके अपनी बेटी को उसके हवाले कर सकते हैं...?” अन्नपूर्णी ने पूछा।
"इसके लिए... क्या आप चाहती हैं कि मैं उसे अपने सिर से बांध लूँ? माँ, वह बच्ची है... मेरे और उसके बीच उम्र का बहुत अंतर है... तो मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ... क्या यह सही नहीं है... कृपया समझिए..." यह कहते ही थानिकाशालम उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली, "सद्दर।"

"अरे... चाचा जी, आप क्या कर रहे हैं? आप कहाँ हैं..." वह चौंक गया और बिना उठे ही उसने हाथ ऊपर करके प्रणाम किया।
"सैमी... मैं तुमसे बहू बनकर नहीं, बल्कि भगवान बनकर विनती कर रही हूँ। क्या तुम मेरी बेटी को मुझसे दूर ले जाओगे... अगर तुम उसे मुझसे दूर ले जाओगे, तो हम सब अपनी इज्जत और मान-सम्मान के डर से आत्महत्या कर लेंगे... कृपया मना मत करना..." विमल उस आदमी को रोते हुए देखकर स्तब्ध रह गया।
"अंकल जी, अंदर आइए... प्लीज़... अब क्या? मैं बस नित्या को बांधना चाहता हूँ। ठीक है... मैं उसे बांध देता हूँ। अब अंदर आइए..." उसने कहा, और तभी थानिकाशालम खड़ा हुआ।
जिस व्यक्ति के साथ उसने सम्मानपूर्वक व्यवहार किया था, उसके द्वारा की गई विनती के बाद वह इतना हठी कैसे हो सकता था? विमलनाथन के पास सहमत होने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
यहां नित्या की शादी की अंगूठी बांधी जा रही थी। लेकिन उसका मन व्याकुल था। क्या सब ठीक होगा? यह एक ऐसी शादी है जो दोनों को पसंद नहीं। वह अभी भी सरिता को नहीं भूला है। लेकिन उसने सत्या के बारे में जरूर सोचा होगा। इस लिहाज से शादी का माहौल बदल गया है। कल क्या होगा? ये सोचकर ही विमलनाथन डर गया।
"कृपया इस केसरिया धागे को छोड़ दीजिए..." अय्यर ने अपनी मध्यमा उंगली से केसरिया धागा उठाते हुए कहा और हिचकिचाते हुए नित्या की ओर देखा, लेकिन वह वहीं बैठी रही, मानो पूरी दुनिया खत्म हो गई हो।
वह क्या करेगा? जब उसे पढ़ाने वाले व्यक्ति ने उसके पैरों पर गिरकर रोया, तो वह पत्थर की तरह कठोर हो गया।

एक आह भरते हुए, उसने उसके माथे पर एक बिंदी लगाई और फिर अय्यर द्वारा दिए गए सभी रीति-रिवाजों और समारोहों को पूरा किया और उसे पूरी तरह से अपनी पत्नी बना लिया।
घर पहुँचकर उन्होंने दूल्हा-दुल्हन को आरती करने और दूध-फल अर्पित करने के लिए अंदर बुलाया। लेकिन उसने इसे लेने से इनकार कर दिया, सब कुछ गिरा दिया, अपने कमरे में चली गई और दरवाजा जोर से बंद कर दिया।
यह देखकर थानिकाचलम का गुस्सा बेकाबू हो गया। वह गुस्से में उसकी ओर बढ़ने ही वाला था कि विमलनाथन ने उसे रोक दिया।
"रहने दीजिए, चाचा जी... अगर हालात जानने के बाद वो गुस्सा हो जाती है तो क्या फर्क पड़ता है...? ये शादी उसे पसंद नहीं है। कोई उसे इससे ज़्यादा कुछ करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। रहने दीजिए..." किसी ने भी इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहा। उनके लिए इतना ही काफी था कि शादी हो चुकी थी।
उस रात, पनुरेखा ने निथ्या को विमलन के कमरे में जाने के लिए मजबूर किया।
थानिकशालम ने उसे पकड़ने वाली महिला को घूरकर देखा, लेकिन उसने आगे कोई इनकार नहीं किया।
कमरे में सोच-विचार करते हुए बैठे विमलनाथन ने दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर ऊपर देखा।
नित्या गुस्से और बेचैनी से भरी शक्ल लिए अंदर आई। उसके हाथ में तांबे का सिक्का था। वह आह भरकर बिस्तर से उठा और नित्या के पास गया। नित्या ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा।
उस नज़र का अर्थ समझते हुए, उसने उसके हाथ से तांबा लिया और उसे वहीं मेज पर रख दिया।
"बैठ जाओ..." उसने धीरे से कहा।

उसने हिचकिचाहट भरी नजरों से उसकी ओर देखा। वह वहीं खड़ी थी फिर भी उसका शरीर कांप रहा था।
उसकी स्थिति को समझते हुए,
"बैठ जाओ, निथी..." उसने कहा, उसके गालों से बहते आँसू पोंछते हुए और वहाँ सीट पर बैठते हुए।
विमलनाथन कुछ देर तक चुपचाप वहीं बैठा रहा। फिर उसने ऊपर देखा और उसे पाया, वह अभी भी रो रही थी।
"देखो, नीति... मैं तुम्हें समझ सकता हूँ। मैं समझ सकता हूँ कि प्यार कितना दर्द दे सकता है। क्योंकि, मैं भी सरिता से प्यार कर बैठा था और उसे गले लगाया था। आज तक मैं उसके ख्यालों में ही जी रहा हूँ..." नीति ने उसकी बात सुनकर ऊपर उसकी ओर देखा।
"लेकिन अगर हम इसी बात पर अटके रहेंगे तो जीवन आगे कैसे बढ़ेगा... तुमने तय कर लिया है कि सत्या का तुम्हारे जीवन में अब कोई स्थान नहीं है... इसीलिए..." उसने कहा, और नित्या ने घृणा से उसकी ओर देखा।
"तो... क्या आप कह रहे हैं कि मैं आपके साथ रहना चाहती हूँ?" उसने धीरे से पूछा।
यह सुनकर उसने इनकार में अपना सिर हिलाया।
"मैंने ऐसा नहीं कहा, निथी... मैं तुमसे कह रहा हूं कि जो हुआ उसके बारे में सोचना बंद करो और आगे क्या होने वाला है उसके बारे में सोचो..." उसने शांत स्वर में कहा।
"मैं तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहता..." जवाब और भी अचानक आया। मैं समझ गया... आप इसके बारे में क्या करने वाले हैं...?
"मैं तलाक चाहती हूँ..." उसने कहा, और अब विमलनाथन मुस्कुराई। "लिसिन... ज़िंदगी इतनी आसान नहीं है... जब मन करे शादी करना या पसंद न आने पर तलाक लेना आसान लगता है। लेकिन असलियत में, यह

बहुत मुश्किल है..." उसने कहा, और निथिया ने इनकार में अपना सिर हिलाया।
"मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी... मुझे किसी की जरूरत नहीं है... मैं कहीं अकेले चली जाऊंगी..." वह रोई, और विमलनाथन ने उसे दया भरी नजरों से देखा।
"देखो, निथी... मैं तुम्हारा सारा दर्द और तकलीफ समझता हूँ। लेकिन मेरी बात सुनो। मैं सरिता के अलावा किसी और को अपनी पत्नी के रूप में सोच भी नहीं सकता। लेकिन किस्मत ने हम दोनों को मिला दिया है..."
"क्या तुम इसके लिए मुझे अपने साथ रहने को कहोगे? मैं सचमुच नहीं रह सकती... मैं सत्या के अलावा किसी और को अपना पति स्वीकार नहीं करूंगी..." उसने दृढ़ता से कहा, और विमलनाथन ने उसे दया भरी नजरों से देखा।
"मेरी बात समझे बिना ही निष्कर्ष पर पहुँचने का क्या फायदा? पहले मेरी बात सुनो, नितिमा..." उन्होंने सख्ती से कहा।
"देखो... जो हुआ सो हुआ। हमें सोचना होगा कि आगे क्या करना है... मैं तुम्हारी मनोदशा समझता हूँ... मुझे नहीं पता क्या कहूँ, हम भी ऐसा ही कर सकते हैं। लेकिन अलग-अलग..." यह कहते ही नित्या जाग उठी, उसे समझ नहीं आया कि वह क्या कहना चाह रहा है।
आपको क्या समझ नहीं आया?
"हम्म..."
"नित्या, हम येरकाधू जाएंगे। वहां, हमारे बंगले में, सिर्फ तुम और मैं होंगे। हमें कोई नहीं देखेगा। तुम जो चाहो करो। मैं जो चाहूं करूंगा। अगर तुम्हें अच्छा लगे, तो वहां अपनी पढ़ाई जारी रखो। एक साल बीतने दो। अगर तुम्हारे मन में अभी भी सत्य का ख्याल है, तो मैं तुम दोनों को खत्म कर दूंगा... अगर तुम सत्य को

नहीं चाहती, तो मैं तुम्हें एक और जीवन दूंगा... मैं क्या कह सकता हूं?" उसने कहा, और नित्या उसे हैरानी से देखती रही।
"माँ... चाचा... आप... आप सच कह रहे हैं..." वह हिचकिचाई, और विमलनाथन ने धीरे से मुस्कुराया।
"क्या तुम्हें लगा कि मैंने तुम्हें वासना के कारण गले लगाया...?" उस आदमी ने इनकार में सिर हिलाते हुए पूछा।
"नहीं... मैंने तुम्हारे पिता की खातिर तुम्हें बांधने की सहमति दी। जब वो मेरे पैरों पर गिरकर मुझसे भीख मांगते हैं तो मैं उन्हें मना नहीं कर सकता... कृपया मुझे माफ कर दो..." ये कहते हुए नितिया रो पड़ी।
"मैं सत्या को नहीं भूल सकता, चाचा जी..."
"मैं समझता हूँ, नित्या। क्या मैंने यही नहीं कहा था कि मैं इसीलिए तो आया हूँ? अब आगे क्या? पहले अपनी आँखें पोंछ लो। चाहे कोई कुछ भी करे, मैं तुम्हारे साथ हूँ, ठीक है..." इतना कहते ही नित्या दौड़कर उनके पास आई और उन्हें कसकर गले लगा लिया।
"अरे तुम क्या कर रहे हो..."
"धन्यवाद, चाचा जी... मुझे लगा था कि मेरा जीवन बर्बाद हो गया है। लेकिन आप इसे फिर से संवार रहे हैं..." विसुम्पा ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए उसे अपने से अलग किया।
"ठीक है, बहुत रो लिया। जो भी हो, चलो देखते हैं। अब सो जाओ..." उसने चिंता से कहा।
"अंकल..." नितिया ने कहा।
"मुझे बताओ…"
"क्या हम कल येरकौद जा सकते हैं?" उसने आशा भरी निगाहों से पूछा।
"कल?"

"हम्म... मुझे किसी का चेहरा भी बर्दाश्त नहीं होता। उन्होंने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी। मैं उनसे दोबारा कभी सामना नहीं करूंगा..." विमलनाथन ने हल्की सी मुस्कान के साथ दृढ़ता से कहा। "अगर तुमने मुझे मारा तो मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगी, निथी... मैं अब उनसे नाराज़ हूँ। लेकिन अगर कल उन्हें कोई परेशानी हुई, तो सबसे पहले तुम्हारा ही इल्ज़ाम लगेगा..." निथी ने इनकार में सिर हिलाया। फिर, अपने पेट को छूते हुए,
"तुमने मेरे पिता को बर्बाद कर दिया..." वह हांफते हुए बोली, और विमलनाथन ने अचानक उसे अपनी बाहों में खींच लिया और गले लगा लिया। उसने उसकी पीठ सहलाई।
"श... रो मत निति...! अगर उस बच्चे का दुनिया में आना तय था, तो कोई उसे रोक नहीं सकता था। यह होना ही था। अब वह चला गया। रो मत... प्लीज़। तुम्हें रोते हुए देखना बहुत मुश्किल है निति।" उन्होंने कहा और निति उनके कंधे पर सिर रखकर रोते-रोते सो गई।

(4)

अगले दिन जब नित्या उठी, तो उससे बात करने आई उसकी माँ की तरफ उसने देखा तक नहीं। उसने अन्नपूर्णी से बस थोड़ी सी बात की। उसने अपने पिता से यह भी नहीं पूछा कि ऐसा क्यों हुआ। नित्या अपने कमरे में सुन्न पड़ी रही। वह खाना खाने तक नहीं आई। विमलनाथन ने ही बाकी लोगों को शांत किया था।
"सब ठीक हो जाएगा, अट्टा। क्या आपको अनंत काल का ज्ञान नहीं है? अगर आप गुस्सा करेंगी तो ऐसे ही व्यवहार करेंगी। जब आपका गुस्सा शांत होगा, तब आप खुद को संभाल लेंगी। अभी आप मानसिक रूप से परेशान हैं। कोई बात नहीं, आप खुद से ही गुस्सा होंगी... जाने दीजिए..." यह कहते ही पानुरेखा की आंखें चौड़ी हो गईं।
"हम ये सब उसकी भलाई के लिए कर रहे हैं, भाई..."
"उसे यह समझने की ज़रूरत नहीं है। प्यार में डूबा हुआ दिल। वह सब कुछ तुरंत नहीं भूलता। हमें उसे थोड़ा समय देना होगा। वह जल्द ही सब कुछ समझ जाएगी..." उसने थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा।
"मैंने सोचा था कि हम आज येरकौद जा सकते हैं..." यह कहते हुए अन्नपूर्णी ने आह भरी।
"अरे... अभी तक कोई रस्म पूरी नहीं हुई है... मैंने तुमसे कहा था कि मैं रस्में पूरी करूँगा। जो लोग शादी में नहीं आए थे, वे अब आएँगे... अगर तुम नहीं आओगी तो वे कैसे आएँगे...?" उसने पूछा, और विमलनाथन ने गुस्से से अपनी माँ को घूरा।
“माँ... बकवास मत करो... तुम सबने उसे भावनात्मक रूप से चोट पहुँचाई है। इस स्थिति में वह शांत कैसे हो सकती है और सामान्य व्यवहार कैसे कर सकती है? मुझे नहीं पता कि जब मैंने उसे दूध और फल दिए तो क्या हुआ। अगर मैं यही काम वरवना के सामने करूँ तो वह

क्या सोचेगी? किसी भी रस्म की कोई ज़रूरत नहीं... शादी तो तुम ऐसे ही चाहती थी। फिर क्या?” प्रश्नकर्ता ने पानुरेखा की ओर देखकर कहा,
"माफ़ कीजिए, अट्टा... उसका यहाँ रहना ठीक नहीं है। आपके लिए भी ठीक नहीं है। जब वह आप सबको देखेगी, तो उसका गुस्सा कम होने के बजाय और बढ़ जाएगा। समझिए... अगर आप फिर भी उससे यह रस्म करवाने की ज़िद करेंगे, तो उसका गुस्सा और नफ़रत आपके प्रति और बढ़ जाएगी। उसे थोड़ा समय दीजिए। उसका गुस्सा शांत होने पर हम वापस आएँगे..." बड़े-बुज़ुर्ग अब और मना नहीं कर सकते थे, इसलिए वे मान गए।
जब उन्होंने अलविदा कहा, तो केवल वही चला गया। उसने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा।
विमलनाथन उसे उसी दिन येरकौड ले गया।
विमलन का आलीशान घर बहुत विशाल था। इसमें चार शयनकक्ष, एक रसोईघर, एक हॉल और एक बैठक कक्ष था। यह एक बहुत ही सुंदर घर था। घर पहुंचते ही विमलनाथन ने नितिया को अपने बगल वाला कमरा दे दिया। यह एक बड़ा और हवादार कमरा था। नितिया को उसका कमरा दिखाने के बाद, विमलनाथन ने उसे पूरा घर घुमाया।
“निथी, बाहर के कामों की देखभाल के लिए लोग हैं। सिर्फ एक माँ ही हमारे लिए खाना बनाने आएगी। अगर तुम्हें कुछ पसंद का खाना खाना हो, तो उसे बता देना। वो तुम्हारे लिए बना देगी...” उसने कहा और हमें बगीचे में ले गया।
एक बड़ा और सुंदर बगीचा था। एक तरफ सब्जियां लगी हुई थीं।
उसे खुश देखकर उसे सुकून मिला। उसे लगा कि जब तक वह खुश है, उतना ही काफी है।

आँखों को भा रहे थे, टॉप से बेधड़क बाहर निकले हुए। यह देखकर विमलनाथन ने घबराकर घूँट भरा।
आम बहुत स्वादिष्ट थे। वह उन्हें उठाकर सहलाना चाहता था। उसकी जीभ उन दो चांदों का स्वाद चखने के लिए तरसी हुई थी। वह उन दोनों के बीच खड़ा था।
“क्या, चाचा?” नित्या के पूछने पर ही विमलनाथन होश में आया। उसकी नज़र अभी भी नित्या द्वारा इकट्ठा किए गए फलों से हट नहीं रही थी।
"अंकल... क्या हुआ?" उसने सिर हिलाते हुए पूछा। उन जुड़वां टावरों और उस छोटी सी हलचल ने उसे रुककर उसकी ओर देखने पर मजबूर कर दिया, जिससे उसके पुरुषत्व में गहरा दर्द हुआ।
"अरे... ये क्या है..." वह आदमी लड़खड़ा गया, लेकिन किसी तरह खुद को संभाल लिया।
"ठीक है... खाना तैयार है..." उसने लड़खड़ाते हुए कहा।
"मुझे भूख नहीं है... मैं खाना नहीं चाहती...", नितिया ने कहा। अब जब उसने उसका चेहरा देख लिया,
"अभी क्यों नहीं खाना चाहते...? तुम्हें समय पर खाना चाहिए, नितिमा... आओ और खा लो..." उसने कहा, और बिना देर किए, विमलनाथन ने उसे अपने साथ आने से रोक दिया, और अपने सिर को पोंछते हुए तौलिये को एक तरफ रख दिया।
"निथी... पहले जाओ... अपना शॉल ओढ़ लो..." उसने अपनी नज़रें हटाने की कोशिश की, जिससे निथी असमंजस में पड़ गई।
"अरे चाचा जी... क्या हुआ...?"
"पीएस... मेरी बात सुनो, निथी... जाओ अपना शॉल ओढ़ लो..." उसने कहा, और वह ठीक है कहते हुए अंदर आई, और तभी उसने वहाँ खड़े दर्पण में खुद को देखा।

टॉप उसके गीले शरीर से चिपका हुआ था, जिससे उसके नग्न स्तन दिखाई दे रहे थे।
हॉस्टल में सोते समय वे अंडरवियर नहीं पहनते। इसी आदत के चलते, चूंकि वे रात में सो रहे थे, नित्या ने थोड़ी ढील दी और सिर्फ एक टॉप पहन लिया। उसे लगा नहीं था कि यह इतना शर्मनाक होगा।
"ओह... क्या अंकल ने यह देख लिया?" शर्मिंदा होकर उसने जल्दी से शॉल ओढ़ ली और जब उसने विमला को दरवाजे पर खड़ा देखा तो शर्म से अपना सिर झुका लिया।
"ठीक है, चलो... मुझे खाना खाना है और सोने जाना है। कल मुझे बहुत काम है..." विमलनाथन मुझे अपने साथ ले गया।
भोजन को खाने की मेज पर बड़े करीने से सजाया गया था।
"तुम्हें फ्राइड बटर चिकन पसंद है, मुझे चिकन टिक्का पसंद है, और तुम्हें नूडल्स पसंद नहीं हैं... मेरे पास वो भी हैं, खा लो..." यह सुनकर नित्या ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।
"क्या आपको पता है कि मैं क्या पी रही हूँ, अंकल?" विमलनाथन ने उसकी हैरानी पर मुस्कुराते हुए कहा।
"जन्म से ही मैं तुम पर नज़र रख रहा हूँ। मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानता। तुम्हें जो भी पसंद हो या नापसंद हो, मैं तुम्हें बताता हूँ... खाओ..." यह कहते ही नित्या की आँखों में आँसू आ गए।
सत्यन के मन में भी उससे असीम प्रेम है। वह उसे उसकी हर इच्छा पूरी करना चाहता है। लेकिन उसके पास साधन नहीं हैं। अपनी परिस्थितियों को देखते हुए, वह उसे मूंगफली और चने जैसी चीजें ही खरीदकर देता है।
निथिया खाने को घूरती रही, उसकी आंखों में उसकी याद के कारण उदासी छा गई।

"किस बात का इंतजार कर रहे हो... खाओ...", उसने कहा।
"पुदिकाला अंकल..." उसने घबराकर कहा।
"यह बिना खाए कैसे रह सकता है? मैं तो दोपहर का खाना भी ठीक से नहीं खा पाता..." उसने अपनी प्लेट में जो कुछ था उसे उठाकर उसके मुंह में डालते हुए कहा, और अब निथिया ने बिना मना किए उसे स्वीकार कर लिया।
उसे पुरानी यादें अचानक से याद आ गईं।
जब उनके पिता का निधन हुआ, तो अन्नपूर्णी उन पर भरोसा करते हुए थानिकाचलम के पास आ गए। उन्होंने अपनी बहन को भी बगल वाले घर में बसाया और उसकी जरूरतों का ख्याल रखा।
अन्नपूर्णी नित्या से प्यार करती है क्योंकि वह उनके घर की इकलौती लड़की है। हर बात मजाक में होती है। इसीलिए अन्नपूर्णी हमेशा उसे बीच में रखती है। यहां तक कि पानुरेखा भी यही कहती है, “भाभी… आप हमेशा उसे अपनी कमर से क्यों बांधे रखती हैं… क्या आपकी कमर में दर्द नहीं होता?” अन्नपूर्णी उसकी बात नहीं सुनती, चाहे वह पूछे भी। वह उसे अपने साथ ले जाती और कसकर गले लगा लेती। निथिया भी अपने घर से ज्यादा समय आंटी अन्नपूर्णी के घर बिताती थी। वह विमलनाथन से बहुत प्यार करती थी। शादी होने तक वह उसके साथ खेलती रहती थी।
जब वह पढ़ रहा होता, तो वह दौड़कर उसके पास आती और उसकी गोद में बैठ जाती। वह उसे डांटता भी नहीं था। वह उसे गोद में उठा लेता और खुद भी पढ़ाई जारी रखता। वह खाना खाते समय उसे भी खिलाता था। अगर वह कोई गलती कर देती, तो वह उसे डांटता था। ऐसी ही कई बातें होती थीं।
वह भी खाली नहीं बैठती। वह खूब शरारतें करती है। लेकिन समय के उतार-चढ़ाव में, सब कुछ बदल गया।

उस पुरानी याद को याद करके निथिया की आंखों में आंसू भर आए और उसने उसके द्वारा दिए गए भोजन को स्वीकार कर लिया।
"तुम अब क्यों रो रहे हो...?"
"ह... मुझे फल याद आ गया..." यह कहते हुए विमलनाथन हंस पड़ीं। "हम्म... तुम कितनी नन्ही बच्ची हो। जब भी मैं तुम्हें देखता हूँ, तुम हमेशा हमारे घर डोरा खेलने आती हो... मेरी गोद में सिमटकर मुझे सुला देती हो। रात को मुझे गले लगाकर सो जाती हो। मैं ये सब कभी नहीं भूल सकता, निथी," उसने हंसते हुए कहा, और इतने लंबे समय बाद ये सुनकर निथी भी दिल खोलकर हंस पड़ी।

(5)

नित्या को येरकौड बहुत पसंद आया। नई जगह, नया परिवेश, सुहावना मौसम, बार-बार होने वाली बारिश, सब कुछ उसे भा रहा था।
दिन धीरे-धीरे इसी तरह बीतते गए। नित्या ने भी अपनी झिझक छोड़ दी और विमलथन से खुलकर बात करने लगी और उसे जानने लगी। विमलनाथन ने निथिया की खुशी के लिए उसे कई जगहों पर घुमाया और उसे खुश किया।
उस दिन नाश्ते के बाद, विमलनाथन उसे अपने साथ ले गया और जागीर की सफाई करने के लिए निकल पड़ा।
"एक ठंडा स्वेटर पहन लो..." उसने चेतावनी दी, और निथिया ने उसके कहे अनुसार स्वेटर पहन लिया।
नित्या उसकी जागीर को देखकर अचंभित रह गई।
“क्या यह सब तुम्हारा है?” उसने आश्चर्य से पूछा।
"हम्म... हाँ..." उसने उसकी ओर मुड़कर देखते हुए कहा।
"क्या आगे पढ़ाई जारी रखने की आपकी कोई योजना है? नहीं... क्या आप इसे ऐसे ही छोड़ देंगे...?" उसने पूछा।
"मैं पढ़ाई कर रहा हूँ, चाचाजी..."
"आपने सीए की पढ़ाई की है, है ना?" निथिया यह सुनकर और भी हैरान हो गई जब उसने पूछा।
"क्या आपको पता है कि मैंने क्या पढ़ा?"
"हम्म... जब तुम अपनी माँ से बात करोगी, तो वो तुम्हें सब कुछ बता देंगी... क्योंकि ये तुम्हारा निजी मामला है, तो मैं थोड़ा और सुन लेता हूँ..." उसने कहा और उसे पास के एक मंदिर में ले गया। "चलो... भगवान के सामने सिर झुकाते हैं..." नित्या ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया।

"मैंने सामी पर से अपना सारा विश्वास खो दिया है... मैं नहीं आऊंगी..." उसने कहा, और विमलनाथन ने अब उसे थोड़ा गुस्से से देखा। "भगवान मनुष्य की गलतियों के लिए क्या करेंगे...? चलो, निथी..." उसने कहा, और वह अब और संकोच नहीं कर सकी, बल्कि अचानक उसका हाथ पकड़कर उसे अंदर खींच ले गई, जिससे उसके पास अंदर जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।
भगवान के दर्शन समाप्त होने के बाद, वे दोनों विभूति और कुमकुम लेकर बाहर आए। तीन लोगों ने उनके पास से गुजरने की कोशिश की, लेकिन वे हिचकिचा गए।
"अरे... विमल... ये कौन है..." एक खूबसूरत, फैशनेबल युवती आकर उसके सामने खड़ी हो गई।
"हाय जेनिफर... कैसी हो?" इवान ने जवाब में पूछा।
"इस प्रश्न का उत्तर क्या है?" उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा।
"यह सच नहीं है... मैं मंदिर आया था..." वह हँसा, और जेनिफर भी हँस पड़ी।
"मैं ठीक हूँ..." उसने कहा, और उसकी निगाहें किसी तरह उसके बगल में खड़ी महिला पर टिक गईं।
“ये लोग...?” खींचते हुए,
"ये मेरी पत्नी हैं... नित्या..." जैसे ही उन्होंने नित्या का परिचय कराया, जेनिफर का चेहरा एक पल के लिए पीला पड़ गया। "पत्नी...? लेकिन..." उसने कुछ कहना शुरू किया और फिर हिचकिचा गया।
"हम्म... हाँ... यह जल्दबाजी में होने वाली शादी है... इसलिए मैं किसी को आमंत्रित नहीं कर सकता..." उसने कहा।
"तो क्या हुआ... एक दिन हम सबको फोन करना... हम सब आ जाएंगे..." जेनिफर ने कहा, और मेल ने जवाब देने में जरा भी संकोच नहीं किया।

"ठीक है... मैं शादी करने जा रही हूँ..." उसने अलविदा कहा और चली गई, जबकि नित्या ने सोच-विचार करते हुए उस महिला और उसे उठाया। वह महिला लगभग तीस वर्ष की लग रही है। वह बहुत सुंदर होगी। अपने चाचा की शादी को लेकर वह इतनी चिंतित क्यों है? उसने मन ही मन सोचा।
"वो चाचा कौन हैं...?"
"बस यही बात है... चलिए हमारे बगल वाली एक और संपत्ति देखते हैं... जो उनकी है..."
"ओह... क्या वे तुम्हें चाहते हैं?" उसने मुड़कर उससे पूछा।
आप यह क्यों पूछ रहे हैं?
"नहीं... जब उसे पता चला कि तुम्हारी शादी हो चुकी है, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। मैंने यही सुना है..."
"हम्म... वे तीन साल पहले मेरे पास आए और मुझसे शादी करने के लिए कहा। मैंने मना कर दिया। लेकिन उन्होंने कोशिश करना बंद नहीं किया। जब वे तब बात करते थे, तो वे इसे इशारों में कहते थे..." "वे बुरे नहीं हैं। तुम्हारी शादी होने वाली है, और तुम्हारा चेहरा मुरझाया हुआ लग रहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम जाकर उनसे बात करो..."
आप किस बारे में बात करने वाले हैं...?
"नहीं... यह स्थायी नहीं है... क्या आप मुझे बता रहे हैं कि हम एक साल में अलग हो जाएंगे?" उसने पूछा, और विमलनाथन ने ध्यान से उसकी ओर देखा।
क्या वह मजाक कर रही है या गंभीर है? उसने उसके चेहरे को गौर से देखा।
"इसके बारे में कुछ मत कहो..." यह कहने वाले व्यक्ति को गुस्सा आ गया।

अब वह गुस्सा क्यों है? उसने खुद ही यह बात कही थी।
"बात वो नहीं है, चाचा जी..."
"चुप रहो निथी..." निथी ने उसकी आवाज़ सुनकर हांफते हुए कहा।
अब तक विमलनाथन ने कभी गुस्से से उसकी तरफ नहीं देखा। कभी उसे डांटा नहीं। पिछले दो महीनों से, मधु और मेरे येरकौड आने के बाद भी, वह उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार कर रहा है। लेकिन अब वह इतना गुस्सा क्यों है? उसने क्या गलती की? आठ महीने में वह उसे छोड़कर चली जाएगी। उसके बाद उसे अकेला रहना पड़ेगा। अगर वह उस जेनिफर से शादी कर ले तो वह खुश रहेगा...
"आप क्यों नाराज़ हैं, चाचा? यह आपके ही भले के लिए है।" उसने अपनी बात पूरी नहीं की, और वह उसे घूरने लगा।
"मुझे एक बाल भी नहीं चाहिए... चुप रहो..." उस आदमी ने गुस्से पर काबू न रखते हुए कहा।
ये वो कैसे हो सकती है? ये कौन है? मुझे जेनिफर के बारे में बताओ? आदमी गुस्से से सोचने लगा, अब वह उलझन में था।
मुझे अब गुस्सा क्यों आ रहा है? उसने ऐसा क्या गलत कहा? उसने एनी से जो कहा, वो उसने मेरे बारे में सोचते हुए कहा। ये देखकर मुझे खुशी होती है, लेकिन उसे गुस्सा क्यों आ रहा है?
असमंजस में पड़कर उसने नित्या की ओर देखा। वह सिर झुकाए आ रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह अब उसका गुस्सा सहन नहीं कर पा रही थी।
नित्या ने अचानक उसका हाथ पकड़ा, रुक गई और ऊपर की ओर देखा।
"श... सॉरी निथी... मुझे इतनी कठोर भाषा में नहीं बोलना चाहिए था।
जब तुमने अचानक कहा कि तुम मुझे छोड़कर जा रही हो, तो कुछ हो गया। मुझे अचानक गुस्सा आ गया..." उसने मुझे शांत करने की कोशिश की, और उसका अब पीला पड़ा चेहरा खिल उठा।

"कोई बात नहीं, चाचाजी... मेरे जाने के बाद आपको अकेले नहीं रहना चाहिए... इसीलिए तो मैंने ऐसा कहा था..." उसने उसे फिर से गुस्सा दिला दिया। लेकिन उसने खुद पर काबू पा लिया।
वह यह सोच भी नहीं सकता था कि वह उससे रिश्ता तोड़ देगी। उसका दिल दुख रहा था। उसने आह भरते हुए उसकी तरफ देखा।
"तुम्हारी शादी से पहले, मैं बस एक डरपोक था। मैं हमेशा वैसा ही रहूंगा..." उसने कहा।
"ठीक है, छोड़ो... मैं सुबह ठीक से नहीं खाऊँगा। चलो खाकर चलते हैं..." उसने कहा और उसे पास के एक रेस्तरां में ले गया। खाना खाने के बाद जब दोनों घर के लिए निकल रहे थे, तभी समय देखकर एक बच्चा नित्या से टकरा गया।
अचानक, नित्या का संतुलन बिगड़ गया और वह लड़खड़ाकर गिर पड़ी, लेकिन विमलनाथन ने अचानक अपना हाथ उसकी छाती पर रखा और उसे कसकर पकड़ लिया।
"माफ़ करना, चाची..." बच्ची ने बिना कुछ कहे भागते हुए कहा, और उसे पकड़े हुए विमलनाथन को बिजली का झटका लगा।
उसकी बाईं हथेली ने उसके दाहिने हाथ को पूरी तरह से थाम लिया था।
पांच साल बाद विमलनाथन को एक स्त्री की कोमलता का अनुभव हुआ। फिर भी, उसकी हथेली ताबूत के आकार का अंदाज़ा लगाने की कोशिश कर रही थी, फिर भी, उसकी उंगलियाँ उसे धीरे से दबाने की कोशिश कर रही थीं।
पहले तो नित्या को पता ही नहीं चला कि वह कहाँ है। जैसे ही उसने गिरने के डर से अपनी रक्षा के लिए आगे बढ़े हाथों को कसकर पकड़ लिया, उसका हाथ उसके स्तनों पर और भी जोर से दब गया।

उसकी हथेली की गर्माहट महसूस करते ही, एक हरी-भरी कली अचानक उसकी अनुमति के बिना फूल गई, और सारा एहसास कसता हुआ घुल गया।
जैसे ही उसकी हथेली ने इसे महसूस किया, उसके भीतर एक तीव्र उत्तेजना उत्पन्न हो उठी।
विमलनाथन उस समय और भी अधिक स्तब्ध रह गए जब उस दिन तक दमित रही मर्दानगी जागृत हुई और उनके सामने अपनी उपस्थिति प्रकट की। उसके मन ने उसे थोड़ा और दबाने के लिए उकसाया। तभी, अपनी गलती का एहसास होने पर, नित्या घबरा गई और उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया, उसका हाथ झटककर दूर हट गई और खड़ी हो गई।
"श... सारी नीति... मैं... मैं चाहता हूँ..." लड़खड़ाता हुआ आदमी बुरी तरह पसीना बहा रहा था।
"नहीं... कोई बात नहीं... मैं समझती हूँ..." उसने असहजता से कहा और उसकी परवाह किए बिना एक गहरी साँस ली। उसकी नज़र अपने हाथ में रखे फल पर पड़ी।
यह आठ फल हैं। देखो, देखो, यह फल बाघ के समान है।

(6)

इसी कारणवश एक दिन विमलनाथन उसे दुकान पर ले गया।
जब उसने नित्या से कहा कि वह वहां से अपनी मनपसंद सारी चीजें खरीद ले, तो नित्या का चेहरा खुशी से चमक उठा।
उसने खुशी-खुशी अपनी पसंद की हर चीज खरीद ली, और उसने इस पर कोई आपत्ति नहीं जताई। वह उसकी खुशी को देखकर संतुष्ट था।
नित्या भी खुश नहीं थी। उसे पहले कभी किसी ने इस तरह दुकान पर नहीं ले जाकर मनचाही चीज़ें खरीदने की इजाज़त नहीं दी थी। भले ही उसके माता-पिता उसे मनचाही चीज़ें खरीदकर देते थे, लेकिन उस पर भी पाबंदी थी।
सत्यान ने नित्या को कभी इतनी बड़ी चीज़ नहीं खरीदी थी। उसके पास उसे कुछ भी खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। लेकिन नित्या नित्या की हर इच्छा पूरी करने के लिए तैयार थी और सत्यान को इस बात की कोई आपत्ति नहीं थी।
चूरीधर ने उसे वह सब कुछ दिखाया जो वह अपने साथ लाया था।
"यह कैसा है, चाचाजी... यह कैसा दिख रहा है... क्या यह ठीक है?" उसने उनसे पूछा और चुनाव में मदद के लिए उनकी राय मांगी। विमलनाथन को यह पसंद आया, इसलिए उन्होंने खुशी-खुशी उसके चुनाव में हिस्सा लिया।
अंत में, वह विमलनाथन के कान के पास झुक गई,
"चाचा…"
"निथीमा कौन है..."
"यह आ गया..."
"बोलना..."
"मैं एक इनरवियर खरीदना चाहती हूँ..." उसने हिचकिचाते हुए कहा, और विमलनाथन तुरंत उसे उस सेक्शन में ले गया।

जिस आदमी को उसने देखा और खरीदा था, उसके लिए यह कैसा होगा, यह कल्पना करते हुए उसका लिंग सूज गया और उसमें दर्द होने लगा।
वहाँ बहुत सारे मॉडल के इनरवियर भी थे। जब उसने लेस से सजे इनरवियर देखे, तो उसे सरिता की याद आ गई।
वह इसे खरीदकर सरिता को पहनाना चाहता था ताकि वह खूबसूरत दिखे। लेकिन सरिता अंत तक इसके लिए राजी नहीं हुई। अब वह इसे खरीदकर नित्या को पहनाना चाहता था ताकि वह खूबसूरत दिखे। यह सब समस्या फिली बॉय पत्रिका की वजह से पैदा हुई थी।
लड़कियां अम्पलाई के मन को कैसे समझेंगी? विमलनाथन ने निथिया को इसे खरीदते हुए एक गहरी आह भरी।
सब कुछ बहुत आसान था। उसे चिड़चिड़ाहट महसूस हुई। अगर वह अपनी उम्र के हिसाब से मार्टाना खरीद ले तो अच्छा होगा। काल्पनिक घोड़ा तेज़ दौड़ा।
"अंकल... मैंने इसे खरीद लिया है। क्या हम जा सकते हैं?" विमलनाथन अभी भी इसके बारे में सोच ही रही थी कि उसने उसे चूम लिया।
विमलनाथन ने नित्या को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कई तरीके अपनाए।
इसी दौरान विमलनाथन को निथिया से प्यार हो गया।
जब भी वह उसके सीने पर नाचती थाली को देखता, तो उसे अपने होने का अधिकार महसूस होता और वह अधिकार प्रेम में बदल जाता, और वह अपने दिल में बसी सरिता को एक तरफ धकेल देता, और नित्या ऊपर चढ़कर वहां बैठ जाती।
वह उसके हर काम का आनंद लेता हुआ प्रतीत होता था, चाहे वह चलना हो, मुस्कुराना हो या बातें करना हो। साथ ही, उसका शरीर और मन उसके लिए तड़पने लगे।

अगर वह हँसे, उछले या तंग चूड़ीदार पहने, तो उसकी हालत दयनीय हो जाएगी। तब तक, दबा हुआ पुरुषत्व जंगल के राजा की तरह रोमांचित होगा। वह अपने बराबर के हिरण का शिकार करने के लिए बेताब रहेगा। वह उस आदमी को खाली निगाहों से घूर रहा था जिसे धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा था कि वह उसका पति है, और उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे समझाए।
उसे रात को नींद नहीं आती थी। वह बेशर्मी से यह भी सोचता था कि बिना कुछ कहे उसके कमरे में जाकर उसे सारी बात बता दे और उसे अपने साथ ले जाए। लेकिन अगर उसने ऐसा किया, तो वह उस पर से अपना सारा भरोसा तोड़ देगी। तब हालात पहले से भी बदतर हो जाएंगे। ओह... ये तो बहुत बड़ी त्रासदी है। जब उसे लगा कि जवानी का जोश खत्म हो गया है, तभी वो एक उग्र नदी में तब्दील हो गया और उसे बहा ले जाने को तैयार था।
विमलनाथन का पहला वैवाहिक जीवन संतोषजनक नहीं था। उन्होंने प्रेम के कारण विवाह किया था। प्रेम के दौरान भी, सरिता उन्हें ज्यादा छूने नहीं देती थी। वास्तव में, चुंबनों की कमी थी। वही उनसे मिन्नतें करते और मना करते हुए हाथ हिलाने लगते थे।
पाप देखकर वह भी थोड़ी-बहुत मान जाएगी। उसके सारे स्पर्श कमर के ऊपर ही होते हैं। नीचे, उम्म... उंगलियों के सिरे भी नहीं जाने चाहिए।
वह समय का पूरा आनंद उठाने की कोशिश करता। अगर वह इससे आगे कुछ भी करने की कोशिश करता, तो सरिता गुस्से में उसे डांटती और चली जाती।
उसके बाद, उसे उसकी पुरानी शान वापस दिलाने से पहले ही वह काफी परेशान हो जाएगा।

से ज़्यादा देर तक उस आनंद का स्वाद नहीं चखने देती थी। वह उसे दया भरी निगाहों से देखता, मानो कोई बच्चा अपने खिलौने से वंचित हो गया हो।
बाद में मुझे एहसास हुआ कि उसे इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। वह सिर्फ इसलिए उसे अपना शरीर सौंप देती थी क्योंकि वह उसे चाहता था, अपनी आँखें बंद कर लेती थी और भावहीन होकर लेटी रहती थी। चाहे वह कुछ भी करे, उसे उससे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती थी।
"क्या... मैं बहुत थक गया हूँ... मैं थोड़ा सहयोग करूँगा..." वह दर्द से कराहता है।
लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया, अपने होंठों को काटते हुए और अपनी आँखें बंद करते हुए, उसे आगे बढ़ने का रास्ता दे दिया।
वह बस गुस्सा हो जाता है।
"मुझे दे दो। क्या... सब खरीद लो..." चाहे वह इस तरह चिल्लाए, वह वहीं लेटी रहेगी जैसे उसने सुना ही न हो। एक बार ऐसा करने के बाद, इच्छा अपने आप खत्म हो जाएगी।
अपनी पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने की काल्पनिक इच्छा धीरे- धीरे निराशा में तब्दील हो गई। भला ऐसी पत्नी से क्या उम्मीद की जा सकती है जो पहले से ही थकी-हारी और बेहाल हो?
“अरे... थोड़ा हिलो... इसे छूकर देखो... इसका स्वाद लो... इसे थोड़ा और ज़ोर से दबाओ... इसे थोड़ा तेज़ करो... इसे थोड़ा सा काटो... इसे पूरा खा जाओ...” जब वह हर चीज़ के लिए अनुमति मांगता है, तो वह मना कर देती है। वह खुद को रोकता है, क्योंकि वह अपनी नई पत्नी को डराना नहीं चाहता। लेकिन एक साल बीत जाने के बाद भी उसमें कोई बदलाव नहीं आया है।

दो साल इसी तरह बीत गए। इन दो सालों में उनका यौन संबंध धीरे- धीरे कमजोर पड़ने लगा। जो पहले हफ्ते में दो बार होता था, महीनों बीतने के साथ-साथ वह हफ्ते में एक बार, फिर महीने में एक बार हो गया। तभी उसे पता चला कि उसे कैंसर है।
इलाज के बावजूद, वह उसे जीवित नहीं रख सका। वास्तव में, शादी के बाद भी, वह लगभग संन्यासी ही बन गया था।
अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, उनकी सारी भावनाएँ चरम पर पहुँच गई थीं। उन्होंने उन पर काबू पाना सीख लिया था।
लेकिन अब, जब युवा ऊर्जा से भरपूर एक युवती ने उसका हाथ विवाह के लिए स्वीकार कर लिया और उसके साथ रहने लगी, तो वह अपनी वासना को नियंत्रित नहीं कर सका।
विमलनाथन को सरिता से भी वही उम्मीदें होने लगीं जो उसे उससे थीं।
लेकिन उसे इसके लिए सहमत होना होगा।
क्या वह मान जाएगा? क्या वह उसकी इच्छाओं की पूर्ति का जरिया बनेगी?

(7)

उस दिन काम खत्म करने के बाद विमलनाथन घर लौट आया।
नित्या सोफे पर लेटी हुई किताब पढ़ रही थी।
वह अभी छुट्टी पर है। इसलिए नित्या आराम कर रही थी।
विमलनाथन के आने की आवाज सुनकर वह जाग गई और खुशी से उसकी ओर दौड़ पड़ी।
हालांकि लंबे समय बाद उसके चेहरे पर खुशी देखकर विमलनाथन आश्चर्यचकित था, लेकिन उसकी निगाहें उसकी गर्दन के नीचे ही टिकी रहीं।
उसने जो चूड़ीदार पहना था, वह उसे थोड़ा तंग लग रहा था। पिछले छह महीनों में वह थोड़ी बीमार रही थी। नतीजतन, शॉल न ओढ़े उसके स्तन आँखों को भा रहे थे, और आगंतुक को ऐसा लगा जैसे उसने कोई नशा कर लिया हो। ऊपर से, उछलते ही उसके स्तन अंदर से हिलने लगे और लार टपकने लगी। उसके कान भी उत्तेजित थे। मेरा मन कर रहा था कि जाकर उन्हें दबाऊँ और उनकी बनावट महसूस करूँ। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका।
एक आह भरकर वह उसके ऊपर चढ़ गया।
"क्या... आज तो बहुत अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है...?" उसने उलझन में कहा।
मेरा शरीर उसके आलिंगन के लिए तड़प रहा था। साथ ही, मैं उस तृप्ति को पूरा न कर पाने के क्रोध से भी व्याकुल था।
"मेरी चाची ने इसे ले लिया था, चाचा जी... उन्होंने आपको फोन किया था। भले ही आपने इसे नहीं लिया, फिर भी वे इसे घर ले गए..."
"ओह... मैं एक मीटिंग में था। आपने इसे क्यों लिया?"

"क्या... वे यहाँ आ रहे हैं...?" विमलनाथन ने उत्सुकता से उसकी ओर देखते हुए कहा।
"वे यहाँ आ रहे हैं... वे अभी क्यों आ रहे हैं? तुमने क्या कहा?" उसने तीखे स्वर में कहा।
"ओह... तुम्हें पता है मैं खुशी बर्दाश्त नहीं कर सकती... मैंने तुमसे कहा था कि इसे तुरंत खरीद लो..." विमलनाथन ने गुस्से से उसकी तरफ देखा।
"आपने ऐसा क्यों कहा...?" नित्या ने हैरानी से बोलने वाले की ओर देखा।
यदि आप देखें कि वह यह कहते समय खुश और आनंदित है, तो आप उससे पूछेंगे कि उसने ऐसा क्यों कहा।
"क्यों? क्या हुआ, चाचा जी...? क्या आपको नहीं पता कि चाची वार्रा आ रही हैं?" उसने चिंता से पूछा।
"छी... मेरी माँ के आने पर मुझे हमेशा खुशी होती है... लेकिन..." वह हिचकिचाया।
"क्या, चाचा... आप हिचकिचा क्यों रहे हैं...?" उसने उलझन में कहा। "नहीं... अगर माँ यहाँ आ गईं, तो हमें बहुत सारे बदलाव करने पड़ेंगे। यह तुम्हारे लिए मुश्किल होगा..." नित्या ने उसकी ओर देखा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है।
"क्यों परेशान होना? हमें क्या बदलाव करने चाहिए? अगर आंटी आ जाएं तो बहुत अच्छा होगा। अभी मेरे पास कोई दूसरा कॉलेज नहीं है। अगर वह आ गईं तो मेरा समय अच्छा नहीं बीतेगा... तुम कब से आंटी को ढूंढ रही हो..." उसने कहा।
"नहीं, नित्या... अगर माँ यहाँ आ गईं तो हम अलग-अलग कमरों में नहीं सो सकते... तुम्हें मेरे कमरे में ही सोना होगा... क्या तुम ऐसा कर सकती हो? तुमने बिना समझे माँ को आने के लिए कहा था...

रुको, मैं उनसे बात करके उन्हें मना कर देता हूँ..." जैसे ही उसने यह कहा, नित्या ने तुरंत उसे रोक दिया।
"तो क्या हुआ, चाचा जी... बस कुछ दिनों के लिए। मैं आपके साथ रहूंगी..." यह सुनकर विमलनाथन चौंक गया।
उसे ऐसा लग रहा था कि अगर फल फिसलकर दूध में गिर गया तो वह अपना आपा खो देगा।
"तुम क्या कह रहे हो... क्या मेरे कमरे में रुकना तुम्हारे लिए ठीक रहेगा...?"
"छी... इसमें क्या गलत है... हम दस महीने से एक ही घर में रह रहे हैं। एक ही कमरे में रहने का क्या मतलब है? मैं एडजस्ट कर लूंगी..." विमलनाथन ने यह कहते हुए खुशी जताई।
इतने दिनों तक अलग-अलग सोने वाले लोगों को एक ही कमरे में सोते हुए देखने के विचार ने उसे कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया।
ओह माय गॉड... वह शायद दुनिया में इकलौता ही होगा जो अपनी पत्नी के बारे में इतनी तड़प से सोचता होगा।
"फिर नितिमा अम्मा हर रोज यहां आकर देखेंगी कि हम कैसे हैं..." हम इतने अच्छे क्यों हैं...?
बात सिर्फ इतनी ही नहीं है... क्या हम खुश हैं... क्या हम अपने पति- पत्नी से खुश हैं? वे यह देखने आते हैं कि हम साथ में खुश हैं या नहीं... इसीलिए...
"इसलिए..."
"हमें उन्हें यह दिखाना होगा कि हम बराबर हैं। क्या तुम ऐसा कर सकते हो?" निथिया ने यह सोचते हुए यह बात कही।
"ठीक है, चाचाजी... चलिए उनके सामने खुश होने का नाटक करते हैं..." उसने कहा, और वह खुश हो गया।

"मुझे... मुझे तुम्हें छूना है... मैं सबके सामने तुम्हें चूमूँगा। क्या यह ठीक है?" वह एक मज़ाकिया इंसान था जिसने मौके का फायदा उठाया।
"हम्म... ठीक है, अंकल..." यह कहते हुए उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
यह सुनकर वह आदमी चौंक गया। अगर उसे पहले से पता होता, तो वह अपनी माँ को पहले ही फोन कर देता। कोई बात नहीं। कम से कम अब उसके पास मौका तो था। वह अन्नपूर्णी के वहाँ रहने के दिनों में उसे अपने पास बुला लेता। विमलनाथन ने मन बना लिया था।
"ठीक है तो... उन्हें आने दो..." यह कहते ही उसका चेहरा ऐसे चमक उठा जैसे कोई रोशनी जल उठी हो।
"ओह... जॉली जॉली..." वह उछल पड़ी, उसकी स्त्रीत्व की भावना भी साथ-साथ हिल उठी, जिससे वह पागल हो गया।
"बस करो, बस करो। ज्यादा उछल-कूद मत करो..." उसने चिढ़ और लालसा से कहा।
"ठीक है... आज तुम क्या कर रही हो...?" उसने नीचे उतरने की कोशिश करते हुए अपनी निगाहें उसके चेहरे पर टिकाए हुए कहा।
"कुछ मत करो... बस... अंकल बोर..." उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "अरे, ऐसे रोना-धोना बंद करो, लड़की... तुम्हारे अंदर कुछ चल रहा है।"
"इसीलिए मैंने तुम्हें काम के लिए अपने घर आने को कहा था। अगर तुम आओगे तो जो चाहो चिल्ला सकते हो। तुम ही तो हो जो सुन रहे हो..." उसने ये कहने वाले को बड़ी-बड़ी आँखों से घूरकर देखा। "अरे, अंकल जी, चले जाइए, मुझे राहत मिली है कि परीक्षाएँ खत्म हो गई हैं। आपको इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है..."

उसने कहा, फिर उसका चेहरा खिल उठा, "बस, आंटी वर्रान। अब चलिए मज़े करते हैं..." उसने कहा।
"अंकल... यहीं रुकिए, मैं आपके लिए कॉफी लाती हूँ। आप नहा लीजिए..." यह कहते हुए वह रसोई की ओर चल पड़ी। विमलनाथन अपने कमरे में चला गया और जाते समय उसकी सुंदरता को निहारता रहा।
अन्ना पूरानी के आने की सोचकर विमलनाथन खुश था। इस उम्मीद के साथ कि उनके आने से उसके और अन्ना के बीच की दूरी कम हो जाएगी, वह बेसब्री से अपनी माँ के आने का इंतजार कर रहा था।

(8)

अन्नपूर्णा के विट आने के बाद से मैं नित्या को गोद में नहीं ले पाया हूँ।
अन्नपूर्णी नित्या के लिए अपने बेटे से ज़्यादा मिठाई लाई थी।
वह उन्हें ऐसे खा रही थी मानो उसने कल सारी मिठाई खा ली हो।
"अरे... यहाँ आने के बाद से तुम्हारा वज़न बहुत बढ़ गया है।
दोबारा इतना मत खाना और मोटा मत होना... इसे उठाने का बोझ मुझे ही उठाना पड़ेगा..." यह कहते हुए नित्या ने अपने होंठ सिकोड़े और अपनी खूबसूरती का प्रदर्शन किया।
"तुमने मुझे कब उठाया था... मुझे फिर से कब उठाया था?" उसने धीरे से पूछा, और अन्नपूर्णी मन ही मन मुस्कुराई।
"अरे पिताजी... क्या मेरे बेटे ने आपको खुश किया है?" उसने उत्सुकता से पूछा।
"उसे देखकर ही पता चल जाता है। तुम इतने खुश क्यों हो?" विमलनाथन ने व्यंग्यपूर्वक कहा।
"पीएस... चुप मत रहो। मैंने तुमसे पूछा था। बताओ, आथा... तुम खुश होगी ना..." चावल का गोला खा रही आथा ने एक बड़ा निवाला लिया। "हम्म... मैं खुश हूँ, आंटी। आपका बेटा मेरे साथ अच्छा व्यवहार करता है..." अन्नपूर्णी ने सच्ची खुशी के साथ कहा।
"माँ... आप मुझे पोता या पोती कब देंगी... इस गर्मी के असहनीय होने से पहले, मैं उन्हें अपनी बाहों में लेना चाहती हूँ और उन्हें चूमना चाहती हूँ..." निथिया ने बड़ी चाहत से विमलनाथन की ओर देखते हुए कहा और साथ ही उसने तले हुए चावल का गोला अपने मुँह में डाल लिया।

"चुप रहो... अब इतनी जल्दी क्या है... उसे अपना पहला साल पूरा करने दो..." यह कहते हुए अन्नपूर्णी का चेहरा पीला पड़ गया।
“मेरी पढ़ाई पूरी होने में अभी काफी समय लगेगा। क्या तब तक मैं उसुरु के साथ रह पाऊंगा?” विमलनाथन ने अपनी मां से पूछा।
"अरे, तुम इस तरह बात कर रहे हो। स्वर्ग जाने के लिए तुम्हारी उम्र कितनी है...?" उसने सख्ती से कहा।
"पुनश्चाताप... क्या उम्र मृत्यु में बाधा है... कोई बात मुझे परेशान कर रही है। मैंने पूछा..." उसने विमलनाथन की ओर देखते हुए कहा।
"ओह, तुम दोनों तो बहुत खुश हो, है ना?" उसने संदेह भरी निगाहों से कहा।
"क्या तुम्हें अब भी शक है...?" उस आदमी ने पूछा, और अपने बगल में खड़ी नित्या को अपनी गोद में खींच लिया, अपना हाथ उसके पेट पर रखा और उसे कसकर गले लगा लिया।
"मैं चुप रहूंगी, चुप ही रहूंगी। माँ यही कह रही हैं। मैं आपको नहीं बताऊंगी..." नित्या ने अपना पेट दबाते हुए कहा।
उसे उम्मीद नहीं थी कि वह उसे इस तरह अपनी गोद में खींच लेगा। फिर, उसने अपना हाथ उसके पेट के चारों ओर लपेटकर कसकर पकड़ लिया, जिससे नित्या लड़खड़ा गई।
और जब उसने उसे छुआ, तो उसका शरीर कांप उठा, उसकी आंखें उत्तेजना से चौड़ी हो गईं, और वह उसे घूरने लगी, जबकि वह अपनी आंखों से अपनी मां की ओर इशारा कर रहा था।
"तुम क्या कर रही हो... मुझे बताओ..." सोनवान ने अपना हाथ उसके पेट पर फेरा।
"ही... ही... वो... वो अब क्यों, तुम निकम्मे बच्चे... हम ठीक हैं। हम खुश हैं..." उसने कहा और विमलनाथन की गर्दन में अपनी बाहें लपेट

लीं, उसका सिर उसके सिर पर टिका हुआ था, विमलनाथन का पुरुषत्व धड़ाम से ऊपर उठ गया।
सौभाग्य से उसने अंदर कवच पहन रखा था। अन्यथा, उसकी सारी इज्जत और प्रतिष्ठा धूमिल हो जाती।
लेकिन अन्नपूर्णा ने उसी स्थान पर बैठकर उन्हें संतुष्टि प्रदान की।
"तुम्हारी बात में दम है। मैं तुम्हारी बात मानता हूँ। लेकिन अगर तुम खुश होतीं, तो इतने महीनों तक तुम्हारे पेट में कीड़े- मकोड़े नहीं होते..." उसने उदास स्वर में कहा, और निथिया का चेहरा लाल हो गया।
"छी... चाची, उसने यही तो कहा था, मैं अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहता हूँ... जब पढ़ाई खत्म हो जाएगी, तो मैं आपको एक या दस बक्से दे दूँगा, जैसा आप चाहें। बड़े हो जाओ... क्या इतना काफी है..." यह कहते हुए विमला को अंदर ही अंदर रोमांच महसूस हुआ।
वह व्यक्ति जिसने अपनी कोख में अपने बच्चे को धारण करने वाली महिला की सुंदरता की कल्पना की थी, रोमांचित हो गया। लेकिन इसके लिए उसे सहमत होना पड़ा।
वह कब राजी हुई, कब खुश हुई, कब उसने उसके बच्चे को जन्म दिया? ये सब सोचकर ही उसे राहत महसूस हुई। उसने तो यहाँ तक कह दिया था कि अगर उसने अपना इरादा नहीं बदला तो वह सत्या को मार डालेगा। अब अगर उससे पूछा जाए कि क्या वह ऐसा कर सकता है, तो वह कहता है कि नहीं कर सकता।
उसे पूरा यकीन है कि चाहे कुछ भी हो जाए, वह उसे कभी किसी को नहीं सौंपेगा। अगले छह महीनों में उसका उसके बारे में विचार बदल जाएगा। वह इसी के लिए संघर्ष कर रहा है। लेकिन वह है जो हार नहीं मानेगी।

विमलनाथन ने आह भरी।
"ओह, मैं आह भर रही हूँ..." अन्नपूर्णी, जो उसे देख रही थी, ने हैरानी से अपनी माँ की ओर देखा।
"ओह... कुछ नहीं..." उसने कराहते हुए कहा, और जो महिला तब तक उसकी गोद में बैठी थी, वह उठकर बैग खोलने लगी यह देखने के लिए कि उसके पास खाने के लिए और क्या है।
खाना कम है। यहाँ कोई भूख से मर रहा है। वे खाने की तलाश में भटक रहे होंगे, समझ नहीं पा रहे होंगे। उसने मन ही मन उसे फटकारा। रात के खाने के समय, विमलनाथन ने निथिया को उसकी माँ से पहले खाना खिलाया, और निथिया ने बिना मना किए खाना खाने के लिए अपना मुँह खोला। यह दृश्य देखकर अन्नपूर्णी की आँखों में आँसू भर आए।
वे दुश्मन नहीं थे जैसा उसने सोचा था। वे एक-दूसरे के बहुत करीब थे। यह सोचकर उसे राहत मिली। लेकिन अगर उसे सच्चाई पता चल जाए तो क्या होगा?
उस रात, नित्या अन्नपूर्णी के कमरे में उनकी गोद में सिर रखकर लेटी हुई थी और उन्हें एक कहानी सुना रही थी, जबकि अन्नपूर्णी मुस्कुराते हुए उसकी बातें सुन रही थीं।
"तुम्हारे साथ विश्वासघात करने वालों पर तुम्हें अब भी गुस्सा क्यों नहीं है?" नितिया ने पूछा, और तब तक अन्नपूर्णी की गोद में लेटी हुई थी, जल्दी से बिस्तर से उठ खड़ी हुई।
उसने अन्नपूर्णा की ओर गुस्से से देखा।
"मुझे उनके बारे में बात करना अच्छा नहीं लगता, चाची... वे कमीने हैं... उन्होंने कमीनों जैसा बर्ताव किया। उन्होंने न सिर्फ मेरे पिता से नाता तोड़ा, बल्कि मेरे बच्चे को भी ले गए... मेरे बच्चे को ले गए..." अन्नपूर्णी ने उदास निगाहों से उन्हें देखा,

कुछ कह नहीं पा रही थी, उसकी आँखों में आँसू भरे थे और होंठ काँप रहे थे।
"तुम अब भी उस लड़के को नहीं भूली हो, नितिया..." अन्नपूर्णी ने पूछा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, तो नितिया जाग उठी और बोली, "ट्रूथिरु।"
"मुझे बताओ... क्या तुम अब भी उस लड़के के बारे में सोच रही हो? अगर हाँ, तो तुमने मेरे लड़के के साथ खुश होने के बारे में झूठ बोला था। बिल्कुल सही..."
वह सही सवाल का जवाब देने में असमर्थ थी, सही मुद्दे पर पहुंचने में असमर्थ थी।
"आंटी... ऐसा कुछ नहीं है... मैं और अंकल खुश हैं..." वह हकलाते हुए बोली। अन्नपूर्णी ने उसे गौर से देखा।
“तो तुम सत्ययान के बारे में भूल गई...?” उसने पूछा। नित्या ने बिना जवाब दिए सिर झुका लिया।
"नित्या, तुम्हारे मन में सिर्फ एक ही व्यक्ति के लिए जगह हो सकती है... अगर वह लड़का अभी भी तुम्हारे मन में है, तो इसका मतलब है कि मेरा बेटा तुम्हारे मन से बहुत दूर है। फिर तुम दोनों ने मुझसे झूठ बोला। बिल्कुल सही..." यह सुनकर नित्या को गहरा सदमा लगा।
"आंटी..." उसकी आँखों में आंसू भर आए।
अनुभवी निगाहों ने उसे अच्छी तरह परख लिया। इसलिए उसका शक जायज़ था। दोनों में से कोई भी खुश नहीं था। वे बस ऐसा दिखावा कर रहे थे जैसे उसके लिए खुश हों। अन्नपूर्णा ने दर्द भरी आह भरी। "देखो... मैं ये नहीं कह सकती कि तुम्हारे जीवन में जो कुछ भी हुआ वो सही था। लेकिन जो हुआ सो हुआ। अगर तुम ऐसा ही करती रहती तो तुम्हारा जीवन बर्बाद हो जाता। जो हो रहा है उससे खुश रहना ही

समझदारी है, न कि उसके बारे में चिंता करना..." उसने दर्द को दबाते हुए कहा।
"हम सचमुच बहुत खुश हैं, आंटी... यकीन मानिए..." जब वह यह कह रही थी, तभी विमलनाथन अंदर आ गया।
"क्या, सास और बहू इतनी देर से बातें कर रही हैं...?" उसने निथिया की ओर देखते हुए पूछा।
"निधि... क्या तुम सो नहीं रही हो? क्या तुम जाग रही हो... दस बज गए हैं..." उसने कहा।
"यहाँ, अंकल वारेन..." उसने अन्नपूर्णी की ओर मुड़कर देखते हुए कहा।
"मैं सोने जा रही हूँ, चाची... अगर मैं नहीं सोऊँगी, तो आपका बेटा भी नहीं सोएगा..." उसने कहा और जल्दी से वहाँ से चली गई।
“एक मिनट रुको…” अन्नपूर्णी ने कहा। वे दोनों रुक गए और पीछे मुड़कर देखने लगे।
"सच में, तुम दोनों खुश हो..." विमलनाथन ने अपनी माँ की ओर गुस्से से देखते हुए पूछा।
"क्या तुम्हें अब भी शक है?" उसने गुस्से से पूछा।
"ठीक है... मैं जो कहूँ वही करो। मुझे तुम पर भरोसा है..."
मुझे बताओ क्या करना है... मैं अभी कर दूंगा...
“हम्म... जाओ अपनी पत्नी का अंतिम संस्कार कर दो…” अन्नपूर्णी ने कहा, और दोनों एक पल के लिए चौंक गए। लेकिन विमलनाथन जल्दी ही संभल गए।
"बस इतना ही। ठीक है... मैं फोन रख रहा हूँ। बस नज़र बनाए रखना..." उसने कहा, और मानो मन ही मन अपनी माँ को धन्यवाद देते हुए, उसने नित्या को अपनी बाहों में उठा लिया, लेकिन नित्या चौंक गई।
हालांकि, विमलनाथन से लड़ना असंभव है।

चिंता और क्रोध से उसे देख रहा वह व्यक्ति अन्नपूर्णी की ओर मुड़ा। विमलनाथन अचानक नीचे झुका और नितिया के गाल पर चुंबन किया, उसकी आँखों में आँसू भर आए।
उसे हैरानी से देखते हुए, विमलनाथन सीधा खड़ा हुआ और अपनी माँ की ओर देखा।
"अब तुम्हें क्या हुआ है...?" विमलनाथन ने उसे कमरे में ले जाते हुए कहा।
कमरे में प्रवेश करने वाला व्यक्ति उसे तुरंत फर्श पर नहीं लिटा सका।
उसके कोमल शरीर को महसूस करते हुए, उस आदमी को उसे बिस्तर पर लिटाने, उस पर लेटने और अपनी इच्छा पूरी करने की तीव्र इच्छा हुई। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका।
उसने विमलनाथन को दूर धकेल दिया, मानो उसे निराश कर रही हो, और गुस्से से उसकी ओर देखा।
"तुमने आंटी के सामने मुझे क्यों चूमा..." उसने गुस्से से कहा। "छी... साड़ी नीति... लगता है अम्मा को शक था। इसीलिए उन्होंने मुझे तुम्हें लेने के लिए कहा। मैंने तुम्हें इसलिए लिया ताकि उनका शक दूर हो जाए। मैंने तुम्हें चूमा भी, साड़ी..." उसने माफी मांगी, और वह और ज़्यादा गुस्सा नहीं हो सकी।
"ठीक है, अंकल, मैं सोने जा रही हूँ..." उसने बिस्तर की ओर देखते हुए कहा।
"चाचा जी, क्या मैं उस तरफ लेट सकता हूँ?"
"हम्म... लेट जाओ..." उसने कहा, अपनी टी-शर्ट उतारी, दूसरी तरफ लेट गया, और नित्या उसके नंगे शरीर को देखकर हैरान रह गई।
"अंकल...आप अपनी कमीज़ क्यों उतार रहे हैं..."
"अगर आप इसे साझा करेंगे तो आपको नींद नहीं आएगी..."

"मैं... यहां रहते हुए इस पर कुछ नहीं लगाती..." उसने कहा, और वह उसे हैरानी से देखने लगा।
"यहाँ... एक लड़की है, और उसका इस तरह बिना कपड़ों के रहना ठीक नहीं है..." महिला की निगाहें विमलनाथन पर टिकी रहीं, उसने उसकी बात अनसुनी कर दी।
अरे बाप रे... इसने ये शरीर क्यों पहना है? ये तो किसी फिल्म के हीरो जैसा लग रहा है।
फिर भी, वह सोचने से खुद को रोक नहीं पाई। लेकिन विमलनाथन ने उसे उलझन भरी नजरों से देखा।
"तुम कौन हो? मुझे ऐसे देख रहे हो जैसे मैं अभी नई हूँ... मैं शहर में ऐसे ही रहूँगी..." उसने यह कहने वाले व्यक्ति को घूरकर देखा और तुरंत अपनी नज़रें हटा लीं।
"वो... उस समय... मैं एक छोटी बच्ची थी। क्या अब भी ऐसा ही है?" उसने कराहते हुए कहा।
"क्या कहा आपने..."
"जब मैं आपको इस तरह देखता हूँ, तो ऐसा लगता है... जैसे कुछ है... चाचा..."
क्या इसमें कोई पैटर्न है?
"मुझे नहीं पता क्या कहूँ... कृपया इस पर कुछ लगा दो... बाहर बहुत ठंड है..." उसने उसकी बात अनसुनी कर दी।
"छी... मुझे ठंड लग रही है, नितिमा... बात मत करो, बस सो जाओ..." उसने कहा और अपनी जगह पर लेट गया, लेकिन उसने उसकी तरफ देखे बिना ही पीठ करके लेट जाने का फैसला किया।

(9)

जो लोग आठ महीने से अपने ही कमरे में सिमटे हुए थे, उनके लिए अब उसी कमरे में रहना थोड़ा असहज था। इसी वजह से नित्या को सोने में दिक्कत हो रही थी।
वह उसकी तरफ लेटने के लिए मुड़ी, सौभाग्य से उसने अपने शरीर को कंबल से ढक रखा था। राहत की सांस लेते हुए वह विमलनाथन की गोद में चढ़ गई।
दूसरी ओर, वह पेट के बल लेटा हुआ था, उसका माथा ढका हुआ था और एक हाथ उसकी छाती पर टिका हुआ था।
बस यूं ही मत कहो, वो बहुत ही सुंदर है। मेरे मन में पहली बार ये ख्याल आया।
उसी समय, जो व्यक्ति वहां लेटा हुआ विट्ठा को घूर रहा था, उसे यह एहसास हुआ कि नित्या उसे देख रही है।
“निथी अम्मा इतना क्यों रो रही हैं?” उसने पूछा।
"नहीं, चाचाजी... उन्हें कुछ संदेह था। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं अभी भी सत्या के बारे में सोच रही हूँ," उसने कहा, और उनकी आँखें स्नेह से उसकी ओर देखने लगीं।
"उस सवाल का आपका जवाब क्या था...?" यह पूछते हुए उनकी धड़कनें तेज़ हो गईं।
"मैं जवाब नहीं दूंगी, चाचाजी..." उसने कहा, और अब विमलनाथन उसकी ओर मुड़ गई।
"निथी... क्या तुम अब भी उस लड़के के बारे में सोच रही हो?" उसने पूछा।
उसने कुछ देर सोचा,

"मुझे नहीं पता, चाचाजी... मुझे नहीं पता कि मैं उन्हें भूल गया हूँ या नहीं। लेकिन अभी मेरे पास उनके बारे में सोचने का समय नहीं है," उसने ध्यान से उसकी ओर देखते हुए कहा।
"तो फिर मैं...?" उसने झट से कहा।
"तुम... सोचने के लिए क्या है? तुम तो हर दिन मेरे कमरे में आती हो... तो सोचने के लिए क्या है?" उसने हैरानी से पूछा। विमलनाथन का चेहरा अचानक पीला पड़ गया।
उसे समझ नहीं आ रहा कि वह उससे और क्या पूछ रही है।
"ठीक है... लेट जाओ..." उसने लेटने के लिए मुड़ते हुए कहा, और नित्या वहीं लेटी रही, उसे देखती रही।
उसे नींद नहीं आ रही थी। नया घर, पहली बार अपने पति के बगल में सोना। इन सब बातों ने मिलकर उसकी नींद खराब कर दी।
"अंकल..." उसने उसे पुकारने के लिए मुड़ा।
"क्या मैं आपसे कोई बात पूछूं?"
“हम्म... सुनो...”
"क्या तुम अपनी पत्नी को भूल सकते हो?"
आप यह क्यों पूछ रहे हैं...?
"नहीं, मुझे बताओ..." उसने पूछने से पहले एक पल सोचा।
"पहले तो मुझे लगा कि मैं उसे कभी नहीं भूल पाऊंगा। लेकिन अब..." उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
"अब…"
"तुम्हारे ख्याल से मेरा दिल उससे कहीं ज्यादा भर उठता है..." यह सुनकर नित्या चौंक गई।
"अंकल... आप..." वह हकलाते हुए बोली।
"हम्म... पहले तो मुझे लगा कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।
लेकिन... पता नहीं कब और कैसे मेरा दिल तुमसे प्यार करने लगा... अब

तो मैं सचमुच तुमसे प्यार करता हूँ, नित्या। तुम जो भी करती हो, मुझे अच्छा लगता है। मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाने के लिए तैयार हूँ..." यह सुनकर नित्या उठ बैठी।
"अंकल... आप क्या कह रहे हैं..." वह स्तब्ध रह गई और वह भी उठकर उसकी ओर देखने लगा।
"मैं सच कह रहा हूँ, निथी... मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं तुम्हें किसी और को सौंप सकता हूँ... मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे साथ उस खुशी का अनुभव करना चाहता हूँ जो मैंने पहले कभी नहीं की..." यह सुनकर निथी चौंक गई।
"मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है। लेकिन मुझे तुम्हें यह बताना ही होगा... मैं... तुमसे प्यार करने लगा हूँ..." उसकी बात सुनकर नित्या और भी ज्यादा हैरान रह गई।
"चाचा जी... मैं समझ गया कि आप क्या कह रहे हैं..." उसकी आवाज में हल्की सी कंपन थी।
"मैं समझता हूँ, नितिमा। मुझे नहीं पता कब मुझे तुमसे प्यार हो गया। लेकिन जब तुम मेरे आस-पास होती हो, तो मैं जवान महसूस करता हूँ... तुम्हें एक बात पता है... मैं एक संतुष्ट जीवन भी नहीं जी पा रहा हूँ। मुझे वैवाहिक सुख भी नहीं मिल रहा है। मैंने तुमसे वो सब उम्मीदें पाल ली हैं जो मैं उससे रखता था..." उसने ऊपर उसकी ओर देखते हुए कहा।
"आपको इस बारे में अपना विचार बदलने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप जैसे हैं वैसे ही रहें। मैं बस आराम से बैठकर आपका आनंद लूंगी..." यह कहते हुए निथिया ने विमलनाथन को गुस्से से देखा।
"फिर तुमने कहा कि सत्ययान भी मुझे एक साल में हरा देगा। यह सब झूठ है..."

"मैं तुम्हें फिर से बता रहा हूँ... अगर तुमने एक साल के अंदर मुझसे शादी करने से इनकार किया, तो मैं तुम्हें भी मार डालूँगा। इससे कुछ नहीं बदलेगा... लेकिन बस इतना समझ लो कि अगर तुमने ऐसा किया, तो मुझे बहुत दुख होगा। मैं तुम्हें चैन से जाने नहीं दूँगा।" उसने यह कहा और फिर से बिस्तर पर लेट गया, उसे देखते हुए।
"मैं तुम्हें वो बात बताना चाहता था जो लंबे समय से मेरे मन में दबी हुई है। लेकिन मुझे कभी मौका नहीं मिला। आज से भी ज्यादा मैं खुद को ऐसा करने के लिए तैयार नहीं कर पाया। मैंने तुम्हें बताया था। मेरे जीवन में तुम्हारे सिवा किसी और औरत के लिए कोई जगह नहीं है..." उसने कहा।
“लाइट बंद करो और सो जाओ…” उसने कहा, और निथिया वहीं बैठी रही, विमलनाथन की बातें सुनकर वह कुछ बोल ही नहीं पाई। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने क्या कहा था।
क्या वाकई वो मेरे बारे में सोच रहा था? सत्यन के बारे में सोचते हुए उसने सोचा। उसने पहले की तरह उसे कोई बड़ा नुकसान नहीं पहुँचाया था। दिल दहला देने वाला दर्द भी नहीं था। अगर वो इसके लिए विमलन को स्वीकार करने को तैयार थी, तो इसका भी कोई जवाब नहीं था।
नित्या असमंजस में थी।
क्या यह उचित है...?
"हम्म..."
"क्या मैं तुम्हें गाल पर एक चुंबन दे सकती हूँ...?" नित्या ने हकलाते हुए पूछा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे।
"अगर तुम इसे नहीं चाहती हो, तो इसे छोड़ दो..." उसका चेहरा पीला पड़ गया, और उसे दुख हुआ।

"जी... मेरे गाल पर एक चुंबन दो..." उसने धीरे से कहा, और विमलनाथन का चेहरा चमक उठा।
वह उसकी ओर मुड़ा और उसके गाल पर चुंबन दिया, जिससे दोनों कंपकंपी महसूस करने लगे।
विमलनाथन को इससे आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा हुई, लेकिन उन्होंने खुद को रोक लिया।
उसके हाथ कांप रहे थे, फिर भी उसने उसके पूरे शरीर को छूने की कोशिश की। उस आदमी ने अपनी साथी को पुकारा, लेकिन उसने खुद को रोक लिया।
उससे दूर,
"ठीक है... सो जाओ..." उसने कहा और करवट लेकर लेट गया। उसके दर्द भरे लिंग को पोषण की ज़रूरत थी। लेकिन उसने खुद पर काबू रखा। जब हकीकत करीब हो, तो सुख की छाया क्यों मंडराती है? चलो इसे दबा देते हैं। मुझे मौका नहीं मिलेगा। सोचते-सोचते विमलनाथन सो गया।

(10)

अगला दिन शनिवार था। विमलनाथन थोड़ा देर से बिस्तर से उठा।
जागते ही उसकी नजर दूसरी तरफ पड़ी। नित्या वहां नहीं थी। पिछली रात, वह सोच रहा था कि क्या उसे अपने दिल की बात बताने से उसे दुख होगा। इसके बजाय उसने उसे चूम लिया। लेकिन उसने कोई भाव नहीं दिखाया। उसे एक गहरी तड़प महसूस हुई।
उसने उसे यह बात इसलिए बताई क्योंकि उसे लगा कि इसे मन में दबाकर रखने से बेहतर है कि उसे बता दिया जाए। अब से, उसे स्वीकार करना या अस्वीकार करना उसकी मर्ज़ी थी।
उसने आह भरते हुए उठकर बाथरूम में जाकर वापस आया।
"ये क्या है... क्या तुम हर हफ्ते तेल से स्नान नहीं करते?" अन्नपूर्णी की गुस्से भरी आवाज पीछे से आई, और विमलनाथन भौंहें चढ़ाकर वहाँ गया।
वहां, नित्या सीढ़ियों पर बैठी थी, उसकी स्कर्ट उसके सीने पर बंधी हुई थी, जबकि अन्नपूर्णा उसके सिर और हाथों पर तेल मल रही थी।
"माँ, तुम क्या कर रही हो..." अन्नपूर्णी ने अपने बेटे की ओर देखा और सिर हिलाया।
"देखो, क्या तुम्हें नहीं पता... क्यों... मैंने तुमसे कितनी बार कहा है जब मैं तुमसे बात कर रहा था, उसे नहाने और तेल लगाने के लिए याद दिलाते रहो। देखो... उसकी त्वचा बिल्कुल सूखी है, हालत और खराब होती जा रही है..." उस आदमी ने उसके सिर पर मुट्ठी भर तेल डालते हुए और उसे दबाते हुए कहा।
"आह... आंटी... दर्द हो रहा है, आंटी... मेरी आंखें जल रही हैं..." नित्या सिसकते हुए बोली।

"शश... हिलना मत, निथी... मैं तेल लगा रहा हूँ..." उसने कहा।
"माँ... तुम क्या कर रही हो? दर्द तो उसे हो रहा है। मेरी बेचारी बच्ची, उसकी आँखों में जलन हो रही है... बस थोड़ा सा मल दो। उसे छोड़ दो..." अपनी पत्नी पर तरस खाते हुए अन्नपूर्णी अपने बेटे पर चिल्लाई।
"अगर तुम अपनी आँखों में तेल डालोगे तो जलन होगी... अगर तुम उन्हें दबाओगे तो दर्द होगा। क्या तुम ऐसा नहीं कर सकते... जाओ... मैं चूल्हे पर कॉफी बनाता हूँ और पीता हूँ..." उसने आदेश देते हुए कहा, और विमलनाथन कॉफी का कप लेकर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा, क्योंकि वह अपनी आँखों के सामने घट रहे इस खूबसूरत दृश्य को देखना नहीं चाहता था।
"माँ... इस सर्दी के लिए तेल से स्नान करना अच्छा रहेगा क्या...?" "मुझे बताओ, चाचा जी... मैं हांफते हुए तुम्हें बता रही हूँ... बहुत दर्द हो रहा है, चाचा जी... चाची से कहो कि चली जाएं..." अन्नपूर्णी सिसकते हुए बोली।
"तुम कहाँ थे? तेल से स्नान करना शरीर के लिए बहुत अच्छा होता है..." उसने कहा, और अब उसने अपने हाथों को कंधों से थोड़ा नीचे करके अपनी छाती पर रगड़ा, जिसे देखकर उस आदमी के हाथ कांपने लगे।
अपनी बहू को तेल लगा रही अन्नपूर्णी ने मुड़कर अपने बेटे की ओर देखा, जो नित्या को घूर रहा था और इस बात से अनजान था कि उसके मुंह में एक मक्खी थी। अचानक, उसके मन में यह विचार आया।
"अरे... विमला, क्या तुमने अपनी कॉफी पी ली?"
"हम्म... मेरा पेट भर गया..." उसने आखिरी घूंट लेते हुए कहा और अपनी माँ की ओर देखा।

“इसे छुपाओ और यहाँ आओ…” उसने अधिकारपूर्वक कहा। इतना कहते ही वह अपनी माँ के पास आ गया।
"लो... तुम अपनी दादी के पास आओ। मुझे रसोई में बहुत काम है... वो कहती हैं कि उन्हें तभी दर्द होता है जब मैं उन्हें दबाती हूँ। मैं देखूँगी कि अगर तुम आओगे तो वो क्या कहती हैं... उनके हाथ-पैर अच्छे से लपेट दो... उनके शरीर पर एक भी जगह मत छोड़ना..." विमलनाथन कांपते हुए बोलीं।
“माँ, क्या ये मैं हूँ...?” अथिरा
"बाद में, अगर तुम अपनी बहू को तेल लगाने के लिए पड़ोसी के घर जाओ... तो आओ... आओ और लगा लो..." यह सुनकर निथिया और विमला चौंक गईं।
"आंटी... मुझे ये सब नहीं चाहिए... मैं बस थकने तक इंतजार कर लूंगी..." उसने उसे रोकने की कोशिश की।
आह... मैं अब भी इसे ठीक से व्यक्त नहीं कर पा रहा हूँ...
"आंटी, आप किस तरह की बच्ची हैं? मैं कर सकती हूँ। मैं खुद कर लूँगी..."
"मैंने तुमसे कहा था कि मैं यह नहीं कर सकता। पूरी पीठ को ढकना मुश्किल होगा। विमलनाथन कर लेगा... तुम्हें इसे अच्छे से साफ कर लेना चाहिए।" यह कहकर वह खड़ा हो गया, उसके दिल में खुशी की लहर दौड़ गई, और विमलनाथन आकर निथिया के चरणों में बैठ गया।
"आंटी, आपकी आंखों में जलन हो रही है... आप इसे किसी और दिन ठीक से लगा सकती हैं। मैं अभी नहाने जा रही हूँ।" उसने विनती की। "प्यारी... इसे अपने पैरों पर मत लगाओ... अरे... मत लगाओ। जल्दी से धो लो और नहा लो... मैंने इसमें थोड़ा गर्म पानी मिला दिया है।
ऊपर से फूँक मारो..." यह कहते ही विमलनाथन आकर निथिया के पैरों के पास बैठ गया, मानो वह लड्डू खाना चाहता हो।

माना ने जल्दी से अपनी मां के लिए एक मंदिर बनवाया और पूजा- अर्चना की।
“देखो, अगर तुम उसे नहीं चाहते, तो उसे तुरंत मत छोड़ो। उसे महीनों से तेल की कमी है और हालत बिगड़ती जा रही है। मैं आकर देखूंगा कि तुम सही कर रहे हो या नहीं।” उसने धमकी दी।
"लो... मैं इसे पहना देता हूँ..." उसने उसकी स्कर्ट उठाकर उसकी जांघ पर रखते हुए कहा, लेकिन निथिया ने अचानक उसे रोक दिया। "ओह... नहीं, अंकल..." वह हकलाते हुए बोली।
"बस थोड़ी देर रुक जाओ... माँ हमारे पीछे है। नहीं तो, उन्हें शक हो जाएगा..." उसने कहा, और वह अब इससे इनकार नहीं कर सकी।
उसने नित्या का पैर उठाया और अपनी गोद में रख लिया, और उसके सफेद संगमरमर के पैरों पर तेल डालना शुरू कर दिया, और यह देखकर अन्नपूर्णी के चेहरे पर एक शरारती मुस्कान फैल गई।
क्या आप दोनों मुझे रास्ता दिखाएंगे? रुकिए... जाने से पहले, मैं अपने पोते या पोती को अपनी कोख में हमेशा के लिए पलने के लिए छोड़ जाऊंगी। विमलनाथन हाथ में तेल का कटोरा लिए बाथरूम में खड़े अपनी युवा पत्नी को देख रहे थे।

(11)

विमलनाथन को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने निथिया के पैरों पर तेल मलते हुए उन चिकने पैरों की आवाज़ में पूरी तरह खो गया।
मॉल में डूबे हुए पैर। वे संगमरमर की तरह चमक रहे थे। जब विमलनाथन ने उन पैरों पर हाथ रखा, तो उसने पहले उन्हें वासना से सहलाया, मानो वे कॉफी और दूध की तरह मुलायम हो गए हों।
ओह माय गॉड... वो खूबसूरत पैर! विस्मित व्यक्ति उन पैरों को इंच-इंच चूमना चाहता था। लाल पैरों पर तेल मलने वाले उस व्यक्ति को पौरुष का रोमांच महसूस हुआ। नित्या ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं जब उसने पैरों को उसकी गोद से उठाकर उसकी नंगी छाती पर रख दिया और घुटनों से लेकर टखनों तक उन्हें सहलाने लगा।
जैसे ही मेरा पैर उसकी चिकनी, बालों वाली छाती पर पड़ा, मेरे अंदर कुछ सिहर उठा।
उसे देखते ही उसकी आँखें चौड़ी हो गईं, और वह भक्त की तरह उत्सुकता से उसके पैरों पर तेल लगा रहा था जैसे कोई भक्त मूर्ति का अभिषेक कर रहा हो। तभी नित्या ने उसकी स्कर्ट को उसकी जांघों से ऊपर उठाकर उसे रोक दिया।
"मुझे वहां कुछ नहीं चाहिए, चाचाजी..." वह हकलाते हुए बोला।
"माँ आ रही हैं... चुप रहो..." यह कहते हुए उसके तेल लगे हाथ उसकी जांघों पर थे।
वह अपने हाथों को उसकी जांघों से दूर नहीं रख पा रहा था।
"क्या... तुम जो भी खाना खाती हो, सब तुम्हारी जांघों में चला जाता है? ये तो बहुत बड़ी हैं..." उसने हैरानी से कहा, और उसने अपनी स्कर्ट नीचे खींचने की कोशिश की।

"अंधेरा... मैं तेल लगाऊँगी..." उस आदमी के हाथ धीरे-धीरे आगे बढ़े, और उसके हाथ एक खतरनाक जगह की ओर बढ़ रहे थे।
विमलनाथन ने अचानक हुए उसके हाथ को रोकने के लिए मुश्किल से अपनी सांस रोकी।
"तुम मुझे क्यों रोक रहे हो..."
"अह... नहीं... मुझे नहीं चाहिए... यह... काफी है..." वह हकलाते हुए बोली।
"मैंने तो अभी इसे लगाया भी नहीं है..." उस आदमी के हाथ, उसकी बाधा को तोड़ते हुए अंदर प्रवेश कर रहे थे, तभी उनका हाथ कवचधारी महिला के फूल से टकरा गया और वे रुक गए।
वह निराश हो गया। हे भगवान... मैंने नहाते समय इसके बारे में सोचा और इसे पहन लिया। उसने मन ही मन खुद को कोसा और बिना हाथ हटाए ही उसे इस तरह रगड़ने लगा कि वह महिला के गुप्तांग को छू रहा था, और नित्या हिल भी नहीं पा रही थी।
"माँ... माँ... मैं... नहीं..." उसने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही वे हाथ धीरे-धीरे आगे बढ़े, उसका शरीर लड़खड़ा गया।
अब वह उसके पैरों के बीच घुटनों के बल बैठ गया, अपना हाथ उसकी कमर की ओर बढ़ाया और उसे अपनी ओर खींच लिया, उसका शरीर उसके नंगे शरीर से टकरा गया। उसने अपने हाथों में और तेल लिया, उसे दोनों जांघों पर मल दिया, थोड़ा-थोड़ा करके ऊपर की ओर ले गया और उसे ऊपर की ओर घुमाने लगा, उसका हाथ उसकी योनि पर टिका हुआ था। "माँ... चाचा..." वह हकलाते हुए बोली।
"श... आनंद लो..." उसने उसके कान में फुसफुसाया, और नित्या जल्दी से और तेल लेकर अपने एप्रन पर लगाने लगी।
"आप क्या कर रहे हैं, चाचा..." वह कांप उठी।

"मुझे रास्ता नहीं पता। मैं तेल लगाऊंगा..." उसने कहा और अपनी उंगलियों से उसके गुप्तांग को ढके हुए एप्रन के ठीक ऊपर तेल लगाया, और निथिया ने अपने होंठ काट लिए और कांप उठी।
जैसे ही उसने अपना हाथ तेल से भीगी हुई पैंटीहोज के अंदर डाला, उस बिना बालों वाली महिला ने अपने हाथों से उसका स्वागत किया। नित्या को गहरा सदमा लगा।
"चाचा... चुप रहो... आप क्या कर रहे हैं, चाचा..." वह हिचकिचाई, क्योंकि उनकी उंगली उस स्त्रीत्व की लंबाई और चौड़ाई नाप रही थी।
“हम्म... इसका आनंद लो... क्या मुझे ऐसा मौका दोबारा मिलेगा या नहीं...” उसने मज़ाक में कहा और कुछ देर तक उसकी योनि से खेलता रहा। उसकी एक उंगली योनि के परागकोष को खोज रही थी, जबकि उसकी मध्यमा उंगली योनि की गहराई को महसूस करने के लिए जगह तलाश रही थी। दोनों उंगलियों की तेज़ गति से नित्या का शरीर कांप रहा था। "श... चाचा... आप क्या कर रहे हैं, चाचा..." वह हिचकिचाई, और अब उनके दूसरे हाथ ने तेल लेकर उसके कंधों पर लगाया और उसके ऊपरी सीने तक पहुँच गया। दूसरा हाथ शंख को अपनी इच्छानुसार निचोड़ रहा था।
विमलनाथन को भी ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी स्वर्ग में हो। यह पहली बार था जब उसने उसके कोमल शरीर को इस तरह छुआ था। उसका पुरुषत्व मुझसे अलग था, मैं अभी भी जीवित था। मेरा थोड़ा ख्याल रखना...” वह अपनी कमीज़ फाड़ने ही वाला था, लेकिन वहाँ दर्द हो रहा था। उसे तुरंत उसे छोड़ना पड़ा, उसे उसकी जगह पर भेजना पड़ा और उसे सुला देना पड़ा। नहीं तो वह पागलों की तरह तड़पने लगता। नित्या हांफ उठी जब उसने उसे अपनी ओर खींचा और इस तरह से लिटाया कि उसका पुरुष अंग उसकी स्त्रीत्व से मजबूती से सट गया।

"चाचा…"
"हम्म.."
"तुमने अभी कहा था कि तुम वेश्या होने का नाटक कर रही थी..." उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।
"श... शोर मत करो... माँ तुम्हारे पीछे है..." उसने इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि केवल उसके कान ही उसे सुन सकें।
यह सुनकर नित्या ने तुरंत अपना मुंह बंद कर लिया।
"क्या... तुमने इसे अच्छे से पकाया...?" अन्नपूर्णी ने रसोई से आवाज़ लगाई।
"आह... हाँ..." नित्या ने यहाँ से एक हल्की सी आवाज़ निकाली और जवाब में कुछ और नहीं कहा।
नित्या को अपनी स्त्रीत्व और पुरुषत्व का अचानक पता चला, जो तब तक संघर्ष कर रहा था।
"अंकल... आप क्या कर रहे हैं..." वह हकलाते हुए बोली।
"चुप रहो... कोई आवाज़ मत करो..." उसने अपनी लुंगी की गांठ खोलते हुए कहा और उस कोबरा को बाहर निकाल लिया जो तब तक पिंजरे में बंद था, जिससे नित्या डर गई।
"ओह... नहीं, अंकल... आंटी आ गई होंगी..."
वह रुक गई,
"चुप रहो... वे नहीं आएंगे... अगर आ भी गए तो उन्हें पता नहीं चलेगा कि हम क्या कर रहे हैं..." उसने कहा और पलक झपकते ही उसने एक ही झटके में अपना लिंग तेल से लथपथ महिला के अंदर डाल दिया। “आह,” नित्या चीखी। उसने दूसरे हाथ से उसका मुंह ढक लिया।
“एक भी आवाज़ मत करना, नित्या…” उसने कहा। नित्या को विमलनाथन की धृष्टता का एहसास हुआ जब वह घुटनों के बल खड़े होकर उसके अंदर हरकत करने लगा, उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। अपने अंदर डाले

हुए लिंग को थोड़ी देर आराम देने के बाद, नित्या ने फिर से तेल लिया और उसे अपनी छाती पर मल लिया, फिर उसे थोड़ा नीचे लाते हुए उसके हाथों को रोक दिया।
"मैं वहां नहीं जाना चाहती, चाचाजी..." उसने इनकार कर दिया। "श्श्श... मुझे मत रोको, नितिया..." उसने कहा, और जैसे ही वह उसके अंदर गया, उसने अपना लिंग उसकी बगल तक फैलाया और फिर वापस उसकी छाती तक ले आया। उसने उसकी स्कर्ट की गांठ खोल दी। नितिया वहीं लेटी रही, अपनी आँखें बंद किए और अपने अंदर उस मोटे लिंग को महसूस करती रही।
"मैं थोड़ा हिलूंगा, नितिमा..." उसने आगे-पीछे झूलते हुए कहा, अपनी गांठदार स्कर्ट को थोड़ा नीचे करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह बिना किसी हिचकिचाहट के नीचे सरक गई, तेल से लथपथ।
अब जबकि ट्विन टावर्स का विस्फोट आंखों के लिए एक शानदार दृश्य था, वह पागल हो गया।
जिस व्यक्ति ने अपने शरीर पर तेल लगाया था, उसने लालसा भरी निगाहों से कलशों में झाँका और धीरे-धीरे अपने हाथों को उसकी कमर में डाला, चारों उंगलियों को घुमाते हुए तब तक प्रयोग करता रहा जब तक कि उसका हाथ अंदर फिसलकर उसके हाथों के बीच पूरी तरह से नहीं टिक गया।
निथिया कुछ देर तक तेल लगाने के बहाने अपनी कमर दबाती रही और फूट-फूटकर रोने लगी। फिर उसने धीरे से अपना हाथ ऊपर उठाया, लटके हुए फलों के किनारों तक ले गई और पलक झपकते ही कलश उठा लिए। "चाचा..." वह कराह उठी..." उसके दोनों बड़े हाथ कमरबंद की तरह उसकी छाती पर जकड़े हुए थे।
वह रोमांचित था। निथिया ने मुश्किल से अपनी भावनाओं को काबू किया।

"माँ... चाचा..." वह हकलाते हुए बोला।
"श... एक मिनट रुको... मैं इसे अपने लिंग पर नहीं लगाना चाहता..." उसने व्यंग्य से कहा, और धीरे-धीरे फल को ऐसे उठाया जैसे हाथों से उसका आकार नाप रहा हो। उसने उसे हल्के से दबाया। उसने उसे निचोड़ा। वह धीरे-धीरे रबर की गेंदों की तरह उसके हाथों में समा गया, जिससे उसे कामुकता का एहसास हुआ।
उसने पित्ताशय को फिर से बड़ी ताकत से पकड़ा, फिर उसे अपने हाथों में थामकर उसका वजन मापा।
कहने की जरूरत नहीं, वे कलश बिल्कुल सही आकार के थे, उनकी हथेली के लिए बिल्कुल उपयुक्त आकार के।
राहत की सांस लेते हुए उसने उसे धीरे से दबाया और गले लगाया, लेकिन उसने उसके हाथों को दूर धकेलने की कोशिश की। उसने अपने होंठ उसके कानों के पास लाए,
"श्श... मैं कुछ नहीं कर रहा... मैं बस तुम्हें थोड़ी मालिश दे रहा हूँ... आनंद लो..." उसने कहा, और अपनी इच्छा को संतुष्ट करने की कोशिश में उसका लिंग धीरे-धीरे उसके अंदर हिलने लगा।
निथिया आनंद को सहन नहीं कर पा रही थी। लंबे समय बाद उसके पुरुषत्व का स्पर्श पाकर वह सिहर उठी, और उसने अपने होंठ काट लिए और आँखें बंद कर लीं, उस आनंद में डूबी हुई जो वह उसे दे रहा था।
उसने अपने होंठ फिर से उसके कानों के पास लाए।
"श... ये तो एकदम सही है... क्या साइज है... 36," उसने उत्सुकता से पूछा, मानो उसे नापने के लिए अपने हाथों में थामे हुए हो।
"36... क्या तुम जानती हो कि ये दोनों तुम्हारे शरीर के लिए कितने बड़े हैं..." उसने कहा, और अब उसने अपनी तर्जनी उंगली से उसके निप्पल को छुआ, जिससे नितिया कांप उठी।

"मा...मा... वेना..." वह हकलाते हुए बोली, वह उसकी बात सुनने के मूड में नहीं था। जब उसका हाथ उसे छूआ, तो उसके दोनों स्तन, जो तब तक सुप्त थे, अचानक जाग उठे और खड़े हो गए, उसने उन्हें दो उंगलियों से पकड़ लिया और धीरे-धीरे घुमाने लगा।
"श... आह... अंकल..." नित्या बड़बड़ाने लगी, अब वह खुद को भूल चुकी थी।
"मुझे आश्चर्य है कि मैं कितने दिनों से तरस रहा हूँ..." यह कहने वाले व्यक्ति ने अपने थन बाहर निकाले और उन्हें गाय का दूध दुहने की तरह निचोड़ा।
"मैं इसे चूसना चाहता हूँ... मैं इसे ऐसे चूसना चाहता हूँ... मैं बच्चा बनकर यह दूध पीना चाहता हूँ... मुझे ये दोनों चीज़ें एक साथ, हर दिन चाहिए..." गुस्से में भरे उस आदमी ने फलों को हाथों में पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से हिलाते हुए अपनी कमर मटकाई। उसने फलों को दबाया।
"चाचा जी... धीरे कर दीजिए... दर्द हो रहा है..." वह सिसकते हुए बोली।
"अंधेरा... मैं इसका रस निकाल कर पी लूँगा..." उसने कहा और उसे और निचोड़ने लगा।
“मैं... क्या मैं इन्हें चख सकता हूँ... क्या मैं इन्हें ले सकता हूँ?” उसने मुस्कुराते हुए कहा और कुछ देर तक उसकी कलियों से खेलता रहा। उसने उन्हें निचोड़ा। उसने चूसा। उसने खींचा। उसने उन्हें घुमाया। उसने एक चौथाई इंच लंबी कलियों को लिया और आधे इंच की गति से एक फल को अपने मुंह में लेकर चूसा, और उसने अपना लिंग पूरी तरह से उसके अंदर डाल दिया, और उसे अंदर धकेल दिया। विमलनाथन अचानक चौंककर जाग गया।

यहां, जब स्वर्ग का उद्घाटन समारोह हो रहा है, तो सामने कौन है? गुस्से से पीछे मुड़कर देखते हुए,
"अरे... मैंने तुम्हें क्या करने को कहा था? तुम क्या कर रहे हो...?" उसकी माँ ने पूछा। विमलनाथन चौंक गया।
"ओह... माँ, क्या तुमने देखा... उसने फिर से उसके अंदर प्रवेश किया..." विमलथन घबराया हुआ था और उसने जल्दी से अपना लिंग उससे बाहर निकालने की कोशिश की।
यहां क्या हो रहा है? उसका लिंग उसके अंदर फंसा हुआ है। लेकिन मुझे नहीं पता कि ऐसा कुछ हुआ भी है या नहीं... जागते ही उसने अपने हाथों को देखा।
वहां, उसका हाथ अभी भी उसके कंधों पर तेल लगा रहा था।
फिर... उसने उसके फल उठाए और उन्हें दबाकर उनकी कोमल डंठलों को महसूस किया... क्या यह सब महज़ एक कल्पना थी? क्या यह सब झूठ था, उसके अंदर अपना लिंग डालकर आनंद पाने की कोशिश? वह अविश्वास से देखता रहा, और वहाँ, उसकी स्कर्ट उसी जगह कसकर बंधी हुई थी, ज़रा भी ढीली नहीं हुई थी, उसके सुंदर फलों को छिपाए हुए थी, जबकि उसके हाथ केवल उसके नंगे कंधों पर तेल मल रहे थे।
क्या यह सब महज एक कल्पना थी? वह निराश था।
ही... ही... यह आया और मैं..." वह हकलाया।
"अगर तुम मुझे इसे पहनने के लिए कहोगी, तो मैं इसे रगड़ता ही रहूंगा..." माँ ने डांटते हुए कहा, और विमलनाथन तुरंत उठ गया। अगर बात इससे आगे बढ़ गई तो वह अपना नियंत्रण खो देगा और जो कुछ वह कल्पना में देखता है वही करेगा, भले ही वह व्यवहार में हो। उस व्यक्ति को अकेला छोड़ दीजिए, महोदय... फिर या तो उसे समझ आ जाएगा या नहीं आएगा...

"अरे, छोड़ो भी... मुझे बहुत काम करना है। तुम इसे अपनी बहू पर लगा दो..." उस आदमी ने नित्या की ओर देखे बिना कहा और अपने कमरे में भागने की कोशिश की। उसे अपनी मर्दानगी का प्रायश्चित तुरंत करना था।
जिस भावना की उसने कुछ क्षण पहले कल्पना की थी, वह उसे पीड़ा दे रही थी।
अयोदा स्वामी। किसी भी अंबल को कभी भी इस स्थिति का सामना नहीं करना चाहिए।
जिसने कष्ट सहा,
"मैं... नहाना चाहता हूँ..." उसने इनकार कर दिया।
"तुमने इसे उस पर लगाया। अब, क्या तुम्हें इसे खुद पर नहीं लगाना चाहिए?" अन्नपूर्णी ने पूछा, और वह आदमी, जो तब तक बाथरूम में जाने की जल्दी में था, अब खड़ा हो गया और जाग गया।
यह उसकी सूची में नहीं था। उसकी आँखों में चमक आ गई और उसने अपनी माँ को लालसा और संदेह भरी निगाहों से देखा।
"आओ... आओ और बैठो... मुझे तुम्हें लाड़-प्यार करने दो..." अन्नपुरानी ने शतरंज के मोहरों को बड़ी खूबसूरती से हिलाया। क्या अप्रत्याशित भाग्य मिलने पर यह कहना कि उसे यह नहीं चाहिए, पागलपन है?
विमलनाथन बिना किसी देरी के आए और बैठ गए।
इसी बीच, निथिया उस समय हैरान रह गई जब अन्नपूर्णी ने उससे उस पर तेल लगाने को कहा।
"आंटी... मैं अंकल को कैसे खुश करूँ..." अन्नपूर्णी ने हिचकिचाते हुए अपनी बहू को घूरकर देखा।
"यह किस तरह का सवाल है? उसने यह सवाल तुम पर नहीं पूछा। अब तुम इसे पूछो..."

"□□□□, □□□□... □□..." □□ □□□□□□ □□□ □□□□□
"□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□..." □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□
□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□

(12)

एक क्षण के लिए, मैं उस व्यक्ति की तुलना सत्यनारायण से करने से खुद को रोक नहीं पाया, जो चौड़ी छाती, मजबूत भुजाओं और पैरों और कसे हुए पेट वाले पुरुष का आदर्श उदाहरण थे।
सत्यन दुबला-पतला और लंबा रहा होगा, जिसका शारीरिक गठन उस उम्र के अनुरूप था। लेकिन इवान पोन्नियिन सेल्वन के करिकालन की तरह राजसी था।
इसके बावजूद, महिला की कामुकता अचानक बढ़ गई और उसे दर्द होने लगा। उसका सिरा अलग-अलग दिशाओं में हिलने लगा, मानो उसे कुछ और चाहिए हो।
नित्या स्तब्ध रह गई।
"निथी, तुम किस बात का इंतजार कर रही हो? इसे लगाओ। उसे इससे बहुत खुशी मिलेगी।"
लार निगलते हुए, उसके पास तेल को चम्मच से उठाकर उसके सिर पर लगाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।
उसके लिए, मानो स्वर्ग के द्वार खुल गए हों। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और उस कल्पना को फिर से शुरू किया जिसे उसने कुछ क्षण पहले छोड़ा था, उसकी मर्दानगी शैतान का खेल फिर से खेलने के लिए तैयार थी। कुछ देर तक अपने सिर की मालिश करते हुए,
"सिर की बात छोड़ो, अब इसे अपने शरीर पर लगाओ..." अन्नपूर्णी ने पीछे हटते हुए कहा, और कोई दूसरा विकल्प न होने पर निथिया ने उसके शरीर पर तेल लगाना और उसे दबाना शुरू कर दिया।
विमलनाथन, मानो किसी लॉटरी के भाग्यशाली टिकट की तरह, अपनी आँखें बंद करके उसके हाथों के अपने पूरे शरीर पर घूमने के आनंद में डूब गया। उसके रेशमी हाथ उसके हाथों, पैरों और छाती पर चलने

लगे। जब उसने उसके कंधों को दबाया और उसके सीने तक नीचे सरकी, तो विमलनाथन रोमांच से खड़ा हो गया, क्योंकि उसकी उंगलियों के उसके स्तन को छूने के झटके से उसके रोंगटे खड़े हो गए थे।
“ह…” खुद को भूलकर, एक हल्की सी आवाज़ निकालते हुए, वह और नीचे झुकी और अपने हाथ उसके पेट पर रख दिए। अब विमलनाथन का सिर उसके स्तनों से टकरा रहा था। जैसे-जैसे वह और नीचे झुकी, वह उसके कंधों से टकराया, उसकी मर्दानगी को असहनीय पीड़ा हुई। और जैसे- जैसे उसके हाथ धीरे-धीरे उसके पेट की ओर बढ़े, विमलनाथन चरम सीमा पर पहुँच गया।
"हम्म..." वह कराह उठा, और उसके मन में यह भी ख्याल आया कि वह उसका हाथ पीछे खींचकर अपने दर्द करते लिंग पर रगड़ ले।
अपनी कल्पना में, उसने सोचा कि वह उसके हाथों को वहाँ ले जाकर, अपने उत्तेजित लिंग पर आगे-पीछे रगड़ेगा, और फिर उसे सुखदायक और आनंददायक अनुभूति देगा। कल्पना बिल्कुल सही थी। वास्तविकता में कैसा होगा? लेकिन यह एक वास्तविकता थी।
"क्या... पुसियाचा...?" अन्नपूर्णानी ने पूछा,
"आह... ये तो बहुत उलझा हुआ मामला है..." हालांकि निथिया ने कहा, "नहीं... मैं अभी ऐसा नहीं कर सकता..." विमलनाथन चिल्लाना चाहता था।
“ठीक है... ठीक है... जाओ और नहा लो...” अन्नपूर्णी ने कहा।
"चाचा जी... मैंने पहले तेल लगाया है। तो मैं पहले नहाने जाती हूँ।" वह गुस्से में उड़ गई, लेकिन वह वहीं बेकाबू आनंद से तड़पता हुआ पड़ा रहा। जब वह आखिरकार नहाने गया, तो उसे अपने बेकाबू लिंग के दर्द ने जकड़ लिया।
इस बारे में कुछ तो करना ही था। नहीं तो उसे बिस्तर पर ले जाना पड़ता। पानी चालू करने के बाद, उसने बीच में बंधा कपड़ा और अंदर

रखी जाली फेंक दी, और सीधे खड़े होकर लेटे हुए आदमी की सेवा करने लगा।
उसकी कल्पना में, नित्या ने उसे गले लगाया। उसने उसे गले लगाया। उसने अपना चेहरा उसके प्यालों में छिपा लिया। उसने उनका स्वाद चखा। उसने छोटी कलियों को अपने मुँह में लिया और उनका स्वाद लिया। उसने अपने हाथों से उन सभी जगहों को छुआ जहाँ सूरज की रोशनी नहीं पहुँचती थी। उसने उन्हें सहलाया। उसने उन्हें दबाया। उसने उन्हें चूसा।
उसने अपनी उंगलियाँ झाड़ियों में छिपे आनंद के कुएँ में डालीं और उसकी गहराई को महसूस किया। उसने बिना रुके अपना आठ इंच लंबा लिंग उसमें धकेल दिया। वह हिलता रहा। अंत में, वह चरम सुख तक पहुँच गया। स्वर्ग ने उसे पूरी तरह से अपने आगोश में ले लिया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उसकी असहनीय पीड़ा यहीं समाप्त हो गई। उसके हाथों का उस पर बार-बार स्पर्श, उसके हाथों का उस पर स्पर्श, और उसकी कल्पना का उससे जुड़ना ही उसे सबसे अधिक पीड़ा दे रहा था।
उस दिन वह ठीक से खाना भी नहीं खा पाया। उसकी निगाहें उसी पर टिकी हुई थीं।
क्या उसे भी उतनी ही शर्म महसूस नहीं होनी चाहिए जितनी उसे? अगर उसने अपनी भावनाओं को इस तरह बेकाबू होने दिया होता, तो वह उसे छोड़कर चली जाती... उसका शरीर उसके लिए तड़प रहा था।
वह दोपहर बड़ी बेसब्री से गुजरी।
उस रात, दोनों के सोने से पहले, अन्नपूर्णी ने नित्या को फोन किया।
"निथिया... ये लो... ये दूध पी लो..." निथिया ने अन्नपूर्णी की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा।

"बाला? आंटी बालू क्यों?"
"आज मैं तेल से स्नान करने जा रही हूँ। यह दूध इसीलिए है। इसे पी लो। तुम्हें अच्छी नींद आएगी..." नित्या ने कहा और दूध पी लिया। "क्या, आंटी... क्या दूध का स्वाद दूध जैसा होता है?"
"बस यही है... मैंने इसमें कुछ जड़ी-बूटियों का पाउडर मिलाया है। यह सेहत के लिए अच्छा है। इसे पी लो..." नित्या ने तुरंत उसे लिया और बिना मना किए पी लिया।
अन्नपुरानी बिना पलक झपकाए उसे दूध पीते हुए देखती रही। उसने उसे एक और गिलास दूध भी दिया।
"क्या तुम इसे विमलन को दे दोगी...?" नित्या ने हाँ कहा और उसे खरीदने चली गई।
उसने बिस्तर पर बैठे उस आदमी की ओर अपना गिलास बढ़ाया।
"मेरी चाची ने मुझे ये दिया है, चाचाजी..." विमलनाथन ने बिना मना किए इसे स्वीकार करते हुए कहा और पी लिया।
वह रसोई में गई और जिस गिलास से उसने पानी पिया था उसे ले आई, उसे धोया और फिर कमरे में लौट आई। अन्नपूर्णी अपने कमरे से यह सब देखती हुई मन ही मन मुस्कुराई।
उसने दूध को कुछ कामोत्तेजक जड़ी-बूटियों के साथ उबाला था। अगर यह कारगर रहा तो उसकी मनोकामना पूरी हो जाएगी। उसकी सारी चिंताएँ दूर हो जाएँगी। उसे बस यही चाहिए कि वे दोनों सुखी जीवन व्यतीत करें। विमलनाथन अपने कमरे में लेटा हुआ था, उसे बिल्कुल नींद नहीं आ रही थी, और वह मन ही मन सोच रहा था।
किसी चीज ने उसके शरीर को मरोड़ दिया। उसकी शाही छड़ी एक और लुंगी के अंदर मुड़ी हुई थी, फैली हुई थी और सीधी खड़ी थी।
आज उसे क्या हो गया है? लगता है वह बहुत उत्साहित है।

कुछ देर बाद, करवटें बदलते हुए वह आदमी अपनी क्रिया पूरी नहीं कर सका। वह पलट गया। नित्या उसकी ओर पीठ करके लेटी हुई थी।
अन्नपूर्णा के आने के बाद से वह अक्सर साड़ी पहनने लगी है।
नतीजतन, उसकी नब्ज़ देखना उसकी आँखों के लिए एक सुखद अनुभव है, और उसका पुरुषत्व तुरंत जागृत हो उठता है।
उसने उसे हल्के से लात मारी।
"अरे... आज तुम्हें क्या हो गया है? तुम बहुत ज्यादा नाच रहे हो... मैं नहीं चाहता। शांत हो जाओ। बाद में निराश मत होना..." उसने अपने दोस्त से विनती की।
इससे मेरे मन में यह पूछने का मन हुआ, "देखो, क्या मैं इसे सुन सकता हूँ?"
अगर ऐसा ही चलता रहा तो वो पागल हो जाएगी। मैंने उसे पहले ही तेल लगा दिया है और उसकी दबी हुई भावनाओं को भड़का दिया है। अब उसका पुरुषत्व पहले से कहीं ज़्यादा उभर रहा है।
ओह, मैं इन भावनाओं को कैसे दबाऊं? उसने आह भरी।
उसने सोच-विचार करते हुए उसकी ओर देखा। उस आवाज़ ने उसे आने- जाने का आदेश दिया।
वह अब और स्थिर नहीं रह सका। वह धीरे-धीरे उसके करीब सरक गया।
उसकी खुशबू उसकी नाक में भर गई और उसकी भावनाएँ और भी तीव्र हो गईं। उसने गहरी साँस ली और बिना किसी दर्द के अपना हाथ उसके हाथों के बीच डालने की तीव्र इच्छा अपने चरम पर पहुँच गई।
वह उसके करीब आया और अपनी नाक उसकी गर्दन में दबा दी। उसका शरीर कांप उठा।
वह नीचे झुकी और जैकेट के अंदर से दिख रही उसकी पीठ पर धीरे से चुंबन किया, लेकिन नित्या गहरी नींद में थी और उसे इसका एहसास

नहीं हुआ। अब, जैसे ही विमलनाथन का हाथ उसके बीच से फिसलकर उसके पेट तक पहुँचा, नित्या थोड़ी हिली।
तुरंत ही वह स्थिर खड़ी हो गई और फिर से सो गई। राहत महसूस करते हुए उसने धीरे से उसका पेट पकड़ा। उसकी नाभि ढूंढकर उसने अपनी उंगली उसमें डाली और उसे महसूस किया।
"हम्म..." उसने धीरे से कहा।
विमलनाथन अब और बर्दाश्त नहीं कर सका। वह उसके करीब झुका और अपने पुरुषत्व को उसकी खूबसूरत योनि में घुसाते हुए, उसे किसी लिंग जैसी चीज से रगड़ने लगा, और वह उसके ऊपरी हिस्से पर जा टकराया।
जिस पुरुष ने उसे गले लगाया था, उसने कुछ देर तक अपने गुप्तांग से उसकी योनि पर चित्र बनाया। फिर, जैसे-जैसे भावनाएँ बढ़ती गईं, उसने धीरे-धीरे अपना हाथ ऊपर की ओर बढ़ाया, उसकी योनि के करीब पहुँचने की कोशिश करते हुए। तुरंत ही, विमलनाथन ने अपने प्रयास छोड़ दिए और उसे गले लगाकर वहीं लेट गया।
उसका दिल एक अलग ही ताकत से धड़क रहा था। उसे डर के मारे उसे देखकर राहत मिली थी, लेकिन अब, जैसे ही उसने धीरे-धीरे और सावधानी से अपने हाथ उसके स्तनों पर रखे और उन्हें सहलाया, उसकी भावनाएँ बेकाबू हो गईं।
निथिया ने निगलने की कोशिश की, उसे थोड़ा और कसकर दबाना चाहती थी, और अपनी आँखें खोलने की कोशिश करते हुए फिर से जाग उठी। बिना देर किए, वह लेट गई, अब उसका मुख उसकी ओर था। उसकी दोनों कलशें, जो उसकी माँ से दूर थीं, उसके लिए एक स्पष्ट दावत थीं।
जैकेट के अंदर से बाहर निकलने के लिए तैयार दिख रहे दो ताबूत, जिसका सामने का हिस्सा अच्छी तरह से कटा हुआ था, ने भी उसे पागल कर दिया था।

उसके चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि उसने अंदर कुछ भी नहीं पहना था।
क्या हम बिना बात किए बलात्कार कर सकते हैं? उसे एक विचार आया।
उसने तुरंत उसे अपने सिर पर रख लिया।
उसकी नजरें उसकी सुंदरता पर टिक गईं।
कितने समय से मैं उसे इस तरह नहीं देख रहा था? उसका धैर्य टूट गया और वह उसकी ओर मुड़ गया। उसने लालसा भरी निगाहों से उसके चेहरे को देखा और अपनी नज़रें झुका लीं।
क्या मैं उसे फिर से छू सकता हूँ और देख सकता हूँ? यह इच्छा जागी। लेकिन क्या वह शरमाई? वह सीधा खड़ा हुआ और उसकी आँखों में देखा।
ऐसा लग रहा था जैसे उसे अच्छी नींद आई हो। अब वह क्या कर सकता था? धीरे-धीरे उसने अपना हाथ महिला के स्तनों की ओर बढ़ाया और जैसे ही उसने उसे देखा, उसने उसके स्तनों को सहलाया। उसके सहलाने से उभरे हुए स्तन उसकी जैकेट को दबा रहे थे, इसलिए वह नीचे झुका और अपनी जीभ से उन्हें चाटने लगा।
उस क्षण, उसे उन्हें देखने की तीव्र इच्छा हुई। वह और कुछ सोच ही नहीं पा रहा था। उसने अपने अगले पैर पूरी तरह पीछे खींच लिए और अपनी हथेली उस एक फल पर दबा दी, उसका लिंग तीव्र रूप से उत्तेजित हो गया। उसे अपनी तर्जनी उंगली को ट्विन टावर्स के विस्फोट में डालने और अपने लिंग को उसके छेद में डालने की तीव्र इच्छा हुई। अगर वासना जागृत होती है, तो यह पाप होगा या दया। अगर वह जागती है, तो जागने दो। आज उसे उसे थामना होगा। उसे उस सच्चाई को भुला देना होगा। आज, उस सभा में जहाँ वह एकत्रित है, उसे उसके चरणों में लेट जाना होगा। विमलनाथन ने निर्णय ले लिया है।

इसके जवाब में करांगा ने अपनी कलाश्निकोव राइफलें आगे बढ़ा दीं।
और कुछ सोचे बिना, उसने धीरे से जैकेट के हुक खोलने के लिए हाथ बढ़ाया। लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह उसे अभी चाहता था।
उसने फैसला कर लिया था।
मैंने पहले ही दो हुक निकाल दिए थे। बेर गिरने के लिए तैयार थे। अचानक, वह नीचे झुका और अपने होठों को तोड़े गए इकलौते फल से भर दिया। फिर, जैसे ही उसने अपनी खुली जैकेट का दूसरा हुक खोला, एक फल थैले से गिर गया, क्योंकि वह वजन सहन नहीं कर पाया। उसकी सुंदरता देखकर वह दंग रह गया। विशाल संदूक उसकी कल्पना से कहीं अधिक सुंदर था।
गोल चाँद की तरह, दूध में भीगे हुए कटोरे की तरह... वाह!
उसकी उम्र 36 साल थी, जैसा कि उसे शक था। दूध से लथपथ उस स्तन के बीचोंबीच एक चौथाई इंच का निप्पल था, जो भावनाओं से फूला हुआ था। निप्पल का व्यास पचास पैसे के सिक्के जितना था। उसके चारों ओर बिंदु थे। बस यही उसे पागल करने के लिए काफी था।
उसके मुंह में पानी आ रहा था। उसने धीरे से अपने अंगूठे से निप्पल को सहलाया, और निप्पल और भी कोमल हो गया।
उसने उसे अपने करीब खींचा और अपना सिर नीचे झुकाया। उसने अपनी जीभ से उसकी योनि को छुआ।
"श्श..." नित्या के मुंह से एक कराह निकली।
वह सीधे आगे देख रही थी। मानो नींद में सपना देख रही हो। उसका चेहरा थोड़ा लाल हो गया था।
उसकी आंखों से नज़रें हटाए बिना, उसने उसकी योनि को दबाया। उसने उसे नोचा। उसने निप्पल को खींचा और फिर उसे घुमाया। अब उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। विमलनाथन को हिम्मत मिली।

जैसे ही उसने उसे देखा, उसने पूरे एक निप्पल को अपने मुंह में ले लिया और उसे ऐसे चूसने लगा जैसे कोई बच्चा अपनी मां का दूध पीता है, और नित्या के हाथ ऊपर की ओर मुड़ गए और उसने चादर को पकड़ लिया।
यह समझते हुए कि वह भी भावनात्मक उथल-पुथल की स्थिति में थी, विमलनाथन ने उसके इकलौते फल को चूसना शुरू कर दिया, उसे बाहर खींचकर चूसता रहा, मानो वह फल उसके मुंह में फिसलकर उसके दूध में गिर गया हो।
निथिया के हाथ का दबाव उसके सिर पर और भी बढ़ गया, जिससे विमलनाथन को ऐसा लगा जैसे उस पर हवा का तेज झोंका आ गया हो।
"श... आह..." नित्या हांफते हुए बोली।
उसने उसे चाटा। उसने उसे काटा। उसने उसका स्वाद चखा। उसने अपनी जीभ से एक आकृति बनाई। उसने उसे अपनी उंगलियों से पकड़ा और खींचा। उसने उसे फिर से चूसा। उसने उसे दबाया।
वह आदमी जो आधे घंटे तक बिना रुके एक प्याले पर अपने होंठ रखे हुए था, अब दूसरे प्याले पर ध्यान देने की कोशिश करने लगा, लेकिन उसे निकालना मुश्किल था क्योंकि वह पिचक गया था। उसने जल्दी से बचे हुए हुक हटाए और प्याले को बाहर निकालने के लिए हाथ अंदर डाले, जो फूला हुआ था और फटने को तैयार था। जिस आदमी ने उसे अंगूठे से पकड़ा था, वह पिचक गया और उसे मुंह में लेकर चूसने लगा, जबकि उसका दूसरा हाथ, जो पहले चूस रहा था, दूसरे प्याले के निप्पल पर तेज़ी से घूमने लगा।
इस दोहरे हमले में नित्या के पैर बांध दिए गए थे।
यह देखकर वह और भी क्रोधित हो गया और शराब पीने लगा।
वह उन्माद में उसे खींचता और चूसता रहा, मानो किसी भी तरह उसमें से रस निकालना चाहता हो। बहुत कोशिश करने के बाद भी रस नहीं

निकला। लेकिन उसकी देह वासना से भर उठी। उसने उस हाथ को छोड़ा जो अत्यधिक इच्छा से फल को दबा रहा था, धीरे से नीचे किया और उसके पेट को दबाया। उसने उसकी कमर को चुटकी से दबाया। उसने फिर से उसके पेट को मसला। उसने साड़ी के भीतर प्रवेश किया और उसकी कोमलता को छुआ।
हाथ ने रेशम को महसूस किया। नित्या ने अपनी उंगलियों को उस पर फेरते हुए उसे थोड़ा दबाने की कोशिश की।
"हम्म... आह..." वह हिचकिचाई, एक हाथ से फल पकड़कर उसका पूरा सिरा मुंह में डालकर चूसने लगी, जबकि दूसरे हाथ से वह अपने गुप्तांग को दबा रही थी। तभी, जब उसने अपना हाथ पैंटी में डालने की कोशिश की, तो छोटे-छोटे बाल उसके हाथ में चुभ गए।
उसने अपनी उंगलियों से उसे थोड़ा खींचने की कोशिश की। उसने उसे लपेट लिया। फिर उसने धीरे-धीरे अपनी उंगलियों को नीचे लाने की कोशिश की। यह मुश्किल था।
जिस व्यक्ति ने उसे अस्थायी रूप से बंधन से मुक्त किया था, वह उठा और उसकी साड़ी फेंक दी। नित्या ने अपनी स्कर्ट की गांठ खोलकर उसे फेंक दिया, फिर अपने गुप्तांग को ढकने वाली निकर नीचे खींची और अपना हाथ अंदर डालने की कोशिश की।
उसने अभी तक अपनी आंखें नहीं खोली थीं, लेकिन वह वहीं लेटी हुई थी, उसके हाथों के स्पर्श में खोई हुई थी, सांस लेना भूल गई थी। लेकिन विमलनाथन की उंगलियां लालसा से उस महिला के शरीर की लंबाई और चौड़ाई नाप रही थीं। वह उत्तेजना में अपनी उंगलियों को इधर-उधर घुमा रहा था।
उसने धीरे से अपनी उंगली उसके अंदर डाली, उसकी योनि की नमी टपक रही थी और वह उसके पुरुषत्व का स्वागत करने के लिए तैयार थी।

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और गर्म रेशमी कालीन पर उसका स्वागत करने का आनंद लिया।
खजाने में छिपे कीमती रत्न को खोजने के लिए इधर-उधर उंगलियां घुमाने के बजाय, उसे वह कीमती रत्न अपने धनुष में फंसा हुआ मिला।
न सिर्फ वह, बल्कि वह भी रोमांचित था।
पहले उसने अपनी तर्जनी उंगली से रत्न को रगड़कर चमकाया। फिर उसने अपनी उंगली से उसके चारों ओर एक गोला बनाया। इसके बाद उसने उसे थोड़ा रगड़ा। फिर उसने उसे दो उंगलियों से पकड़कर धीरे- धीरे घुमाया।
दूसरी ओर, नित्या ने अपने शरीर को इस तरह मरोड़ा मानो वह उसकी उंगलियों द्वारा किए गए मजाक से फट पड़ने वाली हो।
उसका चेहरा अत्यधिक आनंद से विकृत हो गया था। उसके होंठ फड़क रहे थे। उसने अपने दांतों से इसे दबाने की कोशिश की, लेकिन यह देखकर वह आदमी अचानक नीचे झुका और उसके दांतों में फंसे होंठों को छुड़ाकर बदले में अपने होंठ आगे किए और अपनी जीभ अंदर डाल दी, नित्या कांप उठी।
उसके होंठ उसके होंठों को खींच रहे थे, एक हाथ उसके इकलौते फल को दबा रहा था और चूस रहा था, दूसरा हाथ रत्न को निचोड़ रहा था और घुमा रहा था।
निथिया, जिसने उस पर इस तरह से तीन तरफा हमला करके उसे प्रताड़ित किया था, ने अपनी जीभ से खींचते और चाटते हुए अपनी मध्य उंगली को उसकी योनि में डालने की कोशिश की।
"म...ह...श..." वह कराह उठी, और विमलनाथन ने उस आवाज़ को आत्मसात कर लिया और निगल लिया।

फिर, जैसे ही नीचे आए व्यक्ति ने अपनी उंगलियां अंदर डालीं और उन्हें पकड़ा, निथिया कांप उठी और उसने अपनी पसंद के फलों में से एक को अपने मुंह में लिया और उसे जोर से काट लिया, जिससे उसकी धड़कन और तेज हो गई।
"आह... श्श..." उसके हाथ की गति बढ़ने पर वह कराह उठी, उसने अपने होंठ काट लिए, सुख और दुख के मिले-जुले दर्द को सहन न कर पाने के कारण। उसने उस फल को, जिसे उसने अभी तक छुआ भी नहीं था, अपने हाथ में लिया और निचोड़ दिया। विमलनाथन ने उसके निचोड़े हुए फल को अपने मुँह में ले लिया। नित्या उसे और कुछ देर तक तड़पा नहीं सकी और फूट-फूटकर रोने लगी।
जैसे ही जंगल की धारा उफान पर आई, जंगल का पानी विमलनाथन के हाथों में भर गया, और भीतरी दीवार फैलती और सिकुड़ती रही, विमलनाथन समझ गई कि वह अपने चरम सुख तक पहुंच गई है।
जैसे ही उसने उसके पैरों को मोड़ा और फैलाया, सुंदर नंदवन उद्यान उसके लिए अपनी आँखें खोल बैठा, और अचानक उसके पैरों के बीच में बैठ गया, उस पराग शहद का स्वाद चखने के लिए उत्सुक था। उस खूबसूरत फूल को देखकर वह दंग रह गया, जो मंद रोशनी में भी बिल्कुल सही लग रहा था।
लाल माणिक्य ने अपनी थोड़ी खुली हुई पंखुड़ियों को इच्छा से खोला और उसे आँख मारी।
विमलनाथन गुस्से में हैं।
निथिया की छाती तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थी जब वह नीचे झुकी और रत्न को चूसने के लिए अपने होंठ सिकोड़े।
उसने उसे लिया, चूसा और फिर अपने दांतों से काट लिया। फिर उसने अपनी जीभ नीचे की और स्त्री की योनि को चाटा। उसने टपकते शहद को चूसा और उसका स्वाद लिया।

जैसे ही उसकी जीभ उसकी नारीत्व की उमंग में प्रवेश कर गई, अमृत टपकते फूलों में प्रवेश कर गई और स्वादिष्ट शहद को चूस लिया, नित्या के पैर कांपने लगे।
उसकी मर्दानगी भी चरम सीमा पर थी। पहले उसे अपनी पीड़ा को शांत करना था। तभी वह उसके साथ आनंद ले सकता था, जब वह अभी भी उत्तेजित अवस्था में थी।
जिस व्यक्ति ने अपना मन बना लिया था, उसने अपनी लुंगी उतार दी, वासना से झुककर उसकी जांघों को चूमा और सहलाया, और धीरे-धीरे उसके गुप्तांग की ओर बढ़ा, जबकि नित्या ने अपनी टांगों को दबाने की कोशिश की।
लेकिन उसके पैरों को अलग रखने के लिए, शंख उसके लिए फैल गया। उसके आकार ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। यह बहुत छोटा होगा। क्या इसमें उसकी आठ इंच की छड़ी समा पाएगी? उसे संदेह होने लगा।
बिना आजमाए फैसला नहीं किया जा सकता। आजमाकर देखो। उसने अपने लिंग को, जो कामुकता से बेकाबू होकर हिल रहा था, अपनी साथी के ठीक बगल में रखा और उसे जोर से दबाया, स्त्रीत्व की दीवार को चीरते हुए अपने मोटे लिंग से अंदर प्रवेश किया।
नित्या को गहरा सदमा लगा।
"आआआआ..." वह चीखी, और विमलनाथन ने उस आवाज़ को अपने होठों से ढककर दबा लिया ताकि उसकी चीख की आवाज़ बाहर न निकल सके। “हम्म... जानलेवा...” सेन्नावन अब उसके होंठ चूसने लगा। उसने उन्हें काटा। उसने उन्हें खींचा। उसने उसके ऊपरी होंठ चबाए।
उसने उसके निचले होंठ को काटा। उसने अपनी जीभ उसकी जीभ के अंदर डाली और उसे सहलाया। उसने उसे थपथपाया। उसने उसकी जीभ खींची और उसे चूसा।

उसी समय, उसके हाथ उसके पूरे शरीर पर घूमने लगे। उन्होंने उसके अंडकोषों को पकड़ा और उन्हें दबाया। फिर उन्हें बाहर निकाला। उन्होंने लिंग के सिरे को खोजा और उसे दबाया। उसी समय, उसका लिंग ज़ोर से हिल रहा था, उसके अंदर प्रवेश कर रहा था और बाहर निकल रहा था।
वह काफी देर तक उसके रस को चूसता रहा, अपनी लार उसके मुंह में उड़ेलता रहा, और फिर अपनी इच्छा को रोक न पाने के कारण उसने उसके होंठों को छोड़ा और उसके गाल को काट लिया। वह नीचे झुका और बिना किसी दर्द के उसके गाल को काटता रहा। उसने अपना चेहरा उसकी गर्दन में दबा दिया और चूसने लगा।
फिर उसने उसका एक स्तन पकड़ा और उसे चूसने लगा। उसी समय उसने अपना लिंग बाहर निकाला और फिर से ज़ोर से अंदर डाला। उसकी योनि ने उसके लिंग को पूरी तरह से जकड़ लिया।
नित्या का दम घुट रहा था। इसके बावजूद, उसके पुरुषत्व ने नित्या के स्त्रीत्व को स्पर्श किया और उसने आग प्रज्वलित करने के लिए संघर्ष किया।
उसने अपना लिंग उसके अंदर डाला और उसे घुमाया। उसने उसे रगड़ा।
उसने उसे अंदर धकेला। उसने उसे बाहर निकाला और फिर बाहर धकेला।
फिर वह उसके अंदर उग्रता से हिलने लगा। उसके होंठ उसे चूम रहे थे, मानो उसके स्तनों को निचोड़ने की कोशिश कर रहे हों। उसने उसके एक स्तन को काटा और चूसा।
एक समय ऐसा आया जब नित्या इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकी।
"आह... माँ... मैं नहीं कर सकती..." वह चीखी, और वह फिर से उसके अंदर प्रवेश कर गया, और नित्या एक बार फिर चरम सुख तक पहुँच गई। अब तक वह जिस चरम सुख तक पहुँची थी, वह पहले वाले से कई गुना अधिक था, और वह गहरी साँसें लेने लगी, लगभग बेहोश होने वाली थी।

विमलनाथन बिना रुके उसके भीतर गति करता रहा, उसके पेट के निचले हिस्से से उमड़ी भावनाओं का सैलाब उसके पुरुषत्व से फूट पड़ा और एक सफेद धारा के रूप में उसके गर्भाशय की दहलीज तक पहुँच गया, जिसके बाद विमलनाथन सो गया और उसकी छाती पर गिर पड़ा।
उसके होठों ने उत्सुकता से उस एक फल को उठाया और उसे चूसना शुरू कर दिया।

(13)

उसने अपनी आँखों के सामने लटके फलों को लालसा भरी निगाहों से देखा, उन्हें सहलाया, उठाया और टांग दिया। उसकी इस अदा से उसका लटकता बगीचा झूम उठा, मानो उसकी सुंदरता में खो गया हो, और एक फल को हल्के से छूने पर वह फिर से झूम उठा।
अभी भी निचोड़ते हुए, उसने उसे ऊपर उठाया और फिर से लटका दिया, फलों का उसका सुंदर ढेर झूल रहा था।
अपनी वासना पर काबू न रख पाने के कारण उसने उन्हें फिर से दबाया और उसकी कमर पकड़ ली।
"मुझे कोई संकेत दो, निथिमा..." उसने कराहते हुए कहा।
विमलनाथन, यह सोचकर कि क्या करें, अपनी कमर हिलाने लगीं।
जैसे ही वह बिस्तर से उठी, अचानक उसका लिंग बाहर आ गया।
इस बारे में, बिल्कुल अपने स्त्रीत्वपूर्ण अंदाज में,
"बैठ जाओ, निथी..." उसने असहजता से कहा। वह उसके लिंग पर बैठ गई, और उसका लिंग आसानी से अंदर चला गया। इससे मिलने वाले आनंद को सहन न कर पाने के कारण उसने उसके नितंबों पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा।
"छोड़ो..." उसने गुस्से से कहा। नित्या ने उसकी इच्छा के अनुसार उसके ऊपर बैठकर उसे वश में कर लिया।
कांपते हुए कबूतरों को देखकर नित्या क्रोध से भर उठी और उसका शरीर कांपने लगा। उसने गाय की तरह अपने स्तनों से दूध निकालना शुरू किया और फिर उन्हें छोड़ दिया।
"म्म... ह... श..." वह कराह उठी, अब उसका पूरा शरीर उसके लिंग को सोख रहा था, उसका लिंग उसकी संवेदनशील योनि में पूरी तरह समा गया था, और नित्या जोर-जोर से सांस लेने लगी।
यह महसूस करते ही उस आदमी ने उसे पलट दिया और अब वह उसके ऊपर था, बिजली की गति से आगे बढ़ रहा था, जिससे नित्या हांफने लगी।

"आआआआम... आह... श्श... आआआआह" वह जोर से चीखी और भड़क उठी, लेकिन विमलनाथन ने अपनी हरकतें नहीं रोकीं।
उसके अंदर अभी भी जोरदार गति से हिलते हुए, विमलनाथन को एक तकिया लेकर उसकी पीठ पर रखने, उसके गुप्तांग को सहारा देने और खुद को जबरदस्ती उसके अंदर धकेलने में एक नया आनंद मिला।
वह अविश्वसनीय गति से फिर से उसके भीतर चला गया, अंततः अपनी सारी ऊर्जा उसमें प्रवाहित कर दी, और फिर वह गहरी नींद में सो गया।
दोनों को ही थकान के कारण दिल की धड़कन तेज महसूस हो रही थी।
वह समय उन दोनों के लिए बहुत सुखद था। उन्हें किसी भी विषय पर बात करने का मन नहीं था।
लेकिन विमलनाथन के हाथ फलों को मसलना बंद नहीं कर रहे थे। न ही उसने अपने हाथों को रोका।
धीरे-धीरे, जैसे-जैसे उसका पुरुषत्व संघर्ष करता रहा और थकता गया, वह उसके स्त्रीत्व से बाहर निकला, जबकि निथिया नींद में अपनी आँखें घुमा रही थी।
ठीक उसी समय, जब वह वापस लेट गई और सो गई, विमलनाथन ने उसे गले लगाया और अपनी आँखें बंद कर लीं।
निथिया ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। विमलनाथन की बाहों में लेटी हुई उसके भीतर कुछ हलचल हुई।
यह किस तरह का पैटर्न है? उलझन में पड़कर उसने विमलनाथन से दूर जाने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे अपनी ओर खींच लिया और कसकर गले लगा लिया, उसकी कमर को हिलाने लगा जिससे वह कांपने लगी। विमलनाथन के पुरुषत्व ने, उसे पीछे से गले लगाते हुए, उसके स्त्रीत्व को भर दिया।

नित्या सदमे में थी। वह कुछ देर तक ठीक से सोच भी नहीं पा रही थी।
उसे शारीरिक सुख का अनुभव मानो सपने जैसा लग रहा था। लेकिन तभी उसे एहसास हुआ कि यह सपना नहीं, बल्कि हकीकत थी। घबराहट में उससे दूर हटने की कोशिश करते हुए, विमलनाथन उसके अंदर प्रवेश कर चुका था और उसे कसकर गले लगा रहा था।
"अंकल... आप क्या कर रहे हैं? मुझे अकेला छोड़ दीजिए..." वह हकलाते हुए बोली।
"श... एक मिनट रुको... मैं यहाँ काम खत्म कर लेता हूँ..." उस आदमी के हाथ ऊपर-नीचे हिलने लगे और वह उसके गुप्तांगों को दबाने लगा। उसने उसके हाथों को हटाने की कोशिश की, लेकिन उसने अपने हाथ नीचे कर लिए, और नित्या कांप उठी जब उसने अपने हाथ शंख में डाले और रत्न को मसलकर निचोड़ने लगा।
"चाचा... नहीं, चाचा... मुझे छोड़ दो... ह... व... म्म...." उसने रोते हुए और भावनात्मक रूप से उत्तेजित होकर कहा।
"थोड़ी देर और रुको... बस, हो गया। इसे बीच में नहीं छोड़ सकते... ठहरो..." उसने कहा, उसकी तलवार अब उसके अंदर ज़ोर से चल रही थी, उसके गर्भ को दबा रही थी, चाहे वह कितना भी मना करे, निथिया भी एक पल से ज़्यादा देर तक मना नहीं कर सकती थी।
वह हिलता रहा, हिलता रहा। करांगा ने भी नित्या की योनि को दबाया और उसमें ऊर्जा का संचय महसूस किया, जिससे उसे आनंद मिला। नित्या खुद को नियंत्रित नहीं कर पाई और उग्र साँस के साथ उत्तेजित हो उठी। विमलनाथन, जो पीछे से उसके भीतर गति कर रहा था, ने उसे नीचे धकेल दिया और वह नरम पड़ गई और तेज़ी से हिलने लगी। अंत में, जब उसने अपनी जीवन शक्ति उसमें समाहित कर दी, तो नित्या

ने अपनी सारी शक्ति इकट्ठा की और उसे धक्का देकर बिस्तर से उठ खड़ी हुई।
तभी उसे एहसास हुआ कि उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं हैं। वह चौंक गई।
उसने ज़मीन पर पड़ी अपनी साड़ी को लपेटा, अपने शरीर पर लपेटा और आँखों में आँसू लिए विमलनाथन की ओर देखा। विमलनाथन भी उसे देख रहा था।
उसने उसके साथ तीन बार संबंध बनाए। फिर भी वह अपनी वासना को काबू में नहीं रख सका।
"नितिमा..." उसने उत्सुकता से पुकारा।
"क्या मुझे एक और ड्रिंक मिल सकती है?" उसने पूछा, उसका नशा उतर रहा था। उसे अभी भी पूरी तरह समझ नहीं आ रहा था कि वहाँ क्या हो रहा है।
"चाचा... आपने क्या किया?" विमलनाथन ने गुस्से से और रोते हुए पूछा, और उलझन में जाग उठी।
नित्या की आंखें चौड़ी हो गईं जब उसने उस आदमी को देखा जिसने अपने कपड़े उतार दिए थे और अगले खेल के लिए तैयार होकर सीधा खड़ा हो गया था। उसने तुरंत नज़रें हटा लीं।
उसने उसे दया भरी नजरों से देखा, मानो कोई बच्चा जिसका खिलौना चोरी हो गया हो।
"श्...श्...सरिटी...मुझे तुम्हारी ज़रूरत है...प्लीज़..." उसने कहा, और वह उसे घूरती रही।
उसे अभी भी ठीक से पता नहीं था कि क्या हुआ था। लेकिन पिघले हुए शरीर ने उसे साफ-साफ बता दिया कि क्या हुआ था। और वह भी, नारीत्व की कड़वाहट, जो उसे बता रही थी कि वे कितनी दूर तक चले गए थे, ने नित्या को रुला दिया।

"आपने ऐसा क्यों किया, चाचा?" वह रोते हुए बोली, और विमलनाथन ने हैरानी से उसकी ओर देखा।
"मैंने क्या किया... हम पति-पत्नी हैं। इसमें क्या गलत है? चलो एक और बार संबंध बनाते हैं। पार्टी मेरा साथी है। वो तुम्हें बहुत चाहता है..." निथिया ने अपने दोस्त को घृणा से देखा, जिसका चेहरा लाल हो गया था और नसें फूली हुई थीं।
“तुम्हें पता है मैं सत्यन से प्यार करती हूँ। तुमने कहा था कि तुम मेरे और सत्यन के साथ कुछ करोगे। अगर ऐसा है, तो क्या तुम खुद कर सकते हो?” यह पूछते हुए वह फूट-फूटकर रोने लगी। वह भी गुस्से में आ गया।
"बस करो, निथी... मुझे तुम्हें छूने में बहुत मज़ा आया। हमने दो- तीन बार ऐसा किया है। मैं छह बार चरम सुख तक पहुँचा हूँ। मुझे तब तो खूब आनंद आया होगा। अब क्या बात है..." उसने कहा और उसे वो नेल पेंटिंग दिखाई जो निथी ने उसके चरम सुख के दौरान उसके शरीर पर बनाई थीं, और अपने कंधे पर बने दाँतों के निशान की ओर इशारा करते हुए बोला, "देखो ये... इस पर दांत लगे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि अब तुम्हारे मन में मेरे लिए कोई चाहत नहीं बची..." उसने गुस्से से कहा, और निथी हिचकिचाई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे। "मैं सो रही थी, चाचा जी। मुझे कुछ समझ नहीं आया कि क्या हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे सब कुछ सपने में हो रहा हो।" यह कहते हुए विमलनाथन चिढ़ गए।
"तो क्या हुआ... क्या मुझे तुम्हें छूने का अधिकार नहीं है?" "ऐसे मत बोलो, अंकल... मुझे छूने का हक सिर्फ सत्या को है..." यह कहते ही विमलथन गुस्से से भड़क उठी।
"बस करो... वो तुम्हारा क्या है? वो तुमसे प्यार करता है... तुमने गलती की है। उसका मेरे साथ रिश्ता खत्म हो चुका है। अब मैंने

तुमसे शादी की है। थंदानी, तुम पर मेरा पूरा हक है। क्या वो तुम्हारे लिए मुझसे ज्यादा महत्वपूर्ण है...?"
"अंकल... मैं सत्या से प्यार करती हूँ। आप भी यह जानते हैं... मैं उसके सिवा किसी और से प्यार नहीं कर सकती..."
"तो फिर मुझे अंदर क्यों नहीं आने दे रही हो? तुम्हें चरम सुख क्यों मिला? जब मैंने अंदर प्रवेश किया और बाहर निकाला तो अच्छा लगा। मैं काफी देर से तुम्हारे स्तनों को काट और चूस रहा हूँ। क्या तुम्हें पता नहीं कि यह मैं ही हूँ?" वह रो पड़ी, जब उसने गुस्से से उससे ये सवाल पूछे तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।
अब तक उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उनके बीच क्या हुआ था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे हुआ। सब कुछ इतना नीरस था। विमलनाथन का आलिंगन और स्पर्श मानो सपने जैसा लग रहा था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सब सच में हुआ है। और जब उसे यकीन हो गया, तो अब तक उसके मन में बसा गुस्सा अचानक गायब हो गया।
एक गहरी सांस लेकर और खुद को संभालते हुए, वह उसके पास पहुंचा, लेकिन वह डर के मारे दो कदम पीछे हट गई।
यह देखकर उसका चेहरा पीला पड़ गया।
"सच में, सारिथी... मैंने तुम्हें इसलिए छुआ क्योंकि तुम मेरी हो। समझो। मैं तुम्हें चाहता हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, निथी... मैं तुम्हें इस सच्चाई के आगे नहीं छोड़ सकता... क्योंकि... मैं... मैं तुम्हारा आदी हो चुका हूँ। तुम्हारी खूबसूरती, तुम्हारा रोना, तुम्हारा बचकानापन, सब कुछ मुझे मदहोश कर देता है। मैं तुम्हें चाहता हूँ, निथी... मैं तुम्हें इतनी आसानी से किसी को नहीं दे सकता..." उसने उसके करीब आते हुए कहा, लेकिन वह डर से उसे देखती रही।

"की... मेरे पास मत आओ, अंकल... मैं आपको बर्दाश्त नहीं कर सकती..." वह हिचकिचाई, और विमलनाथन तुरंत रुक गया।
"अरे, हमारी शादी को आठ महीने हो गए हैं। क्या मैंने इन महीनों में तुम्हारे साथ कुछ गलत किया है? नहीं... लेकिन... अब जब तुम मेरे साथ हो, तो मैं तुमसे दूर नहीं रह सकता। तुम मेरी हो... मुझे तुम्हें छूने का पूरा अधिकार है..."
"अंकल... आपको तो पता ही है कि सत्या और मैं कैसे थे। मैंने किसी और के साथ उसका बच्चा जन्म दिया। मैं कोई और कैसे हो सकती थी... यह गलत है अंकल..." वह रोते हुए बोली।
रो मत... मैंने तुम्हें अनजाने में गले लगाया था। मैं समझती हूँ। पहले तो मुझे लगा था कि मैं उस लड़के को अपना दोस्त बनाना चाहती हूँ। उस समय मेरे मन में यही था। मुझे नहीं लगता था कि मैं उसे किसी और के लिए छोड़ सकती हूँ। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए, तुम जहाँ हो वहाँ पहुँच गई। मैं तुम्हें यूँ ही नहीं छोड़ सकती...
"मैं... अपने प्यार को भी नहीं त्याग सकती..." वह रोते हुए बोली। "नास्तिकों जैसी बातें मत करो, नीति... अगर तुमने और उस लड़के ने कोई गलती की है, तो उस गलती की वजह सिर्फ़ तुम्हारी उम्र है। तुमने अपनी जवानी की इच्छाओं को पूरा करने के लिए एक-दूसरे का इस्तेमाल किया। यह एक गलती थी। इसे यूँ ही प्यार नहीं कह सकते... अगर कह भी दो, तो क्या कोई इंसान दो लोगों से प्यार नहीं कर सकता? मैंने इसे महसूस किया है, नीति... मैं पहले सरिता से प्यार करता था। अब तुमसे प्यार करता हूँ। सरिता से प्यार करने के बाद मेरी शादी हुई। शादी के बाद तुमसे प्यार करता हूँ। नीति इन आठ महीनों में धीरे-धीरे मेरे करीब आती जा रही है। तुम्हारे बिना

मेरा जीना मुश्किल है... प्लीज़ समझने की कोशिश करो..." नीति ने उसकी विनती सुनकर सिर हिलाकर इनकार कर दिया।
"नहीं, चाचाजी... मैं सत्यन को नहीं भूल सकती।" वह फिर वहीं खड़ी हो गई, और उनका गुस्सा बेकाबू हो गया।
क्रोध का प्रकोप चरम पर है।
"बस करो... एक ही बात बार-बार मत दोहराओ... मैं तीन दिन से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ। अगर तुम मेरे बच्चे को जन्म देतीं तो क्या करतीं? तब भी तुम जाकर यही कहतीं कि तुम्हें सत्या चाहिए..." नित्या यह सुनकर स्तब्ध रह गई।
उसने इस बारे में सोचा ही नहीं। उसने विमलनाथन को हैरानी से देखा।
"मुझे बताओ... तुमने क्या किया? क्या उसने इस बच्चे को मार डाला और उसे अपने साथ ले गया...?" उसने स्तब्ध होकर पूछा।
उसने वहाँ बिना जवाब दिए खड़ी महिला को घूरकर देखा।
"अगर तुम्हें वो सत्ययान चाहिए, तो कल उसके पास जाओ... मुझ पर चिल्लाओ मत..." गुस्से में भरी वह महिला बाथरूम में घुस गई, लेकिन वह झट से वहीं सीट पर बैठ गई, उसके पैर कांप रहे थे। वह फूट-फूटकर रोने लगी।
"निथी... ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम्हारा पति भी मेरे साथ अपना शरीर साझा कर सकता है? तो क्या तुम्हारा मेरे लिए सारा प्यार झूठ है?" सत्यन के बारे में सोचकर निथी दुखी हो गई, जो उससे इतनी दयनीय हालत में यह पूछने आया था। वह फूट-फूटकर रोने लगी।
उसे यकीन नहीं हो रहा था कि विमलनाथन के स्पर्श से उसे कितना आनंद मिल रहा था, वह कितनी चरम सुख की अनुभूति कर रही थी और उसका शरीर और अधिक पाने के लिए कितना तरस रहा था। उसने सोचा था कि सत्यन के अलावा कोई और उसकी स्त्रीत्व को इतना रोमांचित नहीं

कर सकता। लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि विमलनाथन भी ऐसा कर सकता है, तो उसे अपनी कमजोरी पर गुस्सा आया।
वह इस बात से भी बेहद परेशान थी कि उसने सत्यानी के साथ विश्वासघात किया है।
अभी भी हम कलश के नाजुक किनारे पर खड़े हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि विमलनाथन को वहाँ थोड़ी देर और छोड़ दिया गया हो? निथिया एक और विचार से चौंक उठी।
"चुप रहो... ये किस तरह की सोच है?" विमलनाथन बाथरूम से बाहर आया, उसका शरीर जकड़ा हुआ था और वह असमंजस में वहीं खड़ा था।
उसने भय भरी नजरों से उसकी ओर देखा, और विमलनाथन उसकी ओर देखे बिना ही कमरे से बाहर चला गया।
"अह... आप कहाँ जा रहे हैं, अंकल?" निथिया ने होश खोते हुए पूछा। "मैं कहाँ चली गई थी? तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो...? अपने काम से मतलब रखो..." उसके जाते ही निथ्या की आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं।
उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि उसे कैसा महसूस करना चाहिए। एक तरफ उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, वो उसे पाना चाहती थी। दूसरी तरफ सत्यन के बारे में सोचकर उसे अपराधबोध हो रहा था। नित्या वहीं खड़ी रही, दोनों भावनाओं के बीच फंसी हुई।

(14)

सत्या के बाहर आते ही उसका गुस्सा बेकाबू हो गया। उसने सोचा, "ये कैसी जिंदगी है?" अब भी, भले ही वह उससे नाराज़ था, लेकिन उसे अपने पुरुषत्व की उस तीव्र इच्छा से चिढ़ हो रही थी जो उसे वापस पाने के लिए बेताब थी।
यह स्पष्ट है कि वह उसे नहीं चाहती। तो फिर मुझे उसके प्रति चाहत के बारे में क्यों सोचना चाहिए? वह गुस्सा हो गया।
उसे भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। अचानक, उसकी नसें भावनाओं से भर उठीं। खुद पर काबू न रख पाने के कारण, वह नित्या के पास गया।
उसने बिना किसी झिझक के, बिना मना किए, उसके आलिंगन को स्वीकार कर लिया। अब, जितना हो सके उसका आनंद लेने के बाद, वह धोखे और घटिया व्यवहार के बारे में बेतहाशा बड़बड़ा रही है।
इन आठ महीनों में उसका मन बदल गया है। लेकिन उसका मन अभी भी नहीं बदला है और वह उसी पुरानी उलझन में फंसी हुई है। वह क्या कर सकती है?
थककर विमलनाथन दूसरे कमरे में गए और लेट गए।
अगले दिन, अन्नपूर्णी ने नित्या को तेवर चढ़ाकर देखा। उसका शरीर थका हुआ और सुस्त था, चेहरा लाल था, और उसे इस बात की राहत थी कि वह जिस उद्देश्य से आई थी, वह पूरा हो गया था। उसे विश्वास हो गया था कि अब से उनका जीवन बेहतर होगा।
एक सप्ताह बीत गया। इस सप्ताह के दौरान, विमलनाथन ने निथिया से बात करने से पूरी तरह परहेज किया। केवल जब अन्नपूर्णी आसपास होती थी, तभी वह अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं दिखाता था। जब वह अकेला होता था, तो वह उसकी ओर मुड़कर भी नहीं देखता था।

अपनी माँ को पता चलने के डर से वह सुबह जल्दी उठ जाता, अपना शारीरिक प्रशिक्षण पूरा करता, नहाता और फिर सात बजे काम पर निकल जाता। नित्या के उठने पर वह घर पर नहीं होता था। काम से लौटने पर वह देर से घर आता था।
नित्या को समझ नहीं आ रहा था कि वह इतनी देर से घर क्यों आ रहा है। उसे पता था कि वह उससे बचने के लिए ऐसा कर रहा है। लेकिन उसकी यह बेरुखी उसे अभी भी परेशान कर रही थी।
शादी के बाद से इन सभी महीनों में, उसने कभी इस तरह मुंह नहीं मोड़ा था। जब भी वह उसे देखता, वह उसे प्यार से देखता और मुस्कुराता। वह उससे किसी बात पर चर्चा करता। वह उससे सवाल पूछता। कम से कम वह उसकी पढ़ाई के बारे में तो बात करता। लेकिन एक हफ्ते तक उससे एक भी सवाल न सुनने के बाद, नित्या को ऐसा लगा जैसे उसने कुछ बहुत बड़ा खो दिया हो।
उस दिन भी ऐसा ही हुआ। जब तक विमलनाथन सुबह जल्दी उठा, नहाया और कपड़े बदले, तब तक निथिया जाग चुकी थी।
जब उसने उसे काम पर जाने के लिए तैयार होते देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गई।
"अंकल... आज रविवार है..." उसने चेतावनी भरे लहजे में उससे कहा। बिना जवाब दिए, उसने अपना बैग उठाया और बिस्तर से उठकर उसके सामने खड़ा हो गया।
"अंकल... आप मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं? आपको पता है कि आपने मुझसे एक हफ्ते से ठीक से बात भी नहीं की है..." उसने धीमी आवाज में कहा, और वह उसे उदासीनता से देखता रहा।
"यही तो तुम चाहती हो... तो फिर शिकायत क्यों कर रही हो..." उसने गुस्से से पूछा, और निथिया ने विमलनाथन को घूर कर देखा।

"मैंने ऐसा कब कहा... प्लीज़, अंकल... ऐसा मत कीजिए। यह बहुत मुश्किल है..." उसने आँसुओं के बीच कहा, और विमलनाथन ने उसे खाली निगाहों से देखा।
"बस करो ये नाटक... रुक जाओ। एनी यही कह रही है, बताओ क्या तुम अब भी सत्यन के बारे में सोच रही हो? फिर अगर मैं तुमसे बात करूँ तो मेरा क्या होगा? बस कुछ ही महीने बचे हैं। रुको। मैं तुम्हें उस सत्यन के पास भेज दूँगा और कहूँगा, 'कुम्पी तुम्हारे लिए भी, कुम्पी तुम्हारे लिए भी।' उसके बाद तुम उस सत्यन के साथ ही रहना।" उसने घृणा से कहा, और नित्या अपनी झिझक को नज़रअंदाज़ करते हुए रोती हुई वहाँ से चली गई।
वह विमलनाथन की नफरत और उदासीनता को सहन नहीं कर पा रही थी। उसे यह भी नहीं पता था कि उसे कैसे शांत किया जाए।
अन्नपूर्णा की शुरुआत उसी सुबह हुई थी।
"तुम्हारे पति को क्या हुआ, एम्मा? वो अब घर पर नहीं होंगे, है ना?" उसने सोचते हुए अपनी भौंहें सिकोड़ीं, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहे।
"वो आया था... आंटी... उसने कहा कि दफ्तर में बहुत काम है। बस इतना ही... वो सुबह उठते ही चला गया..." अन्नपूर्णी ने आह भरी।
"मुझे आज काम पर जाना है। अगर मैं पहले आ जाती, तो वो लगातार हथौड़ा चला रहा होता। अब अगर वो काम पर चला गया है, तो क्या? वो इस तरह पैसे कमाने के लिए क्यों भाग-दौड़ कर रहा है, अपने परिवार की देखभाल क्यों नहीं कर रहा?" अन्नपूर्णी गुस्से में बोली। उस रात, विमलनाथन के आने के बाद, उसने उसे बांह से पकड़ लिया। "क्यों... तुम अपनी सास से ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गई हो क्योंकि तुम्हें काम करना है। मुझे यहाँ आए एक हफ़्ता हो गया है। तुमने ये सारे दिन उन्हीं के साथ बिताए हैं, और मैंने उन्हें देखा तक

नहीं। आज तुम घर पर नहीं हो, बल्कि काम पर गई हो, इसका क्या मतलब है?" उसने गुस्से से पूछा, और विमलनाथन ने अपनी माँ को ऊब से देखा।
"माँ... साल खत्म हो रहा है। क्या आपको बहुत सारे अकाउंटिंग केस देखने पड़ते हैं... अगर वे सब ऐसे ही पड़े रहेंगे, तो उन्हें कौन देखेगा?" ऊबते हुए।
"ठीक है... मैं नहाकर वापस आती हूँ। कुछ खाना ले आओ..." जाते हुए अपने बेटे को देखकर अन्नपूर्णी ने उसे घूरकर देखा।
"अरे, मैंने तुम्हें गांठ क्यों बांधी? तुम्हें यह काम करना ही होगा। उससे मत पूछो, मुझसे पूछो..." अन्नपूर्णी के शिकायत करने के बावजूद, नित्या मदद करने आ गई।
"तुम उसे इस तरह क्यों डांट रही हो? वह अपने पापों से तंग आ चुका है और गिर गया है। इसे फेंक दो, मैं ले जाती हूँ..." जैसे ही वह खाना ले जाने वाली थी, विमलनाथन वहाँ पहुँच चुकी थी।
वह कुछ बोल नहीं सका क्योंकि उसकी माँ उसके ठीक बगल में थी। जब वह खाने की मेज पर पहुँचा, तो नित्या ने अनिच्छा से उसे खाना परोसा, और वह बिना कुछ बोले खाने लगा, उसकी नज़रें उसकी छाती पर लटकती पीली रस्सी से बंधी थाली पर टिकी हुई थीं। यह देखकर उस आदमी ने उपहासपूर्वक हँस दिया।
उसके गले में केवल वही थाली लटकी हुई थी जिसे उसने बांध रखा था। लेकिन वह इतनी भारी थी कि उसे उठाना मुश्किल था। वह निराशा में सोचने लगा, और जब उसने खाना खत्म कर लिया और उठ खड़ा हुआ, "क्यों... मुझे आपसे थोड़ी देर बात करनी है..." अन्नपूर्णा अंदर आई।
क्या मैं आपको बताऊँ...?
आपको कल काम पर जाने की जरूरत नहीं है...

"क्या?"
"ये तो कुछ भी नहीं है... तुम्हारी शादी को आठ महीने हो गए हैं। तुमने अभी तक ताबीज भी नहीं तोड़ा है। घर जाने से पहले मैं तुम्हारे लिए ताबीज तोड़ना चाहता हूँ। कल का दिन अच्छा है। तो मुझे लगता है मैं कल कर सकता हूँ..."
"इसका क्या फायदा... तुम खुद देख लो। मुझे काम करना है..." उसने अपनी बात पूरी नहीं की, और अन्नपूर्णी गुस्से से उठ खड़ी हुई। "अरे... शर्माओ मत। मैं तुमसे बाद में बात करूँगा... मैं यहाँ दो हफ़्ते से हूँ। मुझे अभी तक बुढ़िया के साथ कोई परेशानी नहीं दिखी है। तुम हर सुबह काम पर जाते हो और शाम को घर आते हो... अगर मुझसे पूछो, तो काम.... तुम क्या सोच रहे हो..." उस व्यक्ति ने गुस्से से पूछा।
"देखो... तुम कल कहीं नहीं जा रही हो। घर पर ही रहो। मैंने पड़ोस की सुमंगली लड़कियों को बुलाया है। आओ। चुप रहो और मेरी बात मानो... बस इतना ही..." उसने दृढ़ता से कहा, लेकिन वह अपनी माँ से और बहस नहीं कर सका।
अगले दिन थाली तोड़ने की रस्म अच्छे से संपन्न हुई और विमलनाथन ने सुमंगलिप्पन द्वारा दी गई सोने की थाली नितिया के गले में डाल दी। लेकिन उनके चेहरे पर तनाव था। वहीं दूसरी ओर, नितिया ने शांत भाव से उनके द्वारा बांधी गई थाली स्वीकार कर ली।
"लो भाई, इस केसर को थाली में रख दो। बस इसे बिछुआ और चावल में डाल दो।" विमलनाथन ने बिना इनकार किए कहा।
जब सब कुछ समाप्त हो गया और सबने एक-दूसरे को अलविदा कह दिया, तो अन्नपूर्णी ने अपने कपड़े निकालकर एक डिब्बे में रखना शुरू कर दिया। यह देखकर नित्या चौंक गई।

उसका एकमात्र सहारा अन्नपूर्णी है। अगर वह भी चला गया, तो उसके पास बात करने के लिए कोई नहीं बचेगा। विमलनाथन अभी भी गुस्से में है और "उर" कहता है। ऐसे में वह किससे बात करेगी? कम से कम कॉलेज में उसका समय तो कट जाएगा। लेकिन अब इसकी भी कोई संभावना नहीं है।
नित्या अनिच्छा से अन्नपूर्णानी के कमरे में आई।
"तुम्हें आंटी के गांव क्यों जाना है?" अन्नपूर्णी ने मुस्कुराते हुए पूछा।
“मैं यहाँ नहीं रह सकती... गाँव में बगीचे की देखभाल कौन करेगा? इतना ही नहीं, मैं यहाँ रह भी नहीं पाऊँगी। दो हफ़्तों से मुझ पर हमला हो रहा है।” अन्नपूर्णी ने खड़े होकर अपनी बहू की ओर देखते हुए कहा। फिर उन्होंने उसके हाथ पकड़कर उसे पलंग पर बिठा दिया। "निथिमा... ज़िंदगी में सब कुछ वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते हैं। लेकिन ज़िंदगी को पूरी तरह जीना और भरपूर आनंद लेना ही समझदारी है। जो हमारे पास नहीं है उसकी लालसा करने के बजाय, जो हमारे पास है उसके बारे में सोचते हुए जीना ही खुशी देगा। तुम मेरी बात समझ नहीं रही हो..." उन्होंने अपनी बहू को कसकर गले लगाते हुए कहा और फिर उसे छोड़ दिया।
“मैं तुमसे एक बात पूछ रहा हूँ। सोने से पहले मैं अपने पोते या पोती को देखना चाहता हूँ। इसके लिए तुम्हें उनका ख्याल रखना होगा और उनके साथ उचित व्यवहार करना होगा। अगर वे ऐसे होते, तो ऐसे ही होते। लेकिन अगर तुम उन्हें पहले ही खत्म कर दोगी, तो वे यहाँ बेसुध पड़े होंगे...” उन्होंने अपनी बहू को ध्यान से देखते हुए कहा।
"तुम मेरी बात समझ नहीं रही हो। चाहे वो कितना भी गुस्सा हो, बस मान जाओ... तभी वो मानेगा... अगर तुम दोनों शिकायत करतीं, तो कोई

रास्ता नहीं बचता..." नित्या ने हैरानी से उसकी तरफ देखा कि वो अब ऐसा क्यों कह रहा है। यह देखकर वो हंस पड़ी।
"तुम्हें क्या लगता है मैं तुम्हें ये सब अभी क्यों बता रही हूँ... मुझे पता है कि तुम दोनों के बीच अभी कुछ भी ठीक नहीं है..." “आंटी…”
"तुम दूसरों को बेवकूफ बना सकते हो। मुझे नहीं... मेरे अनुभव को भी नहीं। जिस दिन मैं आया, मुझे एहसास हुआ कि तुम दोनों के बीच कुछ भी ठीक नहीं है। इसीलिए मैंने तुम पर किसी तरह का जादू किया। फिर मैंने तुम्हारे द्वारा पिए गए दूध में कामोत्तेजक जड़ी बूटी मिला दी..." यह सुनकर निथिया स्तब्ध रह गई।
उसने अन्ना से यही कहा, अन्ना मना नहीं कर सकी। माँ, किस बात का इंतज़ार कर रही हो? नित्या ने यह देखा और उसे गुस्सा आ गया।
लेकिन अन्नापूर्णी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
देखो... तुम्हें एक बार प्यार हुआ था। यह सही नहीं था। अब तुम्हारी अपनी एक ज़िंदगी है। अब से यही तुम्हारी ज़िंदगी है। इस जीवन के बाद बीते हुए जीवन के बारे में सोचना बहुत गलत है।
अगर ऐसा हुआ तो न सिर्फ तुम, बल्कि तुम्हारे आस-पास के लोग भी प्रभावित होंगे। सच तो अतीत है। अगर तुम अभी इसके बारे में सोचोगी भी तो उस समय में वापस नहीं जा सकती। तुम्हारा पति तुम्हारा वर्तमान है, तुम्हारा भविष्य है, तुम्हारा सब कुछ है। वही है जो अंत तक तुम्हारे साथ रहेगा।
"किसी चाची के लिए अपने प्रियजन को इतनी शिद्दत से भूल जाना इतना आसान क्यों होता है?" निथिया रोते हुए बोली।
“मैं जानती हूँ कि पहला प्यार कभी भुलाया नहीं जा सकता। लेकिन अगर तुम इसे पकड़े रहोगी, तो ज़िंदगी नरक बन जाएगी। अगर तुम सिर्फ़ अपने प्यार से ही शादी करोगी, तो आज दुनिया में कोई शादी

नहीं करेगा। तुम्हारी किस्मत में यही लिखा है कि तुम्हें वो लड़का नहीं मिलेगा। तुम्हारे माता-पिता ने इसमें अहम भूमिका निभाई है। बस इतना ही। समझ लो। ज़िंदगी हमेशा के लिए नहीं है। किसी को नहीं पता कि किसी के साथ कब क्या होगा। सबसे समझदारी की बात यही है कि जो ज़िंदगी तुम्हारे पास है उसका आनंद लो और खुश रहो…” सलाह देने वाला व्यक्ति अगले दिन गाँव चला गया।
जब तक अन्नपूर्णी वहाँ थी, घर काफी अच्छा था, लेकिन उसके जाने के बाद, घर में एक सन्नाटा छा गया, मानो वह पुराना हो गया हो। जिस दिन वह गई, उसी दिन नित्या ने अपना सामान वापस अपने कमरे में रख लिया। विमलनाथन ने उसे नहीं रोका।

(15)

लगता है, और उसके स्त्रीत्व में एक अजीब सी बेचैनी महसूस होती है।
शायद ये पीली रस्सी का जादू नहीं है, लेकिन मुझे नहीं पता कि उसने एनी को क्यों छुआ। एक वासना से भरी औरत उसके लिए गिड़गिड़ाती है।
जैसे एक बार किसी चीज़ का स्वाद मिल जाए तो मन उसी के पीछे भागता है, वैसे ही उस दिन विमलनाथन के स्पर्श से, वह स्त्री जो उस स्वाद को फिर से पाने की तीव्र इच्छा रखती थी, उसके पास लौट आई। भला वह क्या पाप करती? उसे यौवन का स्वाद चखना ही था।
उस सुबह जब निथिया जल्दी उठी, तो उसने सामने वाले कमरे में देखा कि क्या विमलनाथन जाग गया है। उसे वह नहीं दिखा।
पिछले दो महीनों से वह अनजाने में ही उसे ढूंढ रही है। हर सुबह, जब वह जल्दी उठता है, तो टहलने जाता है और खबरें पढ़ता है। फिर नहाकर काम पर चला जाता है। यही उसकी दिनचर्या है। यह जानते हुए भी, वह भी सुबह उठकर उसे बड़ी-बड़ी आँखों से देखती है। पर वह इस बात पर ध्यान नहीं देता।
लेकिन आज हम उसे सामने वाले कमरे में नहीं देखेंगे।
इस अंकल को क्या हो गया है? वो तो आमतौर पर समय पर आते हैं, है ना? शायद बारिश हो रही है, इसलिए वो काम पर नहीं गए? अपनी कॉफी को कुछ देर सोचने के बाद पीते हुए, वह नाश्ता बनाने के लिए रसोई में चली गई।
एनी के पास कोई कामगार नहीं आया है। यही समस्या है। अगर बारिश ऐसे ही होती रही तो कोई नहीं आएगा। इसकी वजह चेतावनी है। पिछले दो दिनों से भारी बारिश हो रही है। वह इन दो दिनों से खाना बना रही है। सौभाग्य से, विमलनाथन बिना कुछ कहे खाना खाकर काम पर चली जाती है।

यही बात उसे खुश करती है।
सुबह का नाश्ता खत्म करने के बाद, मैंने विमलनाथन को अंदर बुलाने के लिए उसके कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन अंदर से कोई आवाज नहीं आई।
"अंकल... खाना तैयार है..." क्या वो सिर्फ बुलाने पर ही जवाब देने वाले थे? उसने दोबारा दरवाजा खटखटाया और धीरे से खोला, तो देखा कि विमलनाथन बिस्तर पर सो रहे थे।
"अंकल..." उसने धीरे से पुकारा, लेकिन वह बेसुध पड़े रहे। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
"चाचा... आप..." अब उसमें थोड़ी हलचल हुई।
"मम्मी... खाना तैयार है..." उसने कहा।
"चुप रहो... इसे मेज पर रख दो और जाओ... मैं इसे बाद में खा लूंगी..." कराहते हुए जवाब आया। नित्या चौंक गई।
वह इतनी कमजोर आवाज में क्यों बोल रहा है? क्या वह अस्वस्थ है? उसका दिल तेजी से धड़क रहा था, उसने उसे कसकर गले लगा लिया।
"माँ..." उसने उसके चेहरे की ओर देखते हुए पुकारा। उसकी आँखें बंद थीं। उसे देखते ही वह समझ गई कि कुछ गड़बड़ है।
जब मैंने संदेह भरी नजरों से उसके माथे को छुआ तो उसका बुखार और भी बढ़ गया।
“ओह... अंकल... क्या आपको बुखार है?” उसने घबराकर पूछा और उन्हें सीधा लिटाने की कोशिश की, लेकिन विमलनाथन बिना किसी परेशानी के वापस लेट गए। उसने अपना हाथ उनकी गर्दन पर रखा और गर्मी से उसे कंपकंपी महसूस हुई।
"अंकल... मुझे तबीयत खराब लग रही है... चलिए डॉक्टर को दिखाते हैं..." उसने उसका हाथ थपथपाते हुए कहा।

"शश... मुझे क्यों जगा रहे हो? मुझे सोना है..." उसने कराहते हुए अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं।
"चाचा जी... इधर देखिए... इधर आइए, चाचा जी... चलिए डॉक्टर के पास चलते हैं..." उसने पुकारा, लेकिन उन्होंने मना कर दिया।
"इस बारिश में डॉक्टर कौन बनेगा? इसे छोड़ दो। दो दिन में सब ठीक हो जाएगा..." उसने कहा, लेकिन वह इतनी आसानी से चुप नहीं रह सकी।
वह भागी, अपना मोबाइल फोन उठाया और अन्नपूर्णी को फोन किया।
शहर में भी अच्छी बारिश हुई।
"आंटी... आपका बेटा ठीक नहीं है... उसे बुखार है। मुझे क्या करना चाहिए?" अन्नपूर्णी ने चिंता से पूछा, और वह थोड़ी घबरा भी गई थी।
“कभी-कभी मौसम उसका साथ नहीं देता। शायद इसीलिए उसे बुखार है। देखो... मुझे वो दवा दो जो मैंने तुम्हें बनाने को कहा था... बुखार ठीक हो जाएगा।” अन्नपूर्णी ने कहा और तुरंत बताए अनुसार दवा तैयार की, और एक थाली में इटैलियन व्यंजन लेकर विमलनाथन के कमरे में चली गई।
वह कंबल के नीचे कांप रहा था।
"चाचा... इधर आइए, चाचा... ये काढ़ा पीजिए..." उसने उन्हें जगाया, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।
नहीं... मुझे थोड़ी देर सोने दो...
"प्लीज़, अंकल... दो निवाले खा लीजिए और सो जाइए... इधर आइए, अंकल..." उसने कहा और दवा और खाने की थाली मेज पर रख दी, फिर कंबल उसके ऊपर डालकर उसे उठाया। वह नग्न अवस्था में लेटा हुआ था।
कंबल को थोड़ा नीचे करते ही उसका गुप्तांग दिखाई देने लगा। उसने जल्दी से अपनी लुंगी ठीक की और उसका कंधा पकड़कर उसे बिठाने की कोशिश की। लेकिन उसने मना कर दिया।

"तुम क्या कर रही हो... मुझे चैन से सोने दो। अगर मैं सिर्फ सपनों में ही तुम्हें परेशान कर रहा हूँ, तो असल जिंदगी में आकर मुझे तंग मत करो। चले जाओ..." वह कराहते हुए अपने हाथों से कंबल ढूंढने लगा। उसके बगल में बैठी महिला ने उसकी बांहें पकड़कर उसे जगाया, और विमलनाथन अनिच्छा से उठ खड़ा हुआ।
"लो, इसे पी लो..."
"नहीं, नित्या... कृपया मुझे अकेला छोड़ दो..."
“चाचा जी, क्या आप अपना बुखार कम करना चाहते हैं... एक घूंट पी लीजिए, चाचा जी...” उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया और बिस्तर पर लेट गया। उसने तुरंत उसे अपने कंधे पर उठाया, उसके मुंह में दो गोलियां डालीं और उसे जबरदस्ती काढ़ा पिलाया, जिसे विमलनाथन ने अनिच्छा से पी लिया। उसने जल्दी से इटैलियन चिकन का एक टुकड़ा खाया, उसे सांभर में डुबोया और मुंह में डाल लिया।
"खाओ..."
"शर्माओ मत..."
"एक निवाला खा लो। तभी बुखार उतरेगा..."
"वेना निथी..." वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया, निथी ने उसके मुंह में रोटी का एक टुकड़ा ठूंस दिया। विमलथन ने अनिच्छा से खाया। उसने किसी तरह उसे रोटी का एक टुकड़ा खाने के लिए मनाया, अपनी तर्जनी उंगली से उसका मुंह पोंछा और उठने ही वाली थी कि अचानक विमलथन उसकी गोद में गिर पड़ा।
"अंकल..." वह हकलाते हुए बोली।
"प्लीज़... मैं थोड़ी देर के लिए तुम्हारी गोद में लेट जाऊँगा, निथी..." वह कराहते हुए अपने शरीर को मोड़कर लेट गया, लेकिन वह उसे दूर नहीं धकेल सकी।

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
"[illegible] [illegible] [illegible], [illegible]..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

(16)

काफी देर बाद, विमलनाथन ने पसीने से तरबतर होकर अपनी आँखें खोलीं। उनका सिरदर्द कम हो गया था। उनकी शारीरिक थकान भी दूर हो गई थी।
उसने आंखें ऐसे खोलीं जैसे वह बाथरूम जाना चाहता हो, और उसने जो देखा वह एक सफेद पेट और बीच में एक सुंदर नाभि थी।
विमलनाथन असमंजस में था। धीरे से ऊपर देखते हुए उसने अपनी जैकेट के अंदर छिपे दो रत्न देखे। तभी उसे एहसास हुआ कि वह नित्या की गोद में सो रहा था।
विमलनाथन चौंक गया। यह कब आया? यह मेरी गोद में कैसे आ गया? उसने उलझन भरी निगाहों से उसके चेहरे की ओर देखा, लेकिन वह बिस्तर के फ्रेम पर सिर रखकर गहरी नींद में सो रही थी।
हम कितनी देर से इस गोद में लेटे हैं? वह धीरे से उठते हुए सोचने लगा। नित्या सो रही थी, उसे पता भी नहीं चला कि वह जाग गया है। जब वह जागा, तो वह जाकर वापस आया, लेकिन वह अभी भी वहीं बैठी थी। उसने घड़ी देखी, दोपहर के एक बज रहे थे। हम कितनी देर से सो रहे थे? और वो भी उसकी गोद में।
वह धीरे-धीरे उसके पास पहुंचा और अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।
"निथी... जाओ... जाओ और अपने कमरे में लेट जाओ..." उसने कहा, और नीति ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं।
"क्या हाल है, अंकल... क्या हुआ? अब आपका बुखार कैसा है?" उसने उठकर उनके माथे को छूते हुए पूछा, लेकिन उन्होंने उसका हाथ झटक दिया।

"छी... मैं ठीक हूँ। हल्का बुखार है... बस इतना ही..." यह कहते हुए निथिया ने उसे घूरकर देखा।
"बुखार है... तुम्हें पता है, जब मैंने उसे छुआ तो मुझे भी वैसी ही जलन हुई। फिर मैंने अपनी चाची को फोन किया और उनके कहे अनुसार दलिया बनाया..." विमलनाथन ने गुस्से से उसकी तरफ देखा। "तुम ये सब क्यों कर रही हो...? क्या तुम कॉलेज नहीं जा रही हो?" उसने पूछा, और निथिया ने अपने होंठ सिकोड़ लिए।
"अगर आप कॉलेज नहीं जा सकते तो मैं कैसे जाऊंगी? और बारिश हो रही है इसलिए उन्होंने मुझे कॉलेज से छुट्टी दे दी है," उसने उठकर मेज पर रखी खाली प्लेटें उठाते हुए कहा।
"आप क्या खाना चाहते हैं? क्या आप इसिया डाइजेस्ट जैसा दलिया खाना चाहते हैं?" विमलनाथन ने सवाल पूछने वाले के सामने सिर हिलाकर इनकार कर दिया।
"तुम्हें मुझसे कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। बस अपने काम से मतलब रखो..." डांट-फटकार कर कमरे से बाहर जाते हुए उस आदमी ने नित्या की तरफ़ झुंझलाहट भरी नज़रों से देखा। न जाने क्यों, नित्या उसकी डांट बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी।
"आप इतने गुस्से से क्यों बोल रहे हैं, चाचा... मैं तो बस आपके भले के लिए ही पूछ रही हूँ," उसने आँखों में आँसू भरते हुए पूछा। "छी... अब तुम इतनी परेशान क्यों हो... मैं तुम्हारे लिए कौन हूँ... बस कोई... तो फिर मेरे लिए तुम्हें क्यों भुगतना पड़ रहा है? मुझे अपना ख्याल रखना आता है... तुम जाओ... झूठ बोलो..." उसने कहा। "माफ़ कीजिए, अंकल... मैंने एनी से भावनाओं में बहकर बात कर दी। अगर आप चाहें तो मुझे दो कमरे दे दीजिए। मैं ले लूंगी। लेकिन मुझे इस तरह टालिए मत, अंकल। यह बहुत मुश्किल है... प्लीज़..."

उसने रोते हुए विनती की, और विमलनाथन खुद को रोक नहीं पाए।
क्योंकि उसके आँसू देखकर उनका गुस्सा फूट पड़ा।
"नित्या, तुम अब अपनी आँखें क्यों मल रही हो? तुम्हें नहीं पता कि अगर तुम रोओगी तो मेरे लिए कितना मुश्किल होगा... कृपया मेरी आँखों को छू लो..." उसने कहा।
"मुझे बता दीजिए कि आप मुझे माफ कर देते हैं, चाचा जी..." उसने आत्मविश्वास से कहा।
"मैं तुम्हें माफ़ करने वाला कौन होता हूँ, नित्या? कोई तो... ठीक है... जाओ और अपना काम करो..." उसने कहा और सीधे रसोई में चला गया। वह उसके पीछे भागी, अपनी आँखें पोंछते हुए।
"चाचा जी... अगर आप मुझे माफ कर दें, तो मैं आपको थोड़ा दलिया दूंगा। इसे खा लीजिए..."
"चुप रहो... तुम्हें मेरे बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मैं अब ठीक हूँ। मैं अपना ख्याल खुद रख लूँगी..."
"तो फिर तुम मुझे माफ नहीं करोगे, है ना..." उसने फिर से अपनी आँखें घुमाईं, और उसने सोचा, "हे भगवान!"
"ठीक है... ठीक है... फिर से मत रोना। मुझे थोड़ा दलिया दो। मैं पी लूंगी..." नितिया ने मुस्कुराते हुए कहा।
"लो चाचा जी..." उसने कहा और उसके लिए दलिया बनाने के लिए बर्तन में पानी डालकर उसे चूल्हे पर रख दिया। इवान सामने वाले कमरे में आया और चूल्हे पर बैठ गया।
निथिया भी उसके लिए दलिया बनाने में व्यस्त थी, और उसे बहुत खुशी हुई कि उसने दो महीने बाद उससे बात की।
जब पानी उबलने लगा और वह चावल निकाल रही थी, तभी उसका हाथ गलती से चूल्हे पर रखे पानी के बर्तन को गिरा गया, जिससे उबलता हुआ पानी उस पर गिर पड़ा और नित्या घबरा गई।

"चाचा..." वह चीखी, और विमलनाथन पेट पकड़कर कांपते हुए उसकी ओर दौड़ा।
"क्या हाल है, निथी..."
“श... आह... उस पर गर्म पानी गिर गया...” वह रोते हुए बोली, और वह कांपते हुए उसे देखने लगा। साड़ी उसके पेट से चिपकी हुई थी। वह तुरंत समझ गया कि उसके पेट पर गर्म पानी गिर गया है।
विमलनाथन ने स्थिति को समझते हुए, उसे देखते ही तुरंत अपनी बाहों में उठा लिया।
"तुम्हें हर बात की जल्दी रहती है। मैंने तुमसे कहा था कि दलिया तो मैं पी रहा था... क्या तुमने सुना नहीं..." उसने गुस्से से कहा और उसे उठाकर सोफे पर लिटा दिया। फिर वह भाग गया, फ्रिज खोला और एक बर्फ का टुकड़ा निकाल लाया।
"एक मिनट... ठीक हो जाओ..." उसने दर्द से कराहती हुई उसे देखते हुए चिंता से कहा। उसने अपने हाथ में पकड़ी बर्फ की ट्रे चाय की मेज पर रख दी, उसकी साड़ी हटा दी, बीच में बंधी पट्टी खोल दी और उसका पेट देखते हुए उसकी स्कर्ट नीचे कर दी।
गर्म पानी के कारण पेट का दाहिना हिस्सा लाल हो गया था।
"कुछ नहीं... कुछ नहीं... सब ठीक है... रोओ मत..." उसने बर्फ का एक टुकड़ा लेकर चोट वाली जगह पर रखते हुए कहा, जिससे उसे ठंडक महसूस हुई।
वह भी जलकर राख हो गया।
"चुप रहो... चाचा जी, ठंड लग रही है। साथ ही साथ बहुत गर्मी भी लग रही है..."
"ठीक है... निथिया, ये कोई बड़ा घाव नहीं है। बर्फ की पट्टियाँ काफी होंगी..." उसने उसके होंठों को काटते हुए और उसकी आँखें बंद करते हुए कहा, और दर्द वाली जगह पर बर्फ की पट्टियाँ रख दीं।

सौभाग्यवश, चावल निकाल लेने से उबलते पानी की गर्मी कुछ कम हो गई थी। अन्यथा, फफोले पड़ जाते।
हालांकि, उसकी दूधिया त्वचा पर जहां गर्म पानी लगा था, वह जगह लाल हो गई थी।
"उसने बर्फ के टुकड़े से लाल हुए हिस्सों को धीरे से रगड़ा, और नित्या झुंझलाहट में आंखें बंद करके वहीं लेटी रही, उसकी सेवा स्वीकार करते हुए।"
धीरे-धीरे, उस आदमी का हाथ, जो उसके पेट और नाभि को सहला रहा था, धीरे-धीरे हटकर उसकी पैंटी के ऊपरी हिस्से तक पहुँच गया। तब तक, विमलनाथन, जो घबराकर उसकी सेवा कर रहा था और उसे दर्द होने की आशंका थी, उसके मुँह में लार टपक रही थी। उसका हाथ झिझक गया। तभी विमलनाथन ने उसे उसके संपूर्ण रूप में देखा।
गुलाबी जैकेट उसे घुटन दे रही थी, उसके दोनों स्तनों को छुपाने में असमर्थ थी। उसने अंदर सफेद ब्रा पहनी हुई थी, जिस पर लेस लगी थी। जिसने भी यह देखा, वह अपना काम पूरी तरह भूल गया।
उस रात उसने उसके अस्थि कलश देखे थे। उसने दिन के उजाले में भी उनके अस्थि कलशों की सुंदरता और भार को महसूस किया था, और वह इतनी आसानी से अपनी दृष्टि उनसे हटा नहीं पा रहा था। शायद इसका कारण यह था कि उसके शरीर को ठंड लग रही थी, और उसके दोनों निप्पल ऐसे उभरे हुए थे मानो उसकी जैकेट को फाड़ रहे हों।
इसे देखकर उसके मुंह में पानी आ गया, ठीक वैसे ही जैसे मीठी चीज़ देखकर उसके मुंह में पानी आ जाता है।
उसी समय, बर्फ का टुकड़ा पिघल रहा था, और उसका खाली हाथ उसके पेट को सहला रहा था।
"हम्म... अब मुझे थोड़ा बेहतर लग रहा है, अंकल..." उसने उनके हाथ के स्पर्श को महसूस करते हुए कहा।

"क्या तुम्हें कहीं और चोट लगी है, नितिमा?" उस आदमी ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी निगाहें अभी भी खिले हुए कलशों से हट नहीं रही थीं।
"नहीं, चाचाजी..." उसने कहा, और सत्यन ने उसके चेहरे की ओर देखा।
उसकी आंखें बंद थीं, लेकिन उसकी मर्दानगी जागृत हो चुकी थी।
यह गीत के साथ घुलमिल गया और मानो यह कहने के लिए कि, "ओह, मैं आज़ाद हूँ," वह खुद को और अधिक नियंत्रित नहीं कर पा रहा था।
एक बेटा कैसे शांत रह सकता है जब उसकी पत्नी उसकी आंखों के सामने लेटी हो, और दूर कोई सुंदर मंदिर दिखाई दे रहा हो?
उस दिन उसके प्रति अपने मन में उमड़ी कड़वाहट को पूरी तरह से भुलाकर, उसने फिर से बर्फ का टुकड़ा उठाया और उसे उसके पेट पर लगाया, धीरे-धीरे नीचे की ओर लाते हुए, और अचानक नित्या उस महिला की योनि में अपनी पैंटी का सिरा डालने के लिए बेताब हो गई। "अंकल... आप क्या कर रहे हैं..." वह हकलाते हुए बोली।
"श... क्या तुम्हारे पेट पर गिरा गर्म पानी वहां तक नहीं पहुंचा?" उसने फुसफुसाते हुए कहा।
"वो... उधर..." वह हकलाते हुए बोली।
"आनंद लो, निथिमा..." वह कराह उठा, और वह उस बर्फ के टुकड़े के चारों ओर चक्कर लगाने के नए आनंद में जम गई, जहाँ उसकी स्त्रीत्व की कली छिपी हुई थी।
अब, नित्या भावुक हो गई और उसने उन दोनों फलों पर एक छोटा सा चुंबन देने की कोशिश की जो उसके लिए खिल रहे थे और चमक रहे थे।
अब उसका हाथ उसकी पैंटी में घुस गया और वह नंदवन उद्यान में बर्फ का टुकड़ा डालने के लिए बेताब थी।
"कैसी हो, निथी..." उसने कहा।
"हम्म..." उसने हिचकिचाते हुए कहा।

"ठंडा..."
"श्... हम्म..." वह कराह उठी, और नित्या कांप उठी जब उसने बर्फ के टुकड़े को उस परागकण के चारों ओर लपेट दिया जिसे उसने उसकी पाल पर छोड़ दिया था।
गुलाबी जैकेट का किनारा गीला और गोल था, और उसमें से महिला का कोमल अंग साफ दिखाई दे रहा था, जिसे देखकर वह आदमी पागल हो गया।
वहीं दूसरी ओर, वह महिला उसके इस नए व्यवहार से रोमांचित हो गई और वहीं मदहोश पड़ी रही।
"बहुत प्यारी..." उसने उसके होंठों को काटते हुए पूछा।
"हम्म," उसने कराहते हुए कहा।
"अगर तुम उत्तेजित हो जाओ..."
"हम्म..." उसने कहा, कलश के उस नुकीले सिरे को दबाते हुए जो कुंद हो चुका था।
"श्श..." नित्या ने कहा।
"मैं... इन्हें देखना चाहता हूँ, नित्या..." उसने कहा और बिना उसकी अनुमति लिए ही उसने उसका जैकेट उतार दिया, हुक खुल गए और सफेद लेस वाली ब्रा, जो उसके स्तनों को संभाल नहीं पा रही थी, हिलने लगी और उसकी आँखों के लिए एक दावत बन गई। विमलथन क्रोधित हो गया।
वह खुद को और नियंत्रित नहीं कर सका। उसने उसके स्तनों को पकड़ लिया और उन्हें ज़ोर से दबाया, वह उसे रोक नहीं पा रहा था। दो छोटे खरगोश जैसे स्तन उछलकर बाहर आ गए और एक ही झटके में ब्रा को नीचे खींचने की कोशिश करने लगे।
जब उसने उसे देखा तो वह उससे अपनी निगाहें नहीं हटा सकी।
उस दिन अंधेरे में उसने जो सुंदरता देखी थी, उसे दिन के उजाले में देखकर उसकी भावनाएं उग्र नदी की तरह उमड़ पड़ीं। उसे यह भी

डर था कि उसके भीतर प्रवेश करने से पहले ही वह विस्फोट कर बैठेगा।
लेकिन उसने खुद को काबू में रखते हुए, वासना से भरे स्वर में उसके स्तनों की ओर झुका और दोनों निप्पल्स को चूमा। उसने अपना चेहरा उनके बीच दबा लिया और इधर-उधर हिलने लगा। उसने अपने होठों से उसके स्तनों की लंबाई और चौड़ाई नापी। उसने उसे हल्के से काटा। उसने अपनी जीभ से उसके चारों ओर चक्कर लगाया। उसने उसका स्वाद चखा। उसने काटा और चबाया। फिर, एक हाथ से उसने एक फल को मसलकर उसके सिरे को होठों से दबाया और उसे जोर से चूसा। दूसरे हाथ से उसने एक बर्फ का टुकड़ा लिया, उसे अपनी पैंटी में डाला और उसके स्तनों पर रख दिया।
नित्या भयानक ठंड को अपने नीचे और उसके होठों की गर्माहट को अपने ऊपर बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रही थी, जो उसे पीड़ा से व्याकुल कर रही थी।
"माँ... चुप रहो... मैं नहीं कर सकता, माँ..." उसकी परेशानी देखकर उसने निप्पल को मुँह से खींचकर अलग कर दिया। वह रबर की गेंद की तरह उछला और वापस अपनी जगह पर चला गया।
उसने दूसरे निप्पल को अपने मुंह में लिया और उसे जोर से चूसा, फिर छोड़ दिया। अब सत्यान के हाथ में रखी बर्फ पिघल चुकी थी, और उसके हाथ में खाली फल रह गया था, जबकि उसकी योनि पूरी तरह गीली हो चुकी थी।
जिस आदमी ने अभी-अभी अपना हाथ आगे बढ़ाया था, उसने उसकी तरफ देखा और कहा,
"क्या आप और लेना चाहेंगी...?" उसने पूछा, भला वह मना कैसे कर सकती थी।
"हम्म..." वह उत्तेजना में कराह उठी।

अब उसने दोनों हाथों में बर्फ के टुकड़े लिए और उन्हें दोनों निपल्स पर रगड़ा।
"श... आह... उम..." वह बड़बड़ाने लगी, मानो खुद को भूल गई हो।
वह लालसा भरी निगाहों से उसे सुख और पीड़ा में तड़पते हुए देखता रहा।
“निथी…”
"हम्म.."
"मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। क्या तुम मुझे अपने साथ ले जाओगी?" उसने बड़ी बेसब्री से पूछा।
"अह... लीजिए, चाचा जी..."
"वास्तव में..."
"हम्म..."
"तो फिर आप बीच में क्यों रुक रहे हैं..."
"अह... नहीं, चाचाजी..."
"अगर तुम रुक भी जाओ, तो भी मैं तुम्हें नहीं रोक सकता, निथी..." "मैं नहीं रुकूंगी, अंकल... इसे ले लीजिए..." उसने अनुमति दे दी, और वह उसकी निपल्स को देखकर मोहित हो गया, जो ठंड और आनंद से सख्त हो गई थीं।
"यह कितना सुंदर है..." उसने कहा, और निथिया बिस्तर को अपनी उंगलियों से सहलाने, उसे प्यार से छूने और चूमने के लिए उत्सुक थी।
"अंकल..." उसने लड़खड़ाते हुए कहा।
"क्या..."
"अरे यार... चुप रहो, अंकल... मैं नहीं कर सकती..." जैसे ही उसने यह कहा, उसके हाथ में रखी बर्फ पिघल गई।

नम, चमकती कली की प्रशंसा करते हुए, उसने उत्सुकता से अपना मुँह खोला, उसे अपनी जीभ से छुआ, अपने होंठ बंद किए और उसे चूस लिया। वह फल-फूल, जो तब तक ठंड में काँप रहा था, उसके मुँह में धड़क उठा और जम गया, मानो उसके मुँह की गर्मी से उसके सारे पाप धुल गए हों।
“हम्म... अंकल... काटो अंकल... अच्छे से चूमो... श... बस...” वह ऐसे धड़क रही थी जैसे गाय का दूध पीता हुआ बछड़ा। उसने उस एक फल का स्वाद चखा और अगले ही पल उसने उसका जैकेट और ब्रा उतारकर फेंक दिया और दोनों फलों को हवस भरी निगाहों से देखा। उसने दोनों को हाथों में लेकर हिलाया। उसने चूसा। उसने उन्हें मसला। उसने अपनी उंगलियों को इकट्ठा किया और निप्पल्स को खींचा और नाचते हुए फलों की सुंदरता का आनंद लिया। फिर उसने उन्हें मसला। उसने निप्पल्स को खींचा और खींचा। फिर उसने निप्पल्स को चूसा और चूसा। उसने पी लिया।
लगभग आधे घंटे तक वहां सेवा करने के बाद, उसने आखिरकार उन्हें रिहा कर दिया और उसे बेडरूम में ले गया।
अगर वो आज मना भी कर दे, तो भी वो मुझे जाने नहीं देगी। अब और इंतज़ार नहीं।
अगले ही पल, जिस व्यक्ति ने उसे बिस्तर पर लिटाया था, उसने अपनी पतलून उतारकर फेंक दी। निथिया यह देखकर चौंक गई कि विमलनाथन वहां खड़ा था और अपना उत्तेजित लिंग दिखा रहा था।
"आदि आथी... इसने ऐसा क्या पाल-पोस कर रख दिया है... क्या एनी यही बात लेकर उसके पास आई थी? इसीलिए तो वो दो दिनों से ऐसी ही है," वह हैरान रह गई।
जब सत्यन और वो एक-दूसरे के करीब थे, तो दोनों में एक तरह की बेचैनी थी; किसी के आने के डर और चिंता में वे पास आते और फिर

पीछे हट जाते। उस समय, दोनों में से किसी ने भी अपने कपड़े नहीं उतारे थे। दोनों ने एक-दूसरे को पूरी तरह से नहीं देखा था। एक तरह की शर्म। झिझक। लेकिन एक ऐसा रिश्ता जो जल्दबाजी में पनप रहा था और सिर्फ सुख की चाह रखता था।
लेकिन अब मुझे अपने पति के साथ यौन संबंध बनाने का अधिकार था। मैं उनसे खुलकर मिल सकती थी, इस विश्वास के साथ कि कोई और कुछ नहीं कर सकता।
ग्रीक मूर्ति की तरह लंबा खड़ा, व्यायाम से मजबूत बने शरीर वाला और उस ऊंचाई पर आठ इंच चौड़ा काया वाला, उसका मर्दाना शरीर किसी भी महिला को दीवाना बना सकता था।
लेकिन शर्म से उसने अपनी आंखें बंद कर लीं, और सत्यन धीरे-धीरे उसके पास पहुंचा।

(17)

अब जो आदमी उसकी ओर आया था, उसने अपनी स्कर्ट और पैंटी खोलकर उन्हें एक साथ फेंक दिया, अपने पैरों को उसके दोनों ओर रखा, उसकी ओर झुका और अपने होंठ उसके होंठों से दबा दिए। नित्या उसके उस भयानक चुंबन में खुद को भूल गई।
उस दिन जब उसने वह तस्वीर ली थी, तो वह किसी सपने जैसी थी। अब जब यह असल जिंदगी में हो रहा है, तो रोमांच ही कुछ और है।
उसने हवस से उसके ऊपरी होंठ को चूसा, फिर उसे छुड़ाने के लिए उसके निचले होंठ को काटा और चबाया, लेकिन उसने झट से उसके होंठ हटा लिए और उन्हें चूसकर छुड़ा लिया। उसके ऊपरी होंठ को फिर से अपने मुँह में लेने के लिए, उसने अपने दाँतों से उसके निचले होंठ को काटा और चबाया। फिर उसने अपनी जीभ उसके मुँह में डाली और बाहर निकाल ली।
"अपनी जीभ चूसो, नित्या..." उसने कहा और अपनी जीभ फिर से उसके होंठों में डालकर चूसने लगा। नित्या ने उसकी बात को मना किए बिना, जीभ खींची और चूसने लगी। उसका पुरुषत्व मच उठा।
दर्द असहनीय था। उसने उसका हाथ पकड़ा, उसे अपने खड़े लिंग पर रखा, उसे ऊपर-नीचे हिलाया और उसे बताया कि क्या करना है। विमलनाथन ने उसे अपना लिंग और होंठ दिए और अपने हाथों से अपने पसंदीदा अंगों के साथ खेलने लगा।
उसके हाथ ने रेशमी फलों को छुआ। वे लाल हो गए। वे दम घुटकर मर गए। उसके होंठ चबाए और उसके होंठों को चाटा।
जैसे किसी स्त्री की योनि में प्रवेश कर रहा हो, उसने अपनी जीभ उसके होंठों के अंदर सरका दी। उसने उसकी जीभ को पकड़कर खींचा।
उसने उसे सहलाया। उसने उसे काटा। उसने उसकी जीभ चूसी। उसने

अपनी लार उसके सूखे गले में डालकर उसकी प्यास बुझाई। ठीक उसी तरह, उसने उसके द्वारा स्रावित वीर्य को पीकर अपनी प्यास बुझाई। फिर वह खड़ा हुआ और उसे हवस भरी निगाहों से देखने लगा। जैसे-जैसे उसके हाथ उसके गुप्तांग पर इधर-उधर खेलते रहे, विमलनाथन की आंखें आनंद से चौड़ी होती गईं।
"श्श... ये अच्छा है..." उसने कराहते हुए उसे हवस भरी निगाहों से देखा।
"तुम कितनी खूबसूरत हो..." इकट्ठे हुए फल, कमर जो भार सहन नहीं कर पाई और बिखर गई। जांघ जो बेल को सहारा दे रही थी। बीचोंबीच स्वर्ग का द्वार, वह पोशाक उस उज्ज्वल दिन में एकदम परिपूर्ण लग रही थी।
"क्या वह सच है..."
"क्या तुम्हें लगता है कि मैं झूठ बोल रहा हूँ...?" उसने वासना से भरे स्वर में उसके स्तनों को सहलाते हुए कहा।
"जानती हो, इन चीजों का तुम्हारी उम्र या तुम्हारे शरीर से कोई लेना-देना नहीं है..." उसने कहा, और एक पल में वह खुद को रोक नहीं पाया। उसने झट से उसका हाथ अपने लिंग से हटा दिया।
"सरिति... मैं तुम्हें चाहता हूँ। मैं तुम्हें अभी चाहता हूँ। मैं नहीं कर सकता... मुझे माफ़ करना..." यह कहते हुए, उस व्यक्ति ने जोश से अपने लिंग को छुआ, कुछ सेकंड के लिए उसे उसकी योनि की संवेदनशील कली पर रगड़ा, जिससे उसे आनंद मिला, फिर उसे उसकी सुरक्षात्मक परत में डाला और ज़ोर से धक्का दिया, उसका लंबा लिंग उसकी योनि की दीवार से रगड़ता हुआ अंदर चला गया, नित्या धड़कते हुए खड़ी हो गई।
"अंकल..." चीखते ही उसे उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी जल्दी अपना लिंग उसके अंदर डाल देगा।

"माफ़ कीजिए... कृपया...", उसने कहा और उसे अंदर धकेलने की कोशिश की।
उस डिब्बे में उसकी मर्दानगी का केवल आधा हिस्सा ही समाहित था। एनी के साथ भी ऐसा ही हुआ। उसे इससे उबरने में काफी मुश्किल हुई।
जिसने एक बार फिर अपना पुरुषत्व प्रकट किया,
"सरिटी... तुम्हारा थोड़ा छोटा है..." उसने शिकायत करते हुए अपना लिंग फिर से निकाला और उसके पैरों को चौड़ा फैलाकर पहले से भी अधिक जोर से अंदर डाला, अब उसकी योनि को फाड़ते हुए अपना लिंग अंदर तक डाल दिया।
एक तरफ उसे असहनीय आनंद का अनुभव हुआ। दूसरी तरफ, उस बड़ी छड़ी को न पकड़ पाने का दर्द भी महसूस हुआ। क्या उस दिन भी उसे ऐसा ही दर्द हुआ था? मुझे याद नहीं।
"थोड़ा रुको..." उसने कहा, लगभग अपना लिंग फिर से बाहर निकालते हुए और उसी गति से उसे उसके अंदर डाल दिया, जिससे निथिया कांप उठी।
"श... अंकल... आह... दर्द हो रहा है... आपका तो बहुत बड़ा है..." वह हांफते हुए बोली।
"श... उम... एनी के साथ भी ऐसा ही हुआ था। फिर मैं सोने चला गया। मैंने दो महीने से कुछ नहीं किया है। ये... थोड़ा दर्द हो रहा है। कोई बात नहीं... लेकिन... तुम अब भी मुझे कसकर पकड़े हुए हो, अच्छा लग रहा है, अच्छा लग रहा है..." वो स्वर्ग में लेटे हुए आहें भर रहा था, लेकिन उसके शब्दों से और भी उत्तेजित होकर, वो अपनी कमर हिलाने लगी, जैसे वो चाहता था, उसे पूरी तरह से अपने अंदर समा लेने की कोशिश कर रही थी।

लेकिन उसके हाथों ने उसके फलों को मसलकर उनमें से रस निकालने की कोशिश की।
अपनी कमर को ज़ोर से हिलाते हुए, वह नीचे झुका और अपना चेहरा उसकी गर्दन में छिपाकर उसकी खुशबू को सूंघने लगा। उसने उसकी गर्दन को हल्के से काटा और फिर अपनी जीभ से चाटा। उसने उसे चूमा। नीचे की ओर बढ़ते हुए, उसने उसकी छाती को चूमा। उसने शहर की भीड़ का स्वागत करते हुए दोनों को बराबर चूमा। उसने उसे बिना दर्द के काटा और छोड़ दिया। उसने उसे दोनों हाथों से पकड़ा, दबाया और अपने होठों से उसके उभरे हुए निपल्स को चूसा। उसने अपने हाथ से अपना लिंग बाहर निकाला जैसे उसे एक बार बाहर निकालना चाहता हो और उसे उसके अंदर डाल दिया, जिससे वह कांप उठी। उसी क्षण उसने अपने दांतों से उसके निपल को काटा और चूसा। वह उछल पड़ा। उसने अपना लिंग बाहर निकाल लिया।
"हम्म... छोड़ दो, निथी... मुझे पूरी तरह से अंदर ले लो... मुझे कुछ नहीं मिलेगा। मेरी मदद करो..." वह आदमी आनंद और क्रोध से कराहते हुए अपने शरीर को मरोड़ने लगा।
"हम्म... चलो नित्या... मैं आ रहा हूँ... चलो..." उसने गुस्से से साँस लेते हुए कहा, और एक समय ऐसा आया जब नित्या अपना पूरा लिंग उसके अंदर डालने में भी असमर्थ रही।
"आह, अंकल... उम... श्श... मैं नहीं कर सकती... उम..." उसने आह भरते हुए कहा, और एक पल के लिए वह ऐसा करने में असमर्थ हो गई। "आआआआ...व्हकम..." वह चीखी, पूरे कमरे को हिलाते हुए, उमंग भरे आनंद को सहन न कर पाने के कारण लगभग बेहोश हो गई। वह उग्र साँसों के साथ उसके भीतर गति करता रहा, और थोड़ी ही देर में, उसकी रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से से एक धड़कते हुए चरम सुख ने उसके पुरुषत्व में दर्द भरे आनंद के साथ प्रवाह किया, और पूरा सफेद

लिंग उसके स्त्रीत्व में समा गया। उसने इस आनंद का भरपूर लुत्फ़ उठाया। अंत में, अपनी सारी शक्ति खोकर, साथियान उसकी छाती पर गिर पड़ा।
ठंड में दोनों को बहुत पसीना आ रहा था। उनके दिल तेजी से धड़क रहे थे।
हालांकि, नित्या अभी भी आंखें बंद करके वहीं लेटी हुई थी, वह उस आनंद से उबर नहीं पा रही थी।
भूकंप के बाद भी उसकी स्त्रीत्व की भावना सिकुड़ती और फैलती रहती थी, इसलिए वह उस आनंद से कभी बाहर नहीं निकल पाती।
कुछ देर बाद, वह उससे अलग होकर गिर पड़ा, उसे अपनी बाहों में भर लिया और अपनी आँखें बंद कर लीं, उसका एक हाथ अभी भी उसके सुडौल स्तनों को सहला रहा था।
उसने चाहत से अपनी गुलाब की कली को घुमाया। उसे सहलाया। फिर उसने पूरा फल उठाया और निचोड़ा। फिर वह उसके पास गिर पड़ा, नीचे झुका, उसके होंठ चूमे, उन्हें चूमा और उसे छोड़ दिया।
"ठीक है..." उसने फुसफुसाते हुए कहा, और नित्या ने बिना जवाब दिए अपना चेहरा उसकी छाती में छिपा लिया।
लेकिन उसने अपना हाथ उसके फल से नहीं हटाया।
क्या यह उचित है...?
"हम्म..."
"तुम्हें इतने लंबे समय बाद इतनी खुशी मिली है..." उसने कहा और उसकी गुलाब की कली को चुटकी से दबाया।
फिर अचानक, उसने नीचे हाथ बढ़ाया, उत्सुकता से उस एक फल को अपने मुंह में लिया, एक बच्चे की तरह व्यवहार करने लगा और उसे चूसने लगा, जबकि वह उसके बालों को सहलाती रही और उसके चूसने के आनंद का लुत्फ उठाने लगी।

उसने लगभग आधे घंटे तक लगातार शराब पी और उसके गुर्दों में दर्द होने लगा।
"चाचा.."
"हम्म..." उसने बारी-बारी से चबाते हुए जवाब दिया।
"नहाने के बाद आना..."
"कृपया... ऐसे ही रहो..." अचानक उस आदमी का एक हाथ नीचे गया और उसने उसके गुप्तांग को छू लिया। उसने तुरंत उसके हाथों को झटक कर हटा दिया।
"प्लीज़, अंकल... मैं अभी आती हूँ..." कुछ न कहते हुए, उसने अपने शरीर को कंबल से ढक लिया, बाथरूम गई, खुद को साफ किया और वापस आ गई।
विमलनाथन ने आई हुई महिला को उठाया और उसे फिर से अपने ऊपर रख लिया।
उसने जल्दी से अपना हाथ कंबल के अंदर डाला और तनाव कम करने के लिए दूध निचोड़ने लगा।
"शश... अंकल... दर्द हो रहा है..." वह सिसकते हुए बोली।
"दर्द होने दो...", उसने कंबल हटाते हुए और फलों को उत्सुकता से देखते हुए कहा।
"तुम दोनों बेहद खूबसूरत हो। ऐसा लगता है जैसे तुम बस मुंह बंद करके वहीं लेटना चाहती हो..." उसने आह भरी।
नित्या बेहद रोमांचित थी।
"मुझे काट लो, चाचा।" विमलनाथन ने उसकी इच्छा पूरी कर दी, बिना उसकी विनती को अस्वीकार किए।
नित्या के मन में भी कुछ ऐसी ही भावनाएँ थीं। इसीलिए सत्यान के स्पर्श से उसने मना नहीं किया। वह खुशी-खुशी तैयार हो गई। लेकिन भीतर से डरी होने के कारण वह इस भावना को गहराई से महसूस नहीं कर

(18)

क्या यह उचित है...?
"चाचा…"
"क्या मुझे एक और ड्रिंक मिल सकती है...? अब, शांत हो जाओ। धीरे- धीरे..." वह पूछता है, और वह मना कर देती है।
"हम्म..."
"अगर इससे आपको तकलीफ होती है, तो मत करो..."
"नहीं, चाचाजी... इसे ले लीजिए..." उसने अपनी बात पूरी नहीं की, और चाचा ने अपना चेहरा उसके दोनों स्तनों के बीच छिपा लिया। उसने गहरी सांस ली। उसने उसे काटा। उसने उसे जीभ से चाटा। उसने उसे चूमा। उसने उसे फिर से काटा। उसने काटे हुए स्थान को चूमा। उसने उसे दोनों हाथों से उठाया और बाहर खींच लिया।
उसने उसे झकझोरा। उसने हवस भरे छोटे-छोटे चुंबन दिए, नीचे झुका और अपनी जीभ से उसके बाएं स्तन के चारों ओर चाटा। अंत में, उसने अपनी जीभ से उसके स्तन के ऊपरी भाग को चाटा।
"आह... उम... अंकल..." उसने वासना से भरे उसके स्तन को अपने मुँह में ले लिया और उसे चूसने लगा, जबकि वह काँप रही थी। उसका बायाँ हाथ उसके दाहिने स्तन को दबा रहा था, मानो रस निकालने की कोशिश कर रहा हो।
जो व्यक्ति अपने मुंह में निप्पल चूस रहा था, उसने उसे अपने गले तक खींच लिया और धीरे-धीरे अपनी कामुकता बढ़ाने लगा, इसलिए उसने उस फल को छोड़ दिया जिसे वह तब तक चूस रहा था और दूसरे फल की ओर बढ़ गया।
उसने उसे घूंट-घूंट करके पिया। फिर उसने उसे थूक दिया और चमकते हुए थूक को देखकर उसे घृणा हुई।

उसने उन्हें अपनी उंगलियों से दबाया और अलग-अलग कर दिया। फिर उसने उन्हें अपने हाथ में लिया और उनका वजन किया।
"क्यों... क्या यह तुम्हारे लिए बोझ नहीं है...?" पूछने वाला व्यक्ति उसके स्तनों और जांघों को देखकर हैरान रह गया, जो उसकी बाहों में और भी बड़े और फूले हुए थे। उसने ऊपर उसकी ओर देखा, लेकिन वह अपने होंठ काट रही थी, मानो उसके स्पर्श से पागल हो रही हो, और विमलनाथन खड़ा हो गया और उसके होंठों को चूम लिया।
वह आदमी, जिसने कुछ समय उसके बगीचे में बिताया था, अब खड़ा हुआ और उसके दोनों ओर पैर फैलाकर बैठ गया, उसके ऊपर झुकते हुए। वह आगे बढ़ा, उसके माथे, गर्दन और छाती को चूमता हुआ, और अपने हाथों को उसके फलों से हटाए बिना, धीरे-धीरे उसके पेट की ओर बढ़ा।
अब उसने उसके पेट को चूमा। उसने अपनी जीभ उसकी नाभि में डाली और उसे घुमाया। उसने चूमा। उसने उसे काटा। उसने गर्म पानी से लाल हो चुकी जगह को धीरे-धीरे चूमा। वह धीरे-धीरे और नरमी से नीचे बढ़ा, अपने हाथ से उसके गुप्तांग को ढकते हुए। नित्या ने उसे रोक दिया।
जिसने उसे रोकने वाले हाथ को हटाने का प्रयास किया,
"निथी, अपना हाथ थाम लो..."
"ओह... नहीं, अंकल..." वह हकलाते हुए बोली।
"क्यों...?"
"वाह... मुझे बहुत शर्म आ रही है..." वह शरमा गई।
"कितनी शर्म की बात है मुझ पर। ऐनी बुलबुल को ठीक से देख भी नहीं पा रही है। मैं अभी उसे देखना चाहता हूँ। मेरा हाथ पकड़ो, नितिमा..." उसने धीरे से अपने हाथ हटाते हुए कहा। वह सुंदर कमल की कली अब उसकी आँखों के लिए एक अद्भुत दृश्य थी।

कितने दिनों की तड़प बस यही है। उसने कई बार सरिता के स्त्रीत्व को देखने की कोशिश की, लेकिन वह उसे ऐसा करने नहीं देती थी। वह अपने सारे कपड़े उतारने को तैयार नहीं थी। उसने कोशिश की, लेकिन आखिरकार नाकाम रहा और अपनी इच्छा पूरी करते हुए सोचा कि उसे कुछ मिल गया। लेकिन अब सारी संपत्ति उसकी है।
उसने हवस से अपनी आँखें चौड़ी कर लीं और उसे एक-एक इंच करके देखा, लेकिन वह शरमाते हुए अपने पैर हिलाने की कोशिश कर रही थी, पर उसने अचानक उसके पैर पकड़कर उसकी कोशिश को रोक दिया।
उसने घबराकर अपने हाथों से मादा फूल को छुआ। वह उस कोमल जंगल से मंत्रमुग्ध हो गया। उसने उसे अपनी उंगलियों से मरोड़ा। उसने उसके बालों को खींचा। उसने अपनी उंगली उस स्त्री के फूल के शुरुआती भाग में डाली। अगर वह उसे थोड़ा नीचे करता, तो परागकण उसमें समा जाता।
झाड़ियों में अपने हाथों से खेल रहे उस आदमी ने फिर नित्या के पूरे शरीर को पकड़कर दबाया। उसने दबाया, चुटकी ली, और उस कोमलता को महसूस किया। फिर, अपनी तर्जनी उंगली से, नित्या ने अपने गुप्तांग को सहलाने के लिए छटपटाया।
"माँ... श... उम..." वह कराह उठी, और अब उसकी तर्जनी उंगली दरार में घुस गई और उसे थोड़ा रगड़ा, जिससे वे पत्थर ढीले हो गए जो तब तक उसके शरीर से चिपके हुए थे।
"हम्म..." उसने उसके बावजूद आह भरी, अब उसकी उंगलियां उस औरत के खजाने में छिपी चीज को खोजने के लिए स्वतंत्र थीं।
वहाँ फंसा हुआ है एक बेदाग पन्ना।
उस खाली जगह को थोड़ा भर दें,

“आह... अंकल....” नित्या ने धीमी आवाज़ में आह भरी। नित्या, जो अब अपनी तर्जनी उंगली में फंसे पन्ना पत्थर को अपने अंगूठे से धीरे-धीरे घुमा रही थी, उसे स्पंदित कर रही थी।
"म्म.... म्म... आह....हक..." वह कराह उठी, और अब विमलनाथन अपनी टांगें उसकी जांघों के दोनों ओर रखकर बैठ गया।
उसने धीरे से उस फूल की पंखुड़ी को फैलाया जिसने परागकण को मजबूती से ढक रखा था, और उस अनमोल अमृत की कली को लालसा भरी निगाहों से निहारा। वह झुका और उसे चूमा। उसने उस लंबी कली को अपने होठों से थामा और फिर तीव्र भावनाओं के कारण छोड़ दिया। फिर सीधा होकर उसने उसे अपनी उंगलियों से आगे-पीछे सहलाया, दो उंगलियों से पकड़कर खींचा। उसने उसे घुमाया। उसने उसे कुतरा। उसने उसे दबाया। उसने कली को आगे-पीछे खींचा और उसे खिलाने की कोशिश की।
नित्या ने नीचे झुककर उस कली का स्वाद चखा जो खिलने से इनकार कर रही थी, पूरी कली को अपने होठों से लगाया, चूसा और उसका स्वाद लिया। अब और रोक न पाने के कारण वह फूट-फूट कर रोने लगी। "मम्माआआआह..." उसने आह भरी। उसने उसके मुंह से गिरा सारा शहद चूस लिया और पी लिया, मानो उसे मुक्ति मिल गई हो।
उसके इस कृत्य से उसके पेट में सिहरन दौड़ गई। उसका शरीर ठंडा पड़ गया। उसे पसीना आने लगा।
वह उस चरम सीमा को सहन नहीं कर सकी।
“चाचा जी... बस करो, चाचा जी... छोड़ दो...” उन्होंने उसे गिड़गिड़ाने नहीं दिया। उन्होंने उसके पैरों को और कसकर दबाने की कोशिश की, लेकिन जिस व्यक्ति ने उसके पैरों पर शंख का फूल लपेटा था, उसका वह नायक जो वहाँ किले को नष्ट करने की कोशिश कर

रहा था, उसने उसके गुप्तांग पर बेरहमी से प्रहार किया। उसने उसे रगड़ा। नित्या दर्द सहन नहीं कर सकी।
“चाचा जी... बस करो... मुझे जाने दो...” वह गिड़गिड़ाई, और उसने अपने अंगूठे से उसकी संवेदनशील कली को सहलाया और अपने लिंग से उसकी योनि पर फेरा। फिर उसने अपने लिंग के सिरे को पकड़ा, उसे उसकी योनि में डाला और ऊपर-नीचे झुलाया। उसी समय, उसका अंगूठा उसकी गुदा से खेल रहा था। वह आनंद की इस पीड़ा को सहन नहीं कर पा रही थी।
"अंकल, मैं नहीं कर सकती..." वह लगभग चीख पड़ी, और उसने बिना अंदर डाले ही अपना लिंग बाहर निकाल लिया, परागकोष को अपने लिंग से रगड़ा और उसे चूमने के लिए मजबूर किया। चरम सुख उस पर फिर हावी होने लगा।
"चाचा…"
"क्या..."
"उह... अंदर आ जाइए, अंकल... मुझे आपकी ज़रूरत है..." उसने विनती की, और वह मुस्कुराया।
निथिया, उस खिलती हुई स्त्री को वासना भरी निगाहों से देखते हुए, अपने खड़े लिंग को इतनी ताकत से उसकी योनि में घुसा दिया कि वह उसके बगल की पूरी दीवार को तोड़कर उसके अंदर चला गया, जो आनंद से धड़क रहा था।
“आह... अंकल...” वो आनंद से चीख पड़ी, दोबारा उसके प्रवेश का सुख पाना चाहती थी। उसने अपना लिंग फिर से बाहर निकाला, और अगले ही पल उसी गति से उसे अंदर-बाहर करने लगा। नित्या कांप उठी और खुद को रोक लिया।
"माआआआआह... श्श..." वह चीखी, और उसने खुद को फिर से उसके अंदर डाला और फिर उसे बाहर खींच लिया, उसे तड़पाते हुए।

उसने बार-बार वही क्रिया दोहराई, अंत में उसके अंदर प्रवेश किया और अपने पूरे शरीर को उसके ऊपर फैला दिया।
अपनी मर्दानगी के सुख को सहन न कर पाने के कारण, उसने उसकी आँसुओं से भरी आँखों को चूमा और तुरंत अपने हाथों से उसके स्तनों को पकड़कर दबाया और चूसा, और अब नित्या फिर से कांपने लगी।
उसने अपने दाँतों से उसके गाल को काटा। उसने उसके होंठों को चाटा। वह नीचे झुका और फलों को चूसा और पिया। साथ ही, उसने अपनी कमर हिलाई और अपने पुरुषत्व को आनंदित किया।
आह... ये तो स्वर्ग है। सरिता के साथ भी उसे इतना सुख नहीं मिला था।
अपनी उत्तेजना को नियंत्रित करने में असमर्थ, उसने अपना लिंग उसके अंदर डाल दिया, लेकिन निथिया, आनंद के दर्द को सहन करने में असमर्थ, पीड़ा से चीख पड़ी।
"मैं नहीं कर सकती, अंकल... आह... उम... अंकल... धीरे... श... आह... उम... अच्छा लग रहा है... ज़ोर से... काटो अंकल... हिलाओ... उम... ऐसे... चूमो... चूमो और पियो... श... आह... धक्का दो। और ज़ोर से धक्का दो।" उसने महसूस किया कि उसका लिंग, एक उग्र साँप की तरह, उसके अंदर पूरी तरह से चला गया, और एक पल के लिए, निथिया खुद को रोक नहीं पाई।
"अंकल... मैं नहीं कर सकती... चुप रहो..." वह नहीं कर सकी।
चरम सुख तक पहुँचते ही वह चीख उठा, "आ...

(19)

वह ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे उसे बुखार हो। यह सोचकर उसे शर्मिंदगी महसूस हुई।
लेकिन वह बेहद बदसूरत था। उसकी उम्र तीस वर्ष थी। फिर भी वह उसी उम्र के आदमी की तरह चलता था। उसका व्यवहार पच्चीस वर्षीय युवक जैसा था। वह स्त्री बड़ी तेज़ी से उसकी ओर दौड़ी। उसे गर्व महसूस हो रहा था।
खाना बनाते समय, अपने पति के बारे में सोचते हुए, विस्मय से भरी हुई, विमलनाथन उठ खड़ी हुई।
"नित्या... तुम क्या कर रही हो..." उसकी आवाज़ सुनकर नित्या पीछे मुड़ी। वहाँ खड़े उस आदमी को देखकर उसे शर्म महसूस हुई, जिसने केवल एक धोती पहनी हुई थी और उसका सीना नंगा था।
"क्या आप तैयार हैं, चाचाजी... खाना आ रहा है... थोड़ा इंतजार कीजिए... अब आपका बुखार कैसा है?" उसने पास आते हुए पूछा।
"लाल व्यायाम की बदौलत तुम्हारा बुखार उतर गया है, नितिमा... तुम्हारी चोट कैसी है?" विमलनाथन ने उसके पास आते हुए पूछा। नित्या का दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
"हम्म... इसमें कुछ गलत नहीं है, चाचा जी..."
"वास्तव में...?"
"हम्म..." उसने कहा, और विमलनाथन ने उसे खाना पकाने के चबूतरे से जकड़ लिया।
"आप क्या कर रहे हैं, चाचाजी... मैंने खाना बना लिया है..."
“जब तुम इसे खाओगी, तब तुम्हें पता चल जाएगा…” यह कहने वाला उसके चेहरे की ओर झुका और उसके होंठों को अपने होठों से छूते हुए बोला, “चाट।” उसने उन्हें काटा। उसने उन्हें चूसा। उसने उनका स्वाद लिया। फिर उसने उन्हें चूसा और छोड़ दिया।

लेकिन उस चुंबन ने उसे रोक दिया, और उसने अपना सिर झुकाया और उसकी कमर पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया।
"तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो...?" उसने फुसफुसाते हुए कहा। "किस लिए?"
"हम्म... मैंने आज तुम्हारा पूरा शरीर ले लिया..." यह सुनकर उसका चेहरा एकदम लाल हो गया।
"कृपया चुप रहें... आप क्रोधित नहीं हैं..."
"अरे नहीं, चाचाजी..."
"तो आपका स्वागत है..."
"हम्म..."
"तो फिर तुम्हें यह हर दिन मिलेगा..." उसने पूछा, और निथिया ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।
"चाचा...आप मुझसे इस तरह क्यों पूछ रहे हैं..." वह सिसकते हुए बोली, और विमलनाथन को उसकी सिसकियां सुनकर आनंद आया।
उसने तुरंत उसका हाथ छुड़ा लिया।
“बताओ, नीति...”
"हम्म..." उसने अपने होंठ काटते हुए कहा, और विमलनाथन ने उसे अपनी ओर खींच लिया और कसकर गले लगा लिया।
"श... चाचाजी, आप क्या कर रहे हैं..." वह सिसकते हुए बोली, और विमलनाथन उससे दूर हट गए।
"मैं बहुत खुश हूँ, नित्या। और वो भी आज... मैं बहुत आभारी हूँ... अगर मुझे पता होता कि मुझे ये होगा, तो मैं बहुत पहले ही बुखार से बीमार पड़ा होता," उसने कहा, और नित्या का चेहरा और भी लाल हो गया और उसने धीरे से उसकी छाती थपथपाई। फिर, फीके चेहरे से उसकी ओर देखते हुए,
"चाचा जी... मुझे आपको कुछ बताना है..."

"बोलना..."
मुझे तुम्हारी याद आती है... लेकिन..."
"लेकिन..."
"प्यार... कुछ भी नहीं है..." उसने आँखों में आँसू लिए कहा। यह सुनकर वह हँस पड़ा।
"अरे... हमारे देश में तो कई शादियाँ बिना प्यार के ही हो जाती हैं। उसके बाद क्या लोग एक-दूसरे को समझकर प्यार से नहीं रहते... हम भी वैसे ही हैं। हो सकता है कि अभी तुम मुझसे प्यार न करती हो। लेकिन तुम यह नहीं कह सकती कि प्यार नहीं आएगा..." उसने उसका चेहरा अभी भी उदास देखकर कहा और उसे खींचकर वहाँ रखी सीट पर बिठा दिया।
“मुझे भी सरिता से प्यार हो गया था। मेरी शादी हो गई। उसके बाद, मैं तुमसे प्यार नहीं करूंगा। यही सच्चाई है। हर चीज़ को बदलने में समय लगता है। नित्या, मेरा प्यार तुम्हें ज़रूर बदल देगा...” उसने कहा और नित्या उसके सीने से लग गई।
"क्या मैं सचमुच बदल जाऊंगी, चाचाजी? क्या मैं सत्याना को भूल जाऊंगी...?" यह सुनकर विमलनाथन के चेहरे पर एक पल के लिए भाव बदल गए। फिर वह मुस्कुराए।
"हमने आज तीन केक नहीं बनाए। सत्या, क्या तुम्हें याद है...?" नित्या ने उससे पूछने के बारे में सोचा।
वह सिर्फ एक ही बात सोच रही थी। वह सिर्फ जल्दबाजी में बने रिश्ते और प्यार पाने के हकदार व्यक्ति के आलिंगन से मिलने वाली खुशी के बीच के अंतर के बारे में सोच रही थी। और वह कदम पूरी तरह से विमलनाथन से भरा हुआ था।
निथिया ने शर्म से लाल होते हुए कहा, "नहीं।"

"तुम बदल जाओगे... भले ही तुम न बदलो, तुम्हारे लिए मेरा प्यार बदल जाएगा..."
"अरे चाचा जी? आप अपनी बहन को कैसे भूल सकते हैं? आप मुझसे प्यार करने का दावा कैसे कर सकते हैं..."
"क्या तुम सरिता को भूल रहे हो? बिलकुल नहीं। प्यार को कोई नहीं भूल सकता। तुम सत्या को नहीं भूल सकते। वैसे ही, मैं भी अपनी सरिता को नहीं भूल सकता। लेकिन समय ने हमें मिला दिया है। इसका कोई कारण नहीं है। हम साथ रहने के लिए ही पैदा हुए हैं, नित्या। साथ रहने का क्या मतलब? हमने कुछ और सोचा था। किस्मत ने कुछ और। हम एक-दूसरे के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं हैं। लेकिन, हमारी शारीरिक अनुकूलता परिपूर्ण नहीं है। यही वो नित्या है जो हमें ज़िंदा रखेगी..." यह सुनकर नित्या ने हैरानी से उसकी ओर देखा। "क्या इससे हमें खुशी मिलेगी, चाचा जी...?"
"क्या तुम जानती हो कि इतने तलाक क्यों होते हैं? पुरुष अपनी पत्नियों को संतुष्ट नहीं कर पाते। यहाँ तक कि पत्नियाँ भी अपने पतियों को संतुष्ट नहीं कर पातीं। कई उम्मीदें और इच्छाएँ चकनाचूर हो जाती हैं, जीवन नरक बन जाता है। वे सोचते हैं कि केवल बिस्तर का सुख ही उन्हें संतुष्ट कर सकता है। एक कायर अदालत की दहलीज पार नहीं करेगा..." यह कहते हुए उसने धीरे-धीरे उसके स्तनों को दबाना शुरू किया, लेकिन नित्या ने अचानक उसका हाथ रोक दिया।
"अंकल...आप क्या कर रहे हैं..."
"तुम्हें रास्ता कैसे पता चला..."
"ओह, इटैलियन ओवन में उबल रहा है..."
मुझे यहां गर्मी लग रही है...
“यह खाना पकाने का बर्तन है, चाचाजी...”

"क्या कोई ऐसा कारण है जिसकी वजह से इसे यहां नहीं किया जाना चाहिए?"
"रोना मत, चाचाजी... मजदूर तो वैसे भी आएंगे।"
"कोई नहीं आएगा। मैंने सबसे झूठ बोला और सबको एक हफ्ते की छुट्टी दे दी, यह कहकर कि मैं घर जा रहा हूँ। मैं जब चाहूँ, जहाँ चाहूँ वहाँ रहना चाहता हूँ। मेरे मन में बहुत सारी कल्पनाएँ हैं..." उसने अपना चेहरा उसकी जुड़वां मीनारों की ओर घुमाते हुए कहा।
"हमें हर शनिवार को तेल से स्नान करना चाहिए।"
"क्या आपको यह पसंद आया, चाचा?"
"क्या तुम्हें यह पसंद आया...?" उस आदमी ने पूछा, और उसे बताया कि उसने उस दिन क्या कल्पना की थी, और उसका चेहरा लाल हो गया। "अरे... तुम्हें लगा था कि बस इतना ही था..."
"ऐसा क्यों?" उसने पूछा, और निथिया उछलकर कुनी का एक टुकड़ा चबाने लगी और बोली, "स्नैप।"
"अंकल... अंकल इडली..."
मैं अभी इसका एक टुकड़ा लेकर खाने जा रहा हूँ...
"ओह, चाचाजी... रुकिए... मैं चूल्हा बंद करके वापस आती हूँ..." उसने कहा, और विमलनाथन ने उन फलों को छोड़ दिया जिन्हें वह तब तक निचोड़ रहा था।
"ठीक है, जाओ और इसे बंद कर दो..." उसने कहा, भाग गई, चूल्हा बंद किया और विमलनाथन की ओर मुड़कर देखा।
लेकिन उसने अपने हाथ फैलाकर कहा, "सूख जाओ।"
निथिया ने अब मना नहीं किया। विमलनाथन ने उसे बिठाया और उसके पैरों को उसके दोनों ओर फैलाते हुए उसकी ओर चलने लगा।

उसने बैठी हुई महिला को कसकर गले लगाया, उसका चेहरा पकड़ा, उसे झुकाया और अपने होंठ उसके होंठों से दबाकर उसे एक गहरा चुंबन दिया।
उसने भी मना नहीं किया। दोनों एक दूसरे के होंठों को चूमते, चूसते और चाटते हुए लार टपका रहे थे। काफी देर बाद, उस आदमी ने उसके बंधन खोल दिए और उसके पहने हुए सूरीदार में हाथ डालने की कोशिश की।
"तुम इस तरह स्तनों के बल क्यों लेटी हो? मैं अपना हाथ भी अंदर नहीं डाल पा रहा..." रोन्नावन ने अंदर जाने की कोशिश की और उसे कसकर पकड़ लिया। नित्या को दर्द महसूस हुआ।
"श... आह..." वह दर्द से कराह उठी।
"दर्द हो रहा है क्या?"
"हम्म..."
"क्यों?" उसने समझदारी से पूछा।
"आखिरकार, तुम्हारे हाथ और मुंह तो पूरे दिन वहीं थे..." उसने कहा, और निथिया फल के सिरे को कुतरती रही, उसे काटने की कोशिश करती रही।
"आह... अंकल... दर्द हो रहा है..." विमलनाथन कराहते हुए पागलों की तरह बड़बड़ाने लगा।
अगले ही पल, उसने अपना चूड़ीदार टॉप उतारने की कोशिश की, लेकिन जिस चूड़ीदार को वह पकड़े हुए थी, वह उतरने से इनकार कर रही थी।
"अब साड़ी बांध लो, नितिया... बस इतना ही, आसान हो जाएगा..." उसने कहा, और नितिया मुस्कुराते हुए अपनी साड़ी उतारकर फेंकते हुए उसकी मदद करने लगी।
वहां दो आम खड़े थे, जो उसके चंगुल में फंसने में असमर्थ थे।

"मैं तुम्हारे लिए एक पैड खरीदना चाहता हूँ..." उसने उत्सुकता से उसे उठाते हुए और सहलाते हुए कहा।
"क्यों... यह ठीक है..." उसने खुद को नीचे देखते हुए कहा।
"हम्म... मैं दो साइज बड़ा खरीदूंगा। देखो ये कितना टाइट है..." उसने उसे पकड़कर दबाते हुए कहा।
"श.. अंकल मेधु.." निथिया कराह उठी।
"आखिरी झटका... तुम्हें देखकर मैं पागल हो रही हूँ..." निथिया ने कहा, और ब्रा से बाहर निकले हुए लिंगों को पकड़ने के लिए संघर्ष कर रही थी।
"अंकल..." निथिया ने पुकारा, उसे यह देखकर बहुत अच्छा लग रहा था कि वह उसके होंठ चूस रहे थे।
"हम्म.."
"अंकल... आप मेरी रफ्तार का मुकाबला कैसे कर पाए?" निथिया ने सचमुच उत्सुकता से पूछा।
वह नीचे झुका और उसके स्तनों पर चुंबन किया, फिर पीछे हट गया और अपनी ब्रा के ऊपर से ही उसके निपल्स को चाटते और सहलाते हुए रगड़ने लगा।
"शरिथा को इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, नितिया।" यह सुनकर नितिया दंग रह गई।
"आप क्या कह रहे हैं, चाचा..."
"अरे बाप रे... मुझे बस ऊपर से ही छूने दो। मैंने उसके नितंबों की तरफ देखा भी नहीं है। मैं उसे ये कपड़े उतारने नहीं दूंगा... मैं उसे पूरी तरह से चोदूंगा..." ये सुनकर नित्या दंग रह गई। "वास्तव में?"

"अरे बाप रे... मैं उसे यह सब दोबारा करने के लिए मनाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन वह नहीं मान रही... मुझे बाद में पता चला कि उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी है।" "क्या... ये इतना मीठा है?" नित्या ने पूछा, उसकी निगाहें उसके हाथों द्वारा उसके हाथों को दबाने के सुख पर टिकी हुई थीं। "यह... यह... यह... यहाँ तक कि एक गोरी लड़की भी," उसने उसके कान के पास झुककर फुसफुसाते हुए कहा, जिससे निथिया रोमांचित हो गई। अब विमलनाथन के हाथ निथिया की बाहों में प्रवेश कर गए और उन्हें जोर से दबाया, जिससे दर्द कम हो गया और वहां गर्माहट फैल गई।
"हम्म... यह अच्छा है, अंकल..." बोलते हुए विमलनाथन ने उसे और भी कसकर गले लगा लिया।
"चाचा जी, आपने शादी से पहले अपनी बहन को क्यों नहीं छुआ?" "मैंने उसे छूने की कोशिश की... लेकिन उसने मुझे छूने नहीं दिया। मैंने सोचा था कि शादी के बाद मैं उसे पूरी तरह से छू लूंगा। मैं कल्पना करता रहा हूं कि मैं उसे कैसे छूऊंगा।" उसने कहा।
"आप क्या सोच रहे थे, चाचा...?"
"मैं तुम्हें हर रोज उत्तेजित कर रहा हूँ, तुम्हें पता है ना..." उसने अपने हाथ पीठ पीछे ले जाकर ब्रा का हुक खोलते हुए कहा।
उसने ब्रा उतारकर फेंक दी और बिना पलक झपकाए उन चमकते हुए स्तनों को निहारा।
"सेमा अज़हगुडी..." उसने कहा और संतुष्ट होने तक उसे निचोड़ा।
उसने उसकी कली पकड़ी। उसे घुमाया। उसने उसे गाय की तरह दुहा।
"मैं कितनी भी कोशिश कर लूं, कुछ भी हासिल नहीं होता..." विमलनाथन ने शिकायत की।
"तुम क्यों नहीं आते?"
"यह अमृत है..."

"श्श..." वह शर्म से सिसक उठी, और विमलनाथन ने लबाक नाम की कोई चीज ली और उसे चूसने लगा।
नित्या को एहसास हुआ कि कल के शारीरिक संबंध के बाद से वह उससे बेहद प्यार करने लगा था। उसे छूने मात्र से ही उसकी पौरुषता जागृत हो जाती थी।
नित्या को महसूस हुआ कि उसका लिंग अभी भी उसकी स्कर्ट के बाहर निकला हुआ है, इसलिए उसने अपनी झिझक को दूर किया और उसे पकड़ लिया।
उसने जल्दी से अपनी लुंगी के बटन खोले और उस भव्य बालक को बाहर निकाला। नित्या का शरीर कांप उठा जब उसने आठ इंच लंबे, मांसल और मजबूत शरीर वाले उस पुत्र को छुआ।
उसने अपने होंठ उसके गुप्तांग पर रखे और उसे चूसने लगा, अपने हाथ उसके हाथों पर रखकर उन्हें ऊपर-नीचे हिलाकर अपनी इच्छा व्यक्त की। एक विद्यार्थी की तरह, जिसे अपने शिक्षक की डांट से कोई आपत्ति नहीं होती, नित्या ने अपने दोनों हाथों को ऊपर-नीचे हिलाया।
विमलनाथन का शरीर कांप रहा था। निथिया ने अपने दांतों और जीभ से अपने जननांग के सिरे को छूकर इसे प्रदर्शित किया।
"श... आह... अंकल... उम... ये अच्छा है, अंकल..." वो हिचकिचाई, फिर एक हाथ से फल निकालकर उसे होठों से चाटते हुए दूसरे हाथ को अपनी योनि में डाल दिया। उसने धीरे से उनके लिए रास्ता बनाया और उनका हाथ आसानी से अंदर चला गया।
उसकी उंगलियाँ प्यार से उसके गुप्तांग को सहला रही थीं, वहाँ उगने वाले कोमल बालों को खींच रही थीं, जिससे उसे आनंद मिल रहा था, फिर उसने अपनी उंगली उसकी योनि के उभार पर रगड़ी, जिससे उसे झुनझुनी महसूस हुई। फिर उसने गुप्तांग को उठाया और उसे दबाया।

नित्या अपनी खुशी सहन नहीं कर पाई और रोने लगी।
"मामा... चुप रहो..." वह कराह उठी, अपनी बीच वाली उंगली को अपनी गहरी, शहद से लथपथ योनि में डालते हुए, लेकिन नित्या अब और नहीं कर सकी।
"माँ... मुझे आपकी ज़रूरत है..." उसने हांफते हुए कहा, और अगले ही पल उसके चूड़ीदार का निचला हिस्सा उतारकर फेंक दिया गया। साथ ही उसकी लुंगी भी।
राजदंड को सीधा फैला हुआ देखकर नित्या दंग रह गई। अब जाकर वह उसे ठीक से देख पा रही थी। राजदंड को देखते ही नित्या को गर्व का अनुभव हुआ।
विमलनाथन अपने लिंग को हाथ में पकड़े हुए उसे लहरा रहा था। "क्या तुम इसे चखना चाहोगी, नितिमा?" उसने पूछने से इनकार नहीं किया। वह लालसा से उसके सामने घुटने टेककर बैठ गई और अपने लाल मूंगे जैसे होंठों से राजदंड को लेकर उसे चखने लगी, जिसे देखकर विमलनाथन की भी इच्छा जाग उठी।
"आह... बिल्कुल सही... एक टुकड़ा खाकर इसका स्वाद लो, नितिमा..." उसने उसका सिर पकड़कर अपना लिंग पूरी तरह से उसके मुंह में डाल दिया, उसका लिंग उसके गले तक पहुंच गया।
"म्म... आआआह... श..." विमलनाथन कांप उठा क्योंकि उसका लिंग उत्तेजित हो रहा था, और उसने अपनी लार और जीभ से उसके लिंग को शुद्ध किया।
एक समय ऐसा आया, जब उसे पता चला कि वे भड़कने ही वाले हैं, तो उसने उसका चेहरा अपनी वीर छड़ी से दूर किया, उसे अपनी गोद में बिठाया और उसके होंठों को अपने होठों में लेकर चूमा।
उसके बाद, उसने उसे और करीब बिठाया और अपना लिंग उसकी योनि में जबरदस्ती डालने की कोशिश की।

पहली बार के विपरीत, नित्या उछल पड़ा, अब थोड़ा और आसानी से उसके अंदर प्रवेश करने की कोशिश करते हुए, एक ही झटके में अपना पूरा लिंग उसके अंदर समाहित कर दिया।
उसे ऐसा लगा जैसे वह चरम सुख के करीब पहुँच रही हो, तभी उसने महसूस किया कि उसका लिंग उसके गर्भाशय के प्रवेश द्वार को छू रहा है।
"आह... अंकल... हम्म..." उसने हांफते हुए कहा।
“एक तरफ…” विमलनाथन ने कहा। उसी समय, उसने उसकी कमर को हिलाया, लय को समझते हुए और उसकी कमर को हिलाते हुए, और जैसे ही उसने उसे अपने भीतर समा लिया, उस विशाल लिंग की ताकत ने उसकी आंतरिक स्त्रीत्व की दीवार को पानी की गति से फाड़ दिया। उसकी पराग कली उस पुरुषत्व से टकराई, एक पल से अधिक समय तक उसे रोक नहीं पाई। "चाचा जी... मैं यह नहीं कर सकती, चाचा जी..." उसने फुसफुसाते हुए कहा।
"बस करो... ज़ोर से हिलाओ..." उस आदमी का हाथ उसके नितंबों पर ज़ोर से लगा।
"मामाआआआ
लेकिन विमलनाथन ने अपनी हरकतें नहीं रोकीं। नित्या, जिसका चेहरा भावनाओं से लाल हो गया था और जिसकी सारी ताकत खत्म हो चुकी थी, स्तब्ध होकर उसके कंधे पर गिर पड़ी, और अगले ही पल वह उठ खड़ा हुआ, उसे अपने करीब पकड़े हुए, बिना अपने पुरुषत्व को बाहर निकाले।
उसने मेज से सामान गिरा दिया और उसे बिठा दिया, उसके पैरों को ऊपर खींचकर अपनी कमर से लगा लिया, और उसी हरकत के साथ उसने अपने उत्तेजित लिंग को उसके अंदर जबरदस्ती डाल दिया, उसे अंदर तक घुसाकर फिर बाहर खींच लिया। उसकी भगशेफ कांप उठी।

यह देखकर वह और भी क्रोधित हो गया।
जो उसका हाथ थामकर उसे कांपते हुए फल पर रखता है,
"निथीमा को दबाओ..." उसने कहा। उसमें हिलने की ताकत नहीं थी। लेकिन जैसे ही उसने उसे दबाया, विमलनाथन के दूसरे हाथ ने दूसरे फल को दबाया। उसे बाहर निकाला। निप्पल को खींचा, खींचा, खींचा। क्या यह उचित है...?
"चाचा…"
"तो मैं दूध पीना चाहता हूँ..."
“आह... अंकल...”
मुझे बहुत सारा पानी पीने की जरूरत है...
"श... अंकल..." उसने कहा, जब उसने महसूस किया कि उनका लिंग उसके अंदर जा रहा है और बेकाबू हो रहा है।
“आह... अंकल... मैं नहीं कर सकती, अंकल...” उसे रोने जैसा महसूस हो रहा था। चरम सुख तक पहुँचने की खुशी वह रोक नहीं पा रही थी। वह पहले चरम सुख तक भी नहीं पहुँच पाई। अगर उसे दूसरा चरम सुख मिलता, तो वह मर जाती।
लेकिन विमलनाथन उसके अंदर लगातार हिलता रहा और ज़ोर-ज़ोर से धक्के मारता रहा। एक पल नित्या इतनी उत्तेजित हो गई कि उसने कानी से खेल रहे हाथ को नीचे कर लिया और अपनी संवेदनशील कली को दबाने लगी।
अपने भीतर उमड़ रही आनंद की लहर को सहन न कर पाने के कारण उसने सत्यन को दूर धकेलने की कोशिश की।
लेकिन उसने उसे कसकर पकड़ रखा था, उसने अपना लिंग बाहर निकाला और उसके अंदर डाल दिया, जबकि उसका अंगूठा उसके गुप्तांग के बालों को दबा रहा था।

"माँ... मैं नहीं कर सकती, माँ... ओह... मुझे जाने दो... आआआह... हम्म... माँ... कृपया... मुझे जाने दो... मैं नहीं कर सकती... आआआह आआआआ... हम्म... आआआह..." वह चीखी और दूसरी बार चरम सुख का अनुभव करते हुए लगभग बेहोश हो गई।
उसने उसे छोड़ा नहीं, बल्कि उसे गले लगाया और उसकी सांसें थम गईं।
"कोई बात नहीं... ठीक है... कुछ नहीं..." उसने कहा और अचानक अपना पुरुष अंग बाहर निकाला और उसकी स्त्रीत्व की ओर झुक गया।
वह महिला कांप रही थी।
उसने वासना से भरे स्वर में उस स्त्री पर अपना मुख रखा, उसे चखा और शुद्ध किया, धीरे-धीरे महाराणा कली को काटा और खींचा, उसका स्वाद चखा। फिर वह उठा और अपने लंबे हथियार को वापस उसकी जगह पर ले गया, कई गतियों से चलते हुए, अंत में दोनों फलों को अपने हाथों में लेकर पूरी ताकत से निचोड़ा, अंततः उसे अपने सफेद रक्त से भर दिया और उस पर लेट गया, नित्या हिल भी नहीं सकी।
उसकी सारी ऊर्जा उस हद तक समाहित हो चुकी थी।

(20)

पंद्रह साल बाद।
जब निथ्या रसोई के काउंटर पर बर्तन धो रही थी, तब विमलनाथन ने उसे पीछे से गले लगा लिया।
"ओह... तुम क्या कर रहे हो..." वह सिसकते हुए बोली, और निथिया ने अपनी आँखें खोलीं तो देखा कि विमलनाथन ने अपना चेहरा उसकी गर्दन में छिपा रखा था और तेल का कटोरा उसके बगल में रख रहा था। “यह क्या है, चाचा?”
"क्या तुम्हें रास्ता नहीं पता? आज शनिवार है। तेल स्नान।" उसने पलकें झपकाईं। नित्या ने उसे कबूतरों को दबाने से रोक दिया।
"ओह... अब तो आप पचास साल के हो गए हैं... ये सब बंद करो..." उसने कहा।
"किसने कहा कि मैं बूढ़ी हो गई हूँ? मैं तो हर साल बच्चे को जन्म देने के लिए तैयार रहती हूँ। तुमने ही तो मुझे रोका है।" उस उम्र में भी निथिया रोमांचित थी, जब उस आदमी के हाथ अभी हरे थे और वह उसके फलों को पकड़े हुए था।
"श... रुकिए, अंकल। मैं पहले बच्चों का ख्याल रख लेती हूँ..." उसने दूर हटने की कोशिश की।

"मैंने सब कुछ देख लिया। वे बाहर खेलने चले गए। अब इस घर में सिर्फ तुम और मैं हैं। मैं इसे सुखा देता हूँ... मैं तेल लगा देता हूँ..." विमलनाथन ने नित्या को गोद में उठाकर बाथरूम की ओर जाते हुए कहा।
उनकी शादी को पंद्रह साल बीत चुके हैं। मुझे नहीं पता यह सब कैसे हुआ।
नित्या उनके पहले शारीरिक संबंध के दौरान गर्भवती हो गई। जब उसे पता चला कि वह गर्भवती है, तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पहले तो उसने विमलनाथन को गले लगाया और रोने लगी। उसकी पीड़ा को समझते हुए, विमलनाथन ने भी उसे गले लगा लिया।
खबर सुनकर दौड़कर आई पानुरेखा थानिकाचलम की तरफ उसने देखा तक नहीं। उनके चेहरों के भाव उसे अच्छे नहीं लगे। नित्या ने उन्हें बिना रहम किए घर छोड़ने को कहा था। हालांकि वे रो रही थीं और टूट रही थीं, फिर भी उसके दिल में कोई दया नहीं थी। विमलनाथन ही सबसे ज्यादा बातें करता था। नित्या उनसे मिलना नहीं चाहती थी।
उसके पास उससे कुछ समय मांगने के अलावा कोई चारा नहीं था। वे दोनों भी भारी मन से चले गए। नित्या ने अकेले अन्नपूर्णी से बात की।
विमलनाथन ने उसका मन बदलने की कोशिश की, लेकिन वह इसमें असफल रहे। इसी बीच, विमलनाथन के एक मित्र ने लंदन में एक कंपनी खोली और उनसे कंपनी की देखरेख के लिए किसी को नियुक्त करने को कहा। निथिया ने इस बात को पकड़ लिया। अगर वह यहाँ होती, तो पानुरेखा और थानिकाचलम अक्सर उससे मिलने आते। वह लंदन पहुँची और विमलनाथन को चिढ़ाते हुए कहा कि अगर वह लंदन चली जाए, तो कोई समस्या नहीं होगी।

तीन बच्चे होने के बाद ही नित्या अपने माता-पिता से मिलने के लिए राजी हुई। इसका कारण विमलनाथन था।
"निथिमा... मैं तुम्हारा गुस्सा समझती हूँ... लेकिन तुम्हें मेरे माता-पिता के बारे में भी सोचना चाहिए। खुद बताओ, हम अपने बच्चों के लिए सब कुछ अच्छा चाहते हैं। चाची और चाचा ने भी यही सोचा होगा... उस समय, उनके लिए तुम्हारा प्यार बचकाना रहा होगा। सोचो, तुम दोनों एक ही उम्र के हो। तुम्हारी पढ़ाई भी अभी पूरी नहीं हुई है। क्या तुम चैन से रह पाते? क्या तुम्हें अच्छी नौकरी मिल पाती? सोचो, निथिमा..."
धीरे-धीरे उन्होंने उनकी नफरत दूर कर दी। इसके बाद उन्होंने फैसला किया कि उन्होंने काफी मेहनत कर ली है, और पंद्रह साल बाद वे अपना सामान बांधकर गांव लौट आए। नित्या बेट्टावों से मिलने गई।
पनुरेखा और थानिकाचलम ने उसे उठाकर अपने सिर पर बिठाकर जश्न मनाया।
उसके बाद सब ठीक हो गया। लेकिन सत्यन की याद, जो अब भी उसके मन में बसी हुई थी, दर्द के साथ वापस आ गई। वह अब क्या कर रहा होगा? क्या वह ठीक है? उसके मन में हजारों सवाल उमड़ रहे थे।
तभी नित्या को पता चला कि सत्यन की अभी तक शादी नहीं हुई है। वह भी एक ऐसे दोस्त के माध्यम से जिसने उसके साथ पढ़ाई की थी। यह जानकर नित्या बहुत दुखी हुई।
उसे इस बात की खुशी होनी चाहिए कि उसका पति बच्चा है। लेकिन वह सचमुच बच्चा ही है।
उस रात, जब विमलनाथन उसे गले लगाने आया, तो निथिया उसकी छाती पर गिर पड़ी और रोने लगी।

"अरे... क्या हुआ?" विमलनाथन ने अपने पति से पूछा, जिसने उसे सारी बात बताई और उसे गले लगाकर सांत्वना दी।
दो दिन बीत गए। विमलनाथन उसे नीलगिरी ले गया।
विमलनाथन ने अपनी पत्नी को, जो उत्सुकता से इधर-उधर देख रही थी, एक चौकड़ी के सामने रोक दिया।
"यह किसका घर है, चाचाजी?" उसने आश्चर्य से पूछा।
"सत्या यहीं है, नितिया..." नितिया ने हैरानी से कहा।
"चाचा...?"
"जाओ... जाओ और उससे भी बात करो..."
"अंकल... आप क्या कह रहे हैं..." विमलनाथन चौंककर हंस पड़ा। "निथीमा... तुम्हें खुश होना चाहिए..."
"ये कैसा सवाल है... मैं बहुत खुश हूँ, अंकल..."
"क्या अब तुम मुझसे शादी करने के लिए माफी मांगोगे...?"
"चाचा जी...पागलों जैसी हरकतें मत कीजिए। मुझे आपको पाकर बहुत खुशी हो रही है। दरअसल, मैं अपने माता-पिता को धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने मुझे आप दिए..." उसने कहा, और सत्यन ने प्यारी सी मुस्कान दी।
"अगर यह सच है, तो जाओ और साथियान से बात करो। उसे बताओ कि तुम एक अच्छे पति और अच्छे बच्चे हो... तभी उसका अपराधबोध और तुम्हारा दुख दूर होगा..."
"लेकिन... चाचाजी, मैं यह कैसे कर सकता हूँ..."
"सिर्फ़ तुम्हारा खुश रहना काफ़ी नहीं है... उसे भी खुश रहना चाहिए... तुम इन दिनों उदासीन बनी रहीं, यह सोचकर कि वह ठीक रहेगा। अब जब तुम्हें पता है कि वह तुम्हारे बारे में सोच रहा है, तो उसे दूर धकेलना गलत है। जाओ... जाओ और उससे बात करो... मैं

तुम्हारा इंतज़ार करूँगी..." नित्या ने अपने पति को प्यार से देखा।
ऐसा पति भला किसे मिलेगा? वो उसे अपनी पुरानी प्रेमिका से मिलवाने भेज रहा है। और वो भी उस पर भरोसा करके।
वह नीचे झुकी, अपने पति के गाल पर चुंबन किया और नीचे चली गई। वहाँ काफी भीड़भाड़ थी।
उसने दरवाजा खटखटाया और सत्यन ने आकर दरवाजा खोला। उसे डर था कि उसे देखकर उसका पुराना प्यार फिर से जाग उठेगा, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, बल्कि उसे अपनी पुरानी दोस्ती को देखकर खुशी हुई और उसका दिल शांत हो गया।
जब वह अंदर गई और उससे बात की, तो नित्या का मन बिल्कुल शांत था। वह संतुष्ट होकर पहुंची और कार में बैठ गई। अगले ही पल उसने अपने पति को कसकर गले लगाया और उसके होठों पर चुंबन दिया। उसने भी उसे प्यार से चूमा और गाड़ी चलाकर चला गया।
"क्या हुआ? अब तुम खुश हो?"
"हम्म... बड़े खुश चाचाजी... जब तक मैंने उन्हें नहीं देखा, तब तक मेरे अंदर एक अजीब सी हलचल सी महसूस होती रही..."
"क्यों?"
"मुझे नहीं पता, चाचाजी... मुझे लगा था कि शायद उन्हें देखकर मेरा पुराना प्यार फिर से जाग उठेगा। लेकिन..." उसने अपने विमलनाथन की ओर मुस्कुराते हुए कहा।
"ऐसा कुछ नहीं है, अंकल। ऐसा लग रहा था जैसे किसी पुराने दोस्त को देख रहा हूँ। वो भी ऐसे ही बोलते थे। मुझसे गलती हो गई। अगर मैंने ये पहले किया होता, तो उन्हें पछतावा होता..."
"छी... जब भाग्य तय करता है कि क्या होना चाहिए, तो वही होता है।"

"हम्म... मैंने वहां संध्या नाम की एक लड़की को देखा। वह बहुत सुंदर थी... ऐसा लग रहा था कि वह भी उस लड़की की ओर आकर्षित था..." “हम्म... अच्छी खबर है...”
"हम्म... उसने हमें आने के लिए कहा था। मुझे लगा था कि वह हमें शादी में आमंत्रित करने वाला है..." विमलनाथन ने अपनी पत्नी को गले लगाते हुए कहा।
"बेशक आप आ सकते हैं..." उसने कहा और खुशी-खुशी गाड़ी में बैठ गया।
जीवन बहुत सुंदर है। हमें इसे जीना चाहिए और इसका अनुभव करना चाहिए। अगर हम सिर्फ फल ही खाते रहें, तो हम इस सुंदरता को नहीं देख पाएंगे।
निथिया विमलनाथन का जीवन भी कुछ ऐसा ही है। उन्होंने अपने अतीत को भुलाकर एक नया जीवन जीना शुरू कर दिया है। उनका जीवन बेहद खूबसूरत है।
अब, अगर विमलनाथन नहीं होते, तो नित्या भी नहीं होतीं। दोनों ने इसके लिए जी-जान से संघर्ष किया।

यदि कोई तीर किसी पुरुष के पैर पर गिरे, तो दो चीजें देखना ही काफी है। एक है उसका पेट, दूसरी है उसका बिस्तर। यदि कोई स्त्री उसके प्रति आकर्षित होने का भाव प्रदर्शित करे, तो बस इतना ही काफी है। वह ऐसे जीती है मानो वही उसकी दुनिया हो।
इसी प्रकार, एक महिला अपने पति से प्रेम और बिस्तर पर संतुष्टि के अलावा और कुछ नहीं चाहती। एक ऐसा पति जो अपनी पत्नी का सम्मान करता है, उसकी पसंद की चीजें करता है और बिस्तर पर चरम सुख प्राप्त करता है, वह पर्याप्त नहीं है, बल्कि पत्नी और

[illegible]

[illegible]

[illegible]

***** [illegible] *****

sjeet